मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 59 | अंक : 07 | जनवरी, 2019 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹15

राज्यस्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह की झलकियाँ

दिनांक : 16 दिसम्बर, 2018 स्थान : वेटरनरी सभागार, बीकानेर

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 59 | अंक : 7 | पौष-माघ कृ. २०७५ | जनवरी, 2019

प्रधान सम्पादक
नथमल डिडेल

❁

वरिष्ठ सम्पादक
संतोष शर्मा

❁

सम्पादक
मुकेश व्यास

❁

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

❁

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ **15**

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in
shivirasecedubkn@gmail.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- नई ऊर्जा, नये संकल्प 5

विशेष रपट

- मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2018 7
  मुकेश व्यास

आलेख

- राष्ट्रध्वज की विकास यात्रा 9
  नरेश शर्मा
- भारतीय युवा शक्ति के नायक-स्वामी विवेकानन्द 10
  कमलनारायण पारीक
- सुभाष की सच्ची लगन 11
  सांवलाराम नामा
- नेताजी सुभाष चन्द्र बोस 12
  ब्रिजेश कुमार वैष्णव
- साहस व त्याग के धनी नेताजी 14
  रामगोपाल राही
- शाला सिद्धि 15
  सिद्धार्थ कुमार गौरव
- व्यवहारगत परिवर्तनों से अलगाव 17
  लोकेश कुमार पालीवाल
- प्राचीन भारत में समय की सापेक्षता! 19
  डॉ. श्याम मनोहर व्यास
- दृढ़ संकल्प : **कमलेश जैन** 20
- एक बालिका जिसने सोच बदल दी 21
  नूतन बाला कपिला
- कॅरियर डे 21
  डॉ. गोविन्द नारायण कुमावत
- बच्चों में जगाएँ पढ़ने की रुचि 22
  कान्ता कल्ला
- प्रदूषण निवारण 24
  राजेन्द्र ढुंढ़ाड़ा
- नैतिक शिक्षा के कारक 28
  सत्यनारायण पंवार
- कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय का निवेशक जागरूकता कार्यक्रम 30
  पूजा सिंह व रोशन लाल मीना
- नारी नर से महान है 31
  शशिकान्त द्विवेदी 'आमेटा'
- परिवार में समरसता : आज की आवश्यकता 33
  प्रो. (डॉ.) जमनालाल बायती
- भारतीय भावनाओं के गीतकार : पं. भरत व्यास 34
  ललित शर्मा
- इंदरगढ़ (अलवर) के स्कूल में इन्द्रविमान 36
  राजेश लवानिया
- संगति का प्रभाव 38
  दीपचंद सुथार
- प्राथमिक कक्षा में शिक्षक 39
  डॉ. राम निवास
- अच्छे फुटबाल रेफरी की विशेषताएँ 46
  यासीन खाँ चौहान

मासिक गीत

- चल रहे हैं चरण अगणित.... 23
  मुकेश कुमार लखारा

स्तम्भ

- पाठकों की बात 6
- आदेश-परिपत्र 25-26
- पञ्चाङ्ग (जनवरी, 2019) 27
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 27
- शाला प्रांगण 47
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50
- व्यंग्य चित्र-**रामबाबू माथुर** 18, 34

पुस्तक समीक्षा 43-46

- उड़ने को तैयार मन (काव्य संग्रह)
  कवयित्री : डॉ. रेणुका व्यास 'नीलम'
  समीक्षक : **राजकुमार धर द्विवेदी**
- मैं आम आदमी हूँ (व्यंग्य संग्रह)
  लेखक : डॉ. अजय जोशी
  समीक्षक : **पृथ्वी राज रतनू**
- शब्द अम्बर (व्यंग्य संग्रह)
  लेखक : रमेश कुमार शर्मा
  समीक्षक : **धर्मप्रकाश विकल**

मुख्य आवरण : नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

छपते-छपते

स्वागत! अभिनन्दन!!

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा

राज्य मंत्री
शिक्षा विभाग (प्राथमिक एवं माध्यमिक) स्वतंत्र प्रभार
पर्यटन विभाग एवं देवस्थान विभाग

माता रूपी देवी और पिताश्री मोहन सिंह के सुपुत्र श्री गोविन्द सिंह डोटासरा का जन्म 01 अक्टूबर 1964 को लक्ष्मणगढ़ के कृपाराम जी की ढाणी गाँव में हुआ। पिताश्री मोहन सिंह डोटासरा शिक्षक रहे। आपकी धर्मपत्नी सुनीता देवी भी शिक्षिका हैं।

श्री डोटासरा ने सीकर कोर्ट में लगभग 20 वर्ष तक वकालत का कार्य किया। सन् 2005 में आपने राजनीति में प्रवेश किया। लक्ष्मणगढ़ पंचायत समिति में प्रधान बने। सन् 2008, 2013 और 2018 में लक्ष्मणगढ़ (सीकर) से विधायक निर्वाचित हुए।

सन् 2016 के लिए आपको सर्वश्रेष्ठ विधायक का सम्मान राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष माननीय कैलाश मेघवाल के कर कमलों से 6 मार्च, 2018 को मिला। श्री गोविन्द सिंह डोटासरा ऊर्जावान विधायक के रूप में जाने जाते हैं। विधानसभा के पटल पर शिक्षा और जनहित के मामले आप लगातार सक्रियता के साथ उठाते रहे हैं।

आपके ऊर्जावान नेतृत्व से राज्य में शिक्षा को नया आयाम मिलेगा। देश में राजस्थान अपनी विशिष्ट पहिचान बनाएगा।

आपका हार्दिक अभिनन्दन स्वागत एवं शुभकामनाएँ!

सत्यमेव जयते

नथमल डिडेल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

नई ऊर्जा, नये संकल्प

26 जनवरी हमारा 'गणतन्त्र दिवस' है।

यह राष्ट्रीय पर्व हम सन् 1950 से हर वर्ष पूर्ण उत्साह और उमंग के साथ मना रहे हैं।

'अपना देश-अपना संविधान' यह सर्वोच्च भाव सदैव हमें आत्मगौरव की अनुभूति करवाता है। हमारा संविधान हमें अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्त्तव्यों के प्रति सचेत करता है।

'गणतन्त्र दिवस' के इस विशेष सुअवसर पर हमें आत्मावलोकन करना चाहिए। हमारा सौभाग्य है कि शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करते हुए हमें राष्ट्र सेवा का विशिष्ट अवसर मिला है। अपने कार्यों को श्रेष्ठतम रूप में सम्पादित करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है।

वर्तमान शिक्षा-सत्र अपने उत्कर्ष पर है। शिक्षक अतिरिक्त कक्षाएं लेकर पाठ्यक्रम को गुणवत्तापूर्वक पूरा करवाएं। विद्यार्थी परीक्षा हेतु तैयार हों व उनमें परीक्षा का भय और तनाव न हो, वे सहजता से शत-प्रतिशत सफलता अर्जित करें।

आगामी समय केवल विद्यार्थियों की परीक्षाओं का नहीं हम सभी के मूल्यांकन का भी है। सत्रारम्भ से शिक्षा के हित में, योजनाओं के क्रियान्वयन में हमारे जो प्रयास रहे हैं उनके परिणाम ही हमें प्रोत्साहित करेंगे।

नववर्ष (ईस्वी सन् 2019) की आप सभी को बहुत-बहुत बधाई! हार्दिक शुभकामनाएँ! नव वर्ष में हम सभी नई ऊर्जा, नये संकल्प और नई शक्ति के साथ आगत का स्वागत करें।

सभी के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामनाओं के साथ...

(नथमल डिडेल)

"वर्तमान शिक्षा-सत्र अपने उत्कर्ष पर है। शिक्षक अतिरिक्त कक्षाएं लेकर पाठ्यक्रम को गुणवत्तापूर्वक पूरा करवाएं। विद्यार्थी परीक्षा हेतु तैयार हों व उनमें परीक्षा का भय और तनाव न हो, वे सहजता से शत-प्रतिशत सफलता अर्जित करें।

आगामी समय केवल विद्यार्थियों की परीक्षाओं का नहीं हम सभी के मूल्यांकन का भी है। सत्रारम्भ से शिक्षा के हित में, योजनाओं के क्रियान्वयन में हमारे जो प्रयास रहे हैं उनके परिणाम ही हमें प्रोत्साहित करेंगे।"

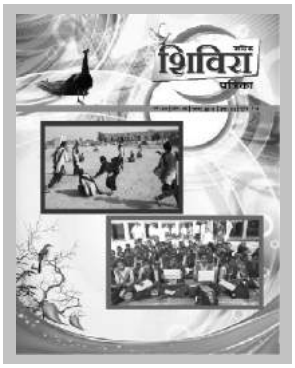

▼ चिन्तन

धनार्जने यथा बुद्धेरपेक्षा व्ययकर्मणि।
ततोऽधिकैव सापेक्ष्या तत्रौ चित्यस्य निश्चये।।

अर्थात्-धन कमाने में जितनी बुद्धिमत्ता की आवश्यकता पड़ती है, उससे अनेक गुनी व्यय के औचित्य का निर्धारण करते समय लगनी चाहिए।

(प्रज्ञो., प्र.मं.अ. 4, 54)

पाठकों की बात

- शिविरा दिसम्बर 2018 अंक में 'धणी रो धणी कुण' ओमप्रकाश सारस्वत जी का संस्मरणात्मक लेख मनभावन था। किसी भी लेख में शीर्षक के महत्त्व की महिमा होती है। बहुत अच्छा बताया है। 'धणी' तो धणी ही होता है। दिशाकल्प में चुनावों के महत्त्व के साथ ही जागरूक शिक्षक की बात की गई है। विजयसिंह माली के लेख में पटेल को शिल्पी व देशभक्त के रूप में प्रस्तुत किया है। पाकिस्तान पर विजय सम्बन्धी लेख जयप्रकाश पुरोहित, दिलीप परिहार द्वारा ज्ञान संकल्प पोर्टल की जानकारी, संगीता कुमारी शर्मा का लेख, विश्वनाथ भाटी का शिक्षकत्व बचाने हेतु लेख, अरनी रावर्ट्स के लेख के साथ ही सभी लेख सराहनीय है। कार्यस्थल पर तनाव कम करें लेख भी बहुत अच्छा लगा। पत्रिका का कलेवर आकर्षक एवं सराहनीय है। सम्पादक मण्डल इस हेतु बधाई का पात्र है।

  डॉ. गोविन्द नारायण कुमावत, जयपुर

- शिविरा के दिसम्बर 2018 के अंक में प्रकाशित आलेख 'बचाकर रखना होगा शिक्षकत्व' अत्यंत प्रेरणास्पद एवं वर्तमान समय में ऊहापोह की जिन्दगी गुजार रहे शिक्षकों को गुरुतर दायित्व की महत्ता प्रदान करने वाला है। श्रेष्ठ आलेख के लिए विश्वनाथ भाटी को साधुवाद।

  शान्तिलाल सेठ, बाँसवाड़ा

- शिविरा दिसम्बर-18 अंक में 'बचाकर रखना होगा शिक्षकत्व' लेख में विश्वनाथ भाटी के प्रयत्नों एवं उदाहरणों का यदि शिक्षकगण अनुकरण करें तो निश्चय ही 'शिक्षक' की साख बचेगी। शैक्षिक गुणवत्ता मात्र परीक्षा परिणाम वृद्धि अनुचित नकल प्रोत्साहन से नहीं होगी। सटीक लेख प्रो. मिश्रीलाल मंडोत के 'आखिर हम कहाँ जा रहे हैं' को पढ़कर बालकों के भविष्य के साथ खिलवाड़ न कर, आत्मचिंतन कर, परिश्रम से विद्याध्ययन कराते हुए श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम लेना चाहिए। इसी संदर्भ में वृद्धिचंद गोठवाल के विचार 'शिक्षक का दायित्व बोध' से ग्रहण करना चाहिए। परीक्षा को परीक्षा के रूप में आयोजित कर, शुद्ध एवं ठीक परिणाम से विद्यार्थी की गुणवत्ता बढ़ेगी और उसका सुखद भविष्य होगा। शिवदयाल शर्मा का लेख 'सेवाकाल का स्वर्णिम युग' वर्तमान पीढ़ी के लिए प्रेरणास्पद एवं विद्यालय की प्रतिष्ठा बढ़ाने का सरल नुस्खा शिक्षकों के लिए है। परिश्रम का फल अवश्य मिलता है, सुख की अनुभूति भी होती है। सभी सामग्री पठनीय है। इस हेतु सम्पादक मण्डल बधाई का पात्र है।

  बजरंग प्रसाद मजेजी, अजमेर

- दिशाकल्प मेरा पृष्ठ में श्रीमान निदेशक महोदय माध्यमिक शिक्षा ने एकीकृत शिक्षा संकुलों के पुनर्गठन के बाद सर्वश्रेष्ठ परिणामों की अपेक्षा की है। शिक्षा विभाग का यह एक नया प्रयोग है। राष्ट्रीय शिक्षा योजना +2 स्तर के सात दिवसीय विशेष सेवा शिविर व शीतकालीन अवकाश में शिक्षा एवं सेवा संस्कार को जीवन में उतारें व अच्छे नागरिक बनें यह संदेश दिया है। शीतकालीन अवकाश में समय का सदुपयोग करके गुणात्मक एवं मात्रात्मक अभिवृद्धि हो। उपचारात्मक एवं निदानात्मक शिक्षण की व्यवस्था कर बोर्ड के परीक्षा परिणामों को उत्कृष्ट बनाएं। यह उनकी हार्दिक चाहत है। आलेखों में समस्त आलेख पठनीय, संग्रहणीय हैं- विशेषकर शिक्षकबंधु सरदार पटेल, धणी रो धणी कुण, समावेशी शिक्षा, नमस्कार एवं चरणस्पर्श के वैज्ञानिक रहस्य, यावत जीवेत सुखं जीवेत, बोर्ड परीक्षा की तैयारी, शिक्षक का दायित्व बोध, जीवन चलने का नाम। एक विनम्र निवेदन निदेशक महोदय से सम्भव हो तो शिक्षकों के आयोजित प्रशिक्षणों में सेवानिवृत्त शिक्षकों व अधिकारियों के अनुभवों का लाभ अवश्य उठाएँ। साक्षरता एवं नए प्रयोगों के प्रचार-प्रसार हेतु इन शिक्षकों का सहयोग लेने की योजना बनावें। सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

  टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूं

- शिविरा पत्रिका माह दिसम्बर 2018 मिली। पत्रिका खोलते ही श्रीमान् निदेशक महोदय द्वारा लिखा गया-दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ बहुत अच्छा लगा। 'श्रेष्ठ का वरण करें'-ये शब्द हृदय की गहराई तक उतरे एवं बार-बार गुंजायमान होते रहे। ग्लोबल वर्मिंग, शिक्षक का दायित्व बोध, जीवन चलने का नाम सहित संपूर्ण अंक ने सोचने को मजबूर किया। शिविरा पत्रिका का नियमित पठन शिक्षक को वास्तव में एक आदर्श बनाने की क्षमता से पूर्णतया युक्त है। सभी लेखकों को हमारा कोटिशः प्रणाम।

  दिलीप रावल, डूँगरपुर

विशेष रपट

शिक्षा विभागीय राज्यस्तरीय सम्मान

मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2018

❒ मुकेश व्यास

रियासतों के विलीनीकरण पश्चात् बीकानेर में राज्य का प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय स्थापित हुआ। श्री मदन मोहन वर्मा ने 1950 में पहले निदेशक के रूप में कार्यभार सम्भाला। शिक्षा विशेषतः प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता की दृष्टि से 1997 में प्राथमिक शिक्षा और माध्यमिक शिक्षा विभाग अलग-अलग रूप में कार्य करने लगे।

शिक्षा चाहे प्राथमिक हो या माध्यमिक या कोई अन्य विभाग हो मंत्रालयिक और सहायक कर्मचारी उनके मजबूत आधार होते हैं। प्रत्येक विभाग की योजनाओं के क्रियान्वयन और उनकी प्रगति मंत्रालयिक कर्मचारियों पर निर्भर करती है। शिक्षा विभाग के ऐसे होनहार साथियों के सम्मान के विचार को मूर्त रूप दिया तत्कालीन निदेशक डॉ. ललित के पंवार ने। 1990 में मंत्रालयिक कर्मचारियों के सम्मान समारोह का प्रथम कार्यक्रम आयोजित हुआ। सम्मान समारोह अलग-अलग तिथियों में सम्पन्न होते रहे पर पिछले कई वर्षों से मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह निदेशालय के स्थापना दिवस 16 दिसम्बर को मनाया जाता है।

सम्मान समारोह की शृंखला में 16 दिसम्बर, 2018 को आयोजित समारोह '26वाँ सम्मान समरोह' था और इसमें पूरे राज्य के सुदूर क्षेत्रों से आए श्रेष्ठ चयनित 38 कार्मिकों का सम्मान सम्पन्न हुआ।

बीकानेर निदेशालय परिसर के समीप स्थित वेटरनरी सभागार में 16 दिसम्बर, 2018 सायं 4 बजे सम्मान समारोह आरम्भ हुआ। बाह्य परिसर को रंगीन कलात्मक रंगोली से महारानी स्कूल की छात्राओं ने सजाया। छात्राओं ने परिसर में प्रविष्ठ हो रहे अतिथियों और सम्मानित कर्मचारियों का तिलकार्चन कर अभिनन्दन किया।

गरिमामय मंच पर प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक श्री श्याम सिंह राजपुरोहित, माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री नथमल डिडेल, संयुक्त निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्रीमती नूतन बाला कपिला, संयुक्त निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा श्री अजय चौपड़ा, माध्यमिक शिक्षा वित्तीय सलाहकार श्री ब्रह्मदत्त शर्मा, उप निदेशक (मा.) श्री प्रकाश चन्द्र जाटोलिया, उप निदेशक (प्रशासन) श्री घीसालाल शर्मा, उप निदेशक (समाज शिक्षा) श्री शिवप्रसाद ने सम्मान समारोह को नई ऊँचाई प्रदान की।

माँ सरस्वती की मूर्ति के समक्ष दीप प्रज्वलन और माल्यार्पण द्वारा अतिथियों ने समारोह आरम्भ किया। पुष्पाहार से विभाग के अधिकारियों कर्मचारियों ने गरिमामय मंच को सुशोभित कर रहे अतिथियों, अधिकारियों का स्वागत किया। महारानी स्कूल की बालिकाओं ने सरस्वती वन्दना और स्वागत गान प्रस्तुत कर सभी का अभिनन्दन किया।

सम्मान समारोह की एंतिहासिक पृष्ठभूमि से आगन्तुकों का परिचय, कर्मचारी नेता और अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी माध्यमिक शिक्षा श्री सुरेश व्यास ने करवाया।

राज्य के श्रेष्ठ चयनित मंत्रालयिक और सहायक कर्मचारियों के सम्मान समारोह में सेवानिवृत्त संयुक्त निदेशक डॉ. विजय शंकर आचार्य और ओम प्रकाश सारस्वत ने भी सम्बोधित किया। सम्मानित कर्मचारियों का तिलकार्चन संयुक्त निदेशक (मा. शिक्षा) श्रीमती नूतन बाला कपिला ने किया, माल्यार्पण उपनिदेशक समाज शिक्षा श्री शिव प्रसाद कर रहे थे, साफा वित्तीय सलाहकार श्री ब्रह्मदत्त शर्मा ने पहनाया, प्रशस्ति प्रमाण पत्र माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री नथमल डिडेल द्वारा दिया गया, प्रतीक चिह्न प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक श्री श्याम सिंह राजपुरोहित द्वारा, शॉल संयुक्त निदेशक (प्रा.शिक्षा) श्री अजय चौपड़ा द्वारा, प्रशस्ति पुस्तिका एवं शिविरा विशेषांक उपनिदेशक (प्रशासन) मा. शिक्षा श्री घीसालाल शर्मा द्वारा और श्रीफल उपनिदेशक (माध्यमिक) माध्यमिक शिक्षा श्री प्रकाश चन्द्र जाटोलिया द्वारा भेंट किए गए। गरिमामय मंच द्वारा सम्मानित कर्मचारियों के सम्मान में प्रकाशित 'प्रशस्तियाँ' का लोकार्पण किया गया।

संपूर्ण राज्य के चयनित श्रेष्ठ 38 कर्मचारियों के सम्मान समारोह को सम्बोधित करते हुए माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री नथमल डिडेल ने सम्मानित कर्मचारियों को बधाई एवं शुभकामनाएँ देते हुए विभाग को इन कर्मचारियों का ऋणी बताया। अपने अनुभव के आधार पर आपने कहा कि- 'आवश्यकता के समय मंत्रालयिक कर्मचारी 18-20 घण्टे भी कार्य करते है। ''आप सभी अपने-अपने जिले के ब्राण्ड एम्बेसडर है।'' आपकी कार्यशैली से अन्य कर्मचारियों को भी अच्छा कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।'

प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक श्री श्याम सिंह राजपुरोहित ने सम्मान समारोह में सम्मानित हो रहे कर्मचारियों के सम्मान में कहा-''सेनापतियों का तो सम्मान हमेशा होता देखा पर सैनिकों के सम्मान की यह परम्परा शिक्षा विभाग में ही है। इसका हम सबको गर्व है।'' आपने कहा-''मंत्रालयिक कर्मचारी हमारी कार्ययोजनाओं के मजबूत आधार होते हैं। उनका सम्मान कार्य की संस्कृति का सम्मान है।''

सम्मानित कर्मचारियों की प्रशस्तियों का वाचन अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी माध्यमिक शिक्षा श्री सुरेश व्यास और सहायक प्रशासनिक अधिकारी राधाकृष्णन उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, बीकानेर के श्री अविनाश व्यास ने किया।

सभी आगन्तुकों के प्रति आभार ज्ञापित किया संयुक्त निदेशक, माध्यमिक शिक्षा श्रीमती नूतन बाला कपिला ने। आपने 'जीवन पथ पर बढ़ते जाओ...' प्रेरक गीत अपने स्वर में सुनाकर सभी को कर्मनिष्ठ बने रहने की प्रेरणा दी।

सम्पूर्ण समारोह का संचालन वरिष्ठ सहायक श्री मदन मोहन मोदी ने किया। ओजस्वी समवेत स्वरों में राष्ट्रगान के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

सभी ने एक दूसरे को बधाई शुभकामनाएँ देते हुए हँसी खुशी के वातावरण में भोजन प्रसाद मिष्टान्न ग्रहण किया।

सम्मानित कर्मचारियों की नामावली

1. **श्री विकास भाटी,** वरिष्ठ सहायक
श्री जवाहर लाल नेहरु रा.उ.मा.वि., भीम मण्डी, कोटा।
2. **श्री संजय जैन,** वरिष्ठ सहायक
कार्यालय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा उदयपुर मण्डल, उदयपुर।
3. **श्री योगेश कुमार कुमावत,** वरिष्ठ सहायक
कार्यालय शाला दर्पण प्रकोष्ठ शिक्षा संकुल, मुख्यालय जयपुर।
4. **श्री चाँदमल बनजारा,** निजी सहायक
कार्यालय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा अजमेर संभाग, अजमेर।
5. **श्री शंकर लाल खत्री,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
6. **श्री सत्यनारायण व्यास,** कनिष्ठ सहायक
राजकीय उ.मा.वि. किशनावतों की खेड़ी, भीलवाड़ा।
7. **श्री लक्ष्मीनारायण सोनी,** अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
8. **श्री आलोक चतुर्वेदी,** आशुलिपिक
कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा, जयपुर।
9. **श्री हरीसिंह राठौड़,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा जोधपुर संभाग, जोधपुर।
10. **श्री देवाराम,** सहायक कर्मचारी
कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) मा. शिक्षा, जोधपुर।
11. **श्री रामजीलाल कुम्भावत,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय जिला शिक्षा माध्यमिक (मुख्यालय) मा. शिक्षा, चूरू।
12. **श्री बंशीलाल जोशी,** वरिष्ठ सहायक
कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
13. **श्री विनय कुमार गोस्वामी,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय निदेशक प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
14. **श्री हितेन्द्र कुमार रावल,** वरिष्ठ सहायक
कार्यालय संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, उदयपुर संभाग, उदयपुर।
15. **श्री अजय कुमार डांगी,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय मुख्य ब्लॉक, प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी, बड़ी सादड़ी, चित्तौड़गढ़।
16. **श्री जोगेन्द्र कुमार त्रिवेदी,** अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) मा. शिक्षा, जोधपुर।
17. **श्री राजेश कुमार शर्मा,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, अजमेर संभाग, अजमेर।
18. **श्री राजेन्द्र कुमार,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय निदेशक, माध्यमिक राजस्थान, बीकानेर।
19. **श्री कुरीचन्द कलाल,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी
गौरीशंकर उपाध्याय, राजकीय मा.वि. नम्बर-6, डूँगरपुर।
20. **श्री पन्नालाल,** सहायक कर्मचारी
राजकीय उ.मा.वि. मनफूलसिंहवाला, श्री गंगानगर।
21. **श्री राजेन्द्र कुमार कुमावत,** वरिष्ठ सहायक
राजकीय राजा रामदेव पोद्दार उ.मा.वि. गाँधीनगर, जयपुर।
22. **श्री विनोद कुमार शर्मा,** वरिष्ठ सहायक
कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), मा. शिक्षा, पाली।
23. **श्री विक्रम सिंह,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
24. **श्री विष्णु नारायण स्वामी,** कनिष्ठ सहायक
कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), प्रारंभिक शिक्षा, बीकानेर।
25. **श्री दिनेश कुमार शर्मा,** वरिष्ठ सहायक
कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, जयपुर।
26. **श्री विनायक शर्मा,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी
राजकीय उ.मा. विद्यालय, गंगधार, झालावाड़।
27. **श्री उमेश कुमार साध,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
28. **श्री विवेक कंसारा,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), मा. शिक्षा, डूँगरपुर।
29. **श्री ओमप्रकाश मीणा,** कनिष्ठ सहायक
कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), मा. शिक्षा, चूरू।
30. **श्री राजेन्द्र चौधरी,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय पंजीयक, शिक्षा विभागीय परीक्षाएँ राजस्थान, बीकानेर।
31. **श्री हीराराम मीणा,** अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा पाली मण्डल, पाली।
32. **श्री शिवराज सिंह,** वरिष्ठ सहायक
रा.आ.उ.मा.वि., चक 3-ओ, श्रीकरणपुर जिला श्रीगंगानगर।
33. **श्री पूनम चंद मेघवाल,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय पंजीयक, शिक्षा विभागीय परीक्षाएँ राज., बीकानेर।
34. **श्री जोगाराम परमार,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, जालोर।
35. **श्री प्रेमरतन हरिजन,** सहायक कर्मचारी
कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
36. **श्री पूर्ण सिंह,** कनिष्ठ सहायक
कार्यालय निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
37. **श्री मकान सिंह,** वरिष्ठ सहायक
कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
38. **श्री परमेश्वरी चौधरी,** सहायक कर्मचारी
कार्यालय उप निदेशक, समाज शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

-संपादक, शिविरा, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर **मो. 9460618809**

राष्ट्रध्वज की विकास यात्रा

❐ नरेश शर्मा

हमारा राष्ट्रध्वज तिरंगा आज जिस रंग रूप में दिखता है उसके विकास और उद्भव की कहानी बहुत रोचक है। तिरंगे के वर्तमान स्वरूप के निर्धारण में अनगिनत लोगों के विचार, सुझाव, संकल्पना, राजनीतिक विचारधाराओं का योगदान रहा है।

इतिहास की मान्यता है कि राष्ट्र ध्वज के प्रथम डिजाइन में तीन समान पट्टियों की संकल्पना की गई थी। उस प्रारम्भिक डिजाइन के ध्वज में सबसे ऊपर की पट्टी हरा रंग, मध्य की पट्टी पीला रंग और सबसे नीचे की पट्टी लाल रंग की बनी हुई थी। इसके अलावा बीच वाली पीली पट्टी पर देवनागरी लिपि में नीले रंग से 'वन्देमातरम्' भी लिखा हुआ था। हरे रंग वाली ऊपर की पट्टी पर कमल के आठ पुष्प दर्शाए गए थे। साथ ही सबसे नीचे की लाल पट्टी पर बायीं ओर सफेद रंग में सूर्य और दायीं तरफ सफेद रंग में अर्धचन्द्र और एक तारा दर्शाया गया था।

ध्वज के इस प्रारम्भिक स्वरूप को लेकर कुछ मतभेद भी हैं। कुछ विद्वानों की मान्यता है कि 7 अगस्त 1906 ई. को कोलकाता के पारसी बागान चौक पर जो ध्वज फहराया गया था, उसमें किसी भी रूप में तारा नहीं दर्शाया गया था।

ध्वज की विकास यात्रा में एक महत्त्वपूर्ण संदर्भ महान स्वतंत्रता सेनानी, क्रांतिकारी मेडम भीकाजी कामा से जुड़ा है। यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि मैडम भीकाजी कामा और उनके क्रांतिकारी साथियों द्वारा सन् 1907 में जर्मनी के स्टुटगार्ड में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में एक ध्वज फहराया गया था। उनके द्वारा फहराए गए ध्वज का डिजाइन भी काफी हद तक पहले वाले ध्वज के अनुरूप ही था। मैडम भीकाजी कामा द्वारा फहराए गए ध्वज में अष्टकमल पुष्पों की संकल्पना भिन्न थी। नीचे वाली लाल पट्टी पर दर्शाए गए सूर्य को ध्वज के दायीं ओर दिखाया गया था। साथ ही एक परिर्वतन यह था कि अर्धचन्द्र पर कोई तारा अंकित नहीं किया गया था। इसी ध्वज को अंग्रेज सरकार से छुपाकर भारत लाने को श्रेय इन्दुलाल याज्ञनिक को है जो भारत के सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता थे।

ध्वज के विकास और हमारे राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन का अटूट संबंध रहा था। जब ब्रिटिश सरकार के खिलाफ देश में होमरूल आन्दोलन प्रगति पर था। उस समय 1917 में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक और एनीबेसेण्ट द्वारा ध्वज का तीसरा रूप विकसित हुआ। इस ध्वज के डिजाइन में समान आकार की पाँच लाल और चार हरी पटिट्याँ थी। इस डिजाइन में सात तारे, सप्तऋषि मण्डल की आकृति में दर्शाए गए थे। सबसे ऊपर की पट्टी के बाएँ कोने पर यूनियन जैक और दाएँ कोने पर एक सफेद अर्धचन्द्र और तारा भी दिखाया गया था। ब्रिटिश ध्वज 'यूनियन जैक' को दर्शाना असंख्य भारतीयों को पसंद नहीं आया। अतः इसे अस्वीकार कर दिया गया।

हमारे ध्वज के विकास की कहानी में एक नाटकीय मोड़ तब आया जब महात्मा गाँधी ने ध्वज के डिजाइन के सम्बन्ध में अपना सुझाव प्रस्तुत किया। दरअसल 1921 में विजयवाड़ा में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस समिति की बैठक में आन्ध्रप्रदेश के एक युवा नेता ने एक ध्वज का डिजाइन तैयार करके महात्मा गाँधी को दिखाया। उस ध्वज में दो रंगों का उपयोग किया गया था, लाल और हरा। इस ध्वज में चरखे को प्रगति के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया था। गाँधीजी ने उस ध्वज के डिजाइन और महत्त्व को समझते हुए उस युवक को उस ध्वज में एक श्वेत पट्टी और जोड़ने का सुझाव दे दिया। गाँधीजी की संकल्पना के अनुसार तीन रंग का ध्वज–सफेद, हरा और लाल तथा मध्य में नीले रंग के चरखे की आकृति दर्शाना अधिक उपयुक्त था। ध्वज का यह डिजाइन महत्त्वपूर्ण बन गया और 1931 तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सभी अधिवेशनों में इसे पूर्ण सम्मान के साथ फहराया गया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कराची अधिवेशन 1931 का भी ध्वज विकास की यात्रा में अनुपम योगदान है। इस अधिवेशन में ध्वज के सम्बन्ध में बहस व प्रस्ताव पारित किए गए। उस समय आवश्यकता ध्वज के ऐसे डिजाइन की थी जिसके प्रतीक, रंग अथवा बनावट को लेकर कोई साम्प्रदायिक विवाद न हो।

इस क्रम में एक सुझाव कांग्रेस द्वारा गठित एक समिति की तरफ से भी आया जिसने सादा केसरिया रंग के ध्वज का सुझाव दिया। उनके अनुसार इस डिजाइन में ऊपरी बाएँ कोने पर भूरे रंग के चरखे की आकृति बनी थी। परन्तु इस प्रारूप को ना पसन्द करते हुए अखिल भारतीय कांग्रेस समिति ने अस्वीकार कर दिया।

1931 का वर्ष हमारे राष्ट्र ध्वज की विकास यात्रा का महत्त्वपूर्ण पड़ाव था। उसी वर्ष तिरंगे को राष्ट्र ध्वज के रूप में स्वीकार करने सम्बन्धी एक प्रस्ताव भी पारित किया गया। अब केसरिया, श्वेत और हरे रंग की तीन पट्टियों से युक्त तिरंगे ध्वज के रंगों का अर्थ भी स्पष्ट कर दिया गया–

केसरिया रंग–साहस, हिम्मत और त्याग।
श्वेत–सत्य और शान्ति।
हरा–विश्वास, विकास और शौर्य।

ध्वज के इस डिजाइन में श्वेत पट्टी पर गहरे नीले रंग से एक चरखा भी अंकित किया गया था। इसका आकार तीन×दो चौड़ाई था। इस प्रस्ताव को प्रथम बार राष्ट्रध्वज के रूप में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने आधिकारिक मान्यता प्रदान की।

संविधान सभा द्वारा 22 जुलाई 1947 को इस ध्वज को स्वतंत्र भारत के राष्ट्रध्वज के रूप में स्वीकृत कर लिया गया। इस अवसर पर एक परिवर्तन भी महत्त्वपूर्ण था, अब श्वेत पट्टी पर चरखे का स्थान महान् सम्राट अशोक के धर्मचक्र ने ले लिया। ध्वज की चौड़ाई और लम्बाई का अनुपात क्रमशः 2'×3' निश्चित कर दिया गया। इस प्रकार हमारे राष्ट्रध्वज की विकास यात्रा विभिन्न चरणों से होकर गुजरी है तथा अंतिम स्वरूप प्राप्त करने से पूर्व इसमें समयानुकूल विभिन्न परिवर्तन भी किए गए हैं।

बी–111, अशोक विहार,
कर्मचारी कॉलोनी, अलवर (राज.)–301001
मो: 9829730611

जयन्ती विशेष

भारतीय युवा शक्ति के नायक-स्वामी विवेकानन्द

❒ कमलनारायण पारीक

उन्नीसवीं शताब्दी में हमारे देश के जिन महापुरुषों ने अपने महान् कार्य-कलापों से भारत माता का मुख उज्ज्वल किया है, उनमें स्वामी विवेकानन्द का प्रमुख योगदान है। वे भारत की एक ऐसी महान् विभूति थे, जिन्होंने देश को उन्नत बनाने में तथा नवयुवकों का पथ प्रदर्शन करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। स्वामी विवेकानन्द को युग प्रवर्त्तक या युगद्रष्टा कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी, सन् 1863 ई. को कलकत्ता में हुआ था। इनके पिता का नाम विश्वनाथ दत्त था जो कलकत्ता के एक प्रसिद्ध वकील थे। इनकी माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था जो एक धर्म परायण और सम्भ्रान्त महिला थी।

नरेन्द्रनाथ दत्त बाल्यकाल से ही बड़े मेधावी थे। ये बचपन में बड़े नटखट, चुलबुले थे। उनकी बुद्धि इतनी तेज थी कि वे एक बार जो पढ़ लेते या सुन लेते थे वह उन्हें एक हद तक अच्छी तरह याद हो जाता था।

सात साल की उम्र में नरेन्द्र नाथ को स्कूल में भर्ती कराया गया। वहाँ अंग्रेजी भाषा का प्रचलन था, वे इसे पढ़ने को राजी नहीं हो रहे थे। बोले 'यह विदेशी भाषा है। मैं इस भाषा को क्यों पढ़ूँ?' परन्तु जब वे अंग्रेजी पढ़ने लगे तो उन्होंने बहुत जल्द ही अंग्रेजी भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लिया।

बालक नरेन्द्र को अपने पिता से सहृदयता प्राप्त हुई थी। इसी कारण वह किसी भिक्षुक को खाली हाथ नहीं जाने देते थे। कुछ न होने पर वह अपने निजी उपयोग की वस्तुएँ भी बेहिचक भिक्षुक को दे देते थे। एक बार उनकी इस आदत से परेशान होकर उनके घरवालों ने उनको एक कमरे में बंद कर दिया था। दानशीलता की प्रवृति जीवनपर्यन्त उनमें बनी रही।

बालक नरेन्द्र को खेलों तथा अपने बड़ो की नकल उतारने में विशेष रुचि थी। कंचे खेलना, कुश्ती तथा उछलना-कूदना उनके प्रिय खेल थे।

अठारह वर्ष की आयु तक नरेन्द्र नाथ ने संसार के अनेक धर्मों और पंथों का अध्ययन कर लिया था। नरेन्द्र को घुड़सवारी, तैराकी, बॉक्सिंग और कुश्ती जैसे खेलों में विशेष रुचि थी। इन खेलों में भाग लेने से उनके शरीर की बनावट कसरती युवक की थी और इन सब गुणों

के प्रादुर्भाव के फलस्वरूप नरेन्द्र नाथ का निर्माण हुआ-एक परम ओजस्वी नवयुवक के रूप में।

यह नटखट बालक 17 वर्ष की अल्पायु में एक चिन्तनशील तथा उत्तरदायित्वपूर्ण व्यक्तित्व के धनी एक किशोर के रूप में उभरकर आया। स्कॉटिश चर्च स्कूल में प्रवेश कर वर्ष 1881 ई. में इण्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की।

नरेन्द्र नाथ का प्रश्न था-'क्या ईश्वर का अस्तित्व है?' इस प्रश्न के उत्तर के लिए ये अनेक धार्मिक संतों से मिले परन्तु सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिला। जिसके कारण उनकी आध्यात्मिक पिपासा और अधिक बढ़ती गई। इनके प्रोफेसर विलियम हेस्टी ने इन्हें अपने प्रश्न के उत्तर के लिए कलकत्ता जाकर स्वामी रामकृष्ण परमहंस से मिलने को कहा। नरेन्द्रनाथ अब तक बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके थे।

सन् 1881 ई. में नरेन्द्र नाथ दक्षिणेश्वर पहुँच कर स्वामी रामकृष्ण परमहंस से मिले। उनकी यह भेंट उनमें क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने वाली सिद्ध हुई। नरेन्द्र नाथ ने स्वामी जी से पूछा-'आदरणीय महात्मन्! क्या आपने ईश्वर को देखा है?' स्वामीजी ने उत्तर दिया 'हाँ मैंने उन्हें देखा है, ठीक ऐसे ही जैसे तुम्हें देख रहा हूँ।' स्वामी जी का उत्तर सुनकर नरेन्द्रनाथ बहुत प्रसन्न हुए और मन ही मन सोचकर संतुष्ट हुए कि कोई तो मेरे प्रश्न का उत्तर देने वाला है।

स्वामीजी के उपदेशों तथा उनकी बातों की नरेन्द्रनाथ पर गहरी छाप पड़ी। कुछ समय बाद वे स्वामी जी के परम शिष्य बन गए और सन्यास धारण कर लिया। यही नरेन्द्र नाथ आत्मज्ञान प्राप्त होने के बाद आगे चलकर विश्व विख्यात धर्मोपदेशक स्वामी विवेकानंद कहलाए।

जुलाई सन् 1890 में नरेन्द्र नाथ अपने गुरु से आज्ञा लेकर परिव्राजक अवस्था में उत्तर प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, केरल, मैसूर, मद्रास और हैदराबाद आदि प्रांतों के धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थानों में गए।

भारत भ्रमण में स्वामी विवेकानंद ने देश की गरीबी, भूखमरी, अशिक्षा, पिछड़ापन, अंधविश्वास, जातिवाद, निराशा में उलझी, टूटी एवं बिखरती भारत की जनता को देखा। देश की ऐसी दुर्दशा को देखकर उनका मन वेदना से कराह उठा और तभी उन्होंने संकल्प लिया राष्ट्र के नवनिर्माण का, उसके सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अभ्युदय का।

भारतवासियों की ऐसी दुर्दशा को देखकर स्वामी जी ने माँ काली के मंदिर में जाकर अपने हृदय की व्याकुलता और विवशता इस प्रकार प्रकट की-'हे माँ, यदि तुमने मुझे मेरे इन भारत वासियों की मुक्ति के लिए कार्य करने की सामर्थ्य नहीं दी तो फिर इनकी पीड़ा देखने के लिए मुझे दृष्टि क्यों दी? क्या मेरे देशवासी जो ऋषियों की संतानें है। परतंत्रता की बेड़ियों से जकड़े सदा निरादर, अज्ञानता, निर्धनता ही भोगते रहेंगे?'

सन् 1888 ई. के अंत से लेकर सन् 1890 ई. के बीच अपने गुरु और गुरुभाई से आज्ञा लेकर विदेश भ्रमण के लिए निकल गए। वे विदेश भ्रमण करते हुए सन् 1893 ई. में अमेरिका के शिकागो नगर पहुँचे। उस समय शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन हो रहा था। स्वामीजी भी वहाँ पहुँचे। वहाँ पहुँचकर स्वामी विवेकानंद ने अपना प्रथम परिचय भाषण शुरू किया-'अमेरिका निवासी बहनों और भाइयों?' उनके इस संबोधन से सारा सभागार तालियों से गूँज उठा। उन्होंने कहा 'मैं अपने आहत हृदय को लेकर एक अपरिचित विदेशी भूमि पर आया हूँ। किन्तु नौजवानों! उन दीन-हीन पीड़ितजनों के

लिए अपनी इस संवेदना और अपने इस संघर्ष की वसीयत तुम्हारे नाम छोड़कर जा रहा हूँ। अपने को बलिवेदी पर उत्सर्ग करने का व्रत लो। उन करोड़ो अभागे पुरुष-स्त्रियों के लिए जो कि दिन-प्रतिदिन नीचे की ओर खिसकते जा रहे हैं।' उन्होंने कहा- 'कूद पड़ो इस आग में क्योंकि गरीबी, भूखमरी और अत्याचार मिटाने का कार्य तुम्हें ही करना है। यही दरिद्र नारायण तुम्हारे परमेश्वर है। मैं तो सच्चा महात्मा उसे ही कहूँगा जिसका हृदय गरीबों के लिए बिलखता है। जब तक कि इस देश में लाखों मनुष्य भूख और अज्ञान की अवस्था में ही जीवन जी रहे हैं, मैं ऐसे प्रत्येक मनुष्य को दोषी मानता हूँ जो उनके ही धन के बल पर खूब पढ़-लिखकर और धन सम्पत्ति से समृद्ध बन कर उनके प्रति तनिक भी ध्यान न देता हो।'

अमेरिका सहित अनेक देशों के समाचार पत्रों में स्वामी विवेकानंद की भूरि-भूरि प्रशंसा प्रकाशित हुई और भारत का यह युवा संन्यासी एक दिन में ही विश्व की महान् विभूति बन गया।

स्वामी जी की यह विशेषता थी कि जहाँ भी वह सभा में बोलना प्रारंभ करते, सन्नाटा छा जाता था। उनकी मृदुवाणी से प्रभावित सभी तरुण आत्मविभोर हो उठते थे। स्वामी विवेकानंद देश-विदेश के नौनिहालों को वह समन्वय का मार्ग दिखाते रहे, अनेकता से एकता की ओर चलने की प्रेरणा देते रहे।

स्वामी विवेकानंद सन् 1892 ई. में अंतःदीप कन्याकुमारी पहुँचे और समुद्र में स्थित चट्टान पर जाकर मनन करने की इच्छा हुई। स्वामी जी इस चट्टान तक समुद्र में तैरकर ही पहुँच गए यही चट्टान 'विवेकानंद मैमोरियल रॉक' के नाम से सुप्रसिद्ध है।

स्वामी विवेकानंद सन् 1897 ई. में विदेश भ्रमण समाप्त कर भारत वापस आ गए। स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण परमहंस के संदेशों की विश्वभर में प्रसारित करने का निश्चय किया। मार्च 1897 में स्वामी विवेकानंद ने अपने शुभचिन्तकों को बुलाकर रामकृष्ण के नाम पर संगठन स्थापित करने का विचार किया।

1 मई, 1897 ई. को स्वामी विवेकानंद ने 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना की। स्वामी विवेकानंद ने भारत की सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक क्रान्ति के लिए युवकों का आह्वान किया।

इस प्रकार युवकों में नई स्फूर्ति और संचेतना का संचार करने वाला, स्वाधीनता संग्राम का अग्रदूत, क्रान्तिकारी विचारक, अप्रतिभवक्ता, राष्ट्रप्रेमी और योगी, युगप्रवर्त्तक तथा महान युवा दार्शनिक 4 जुलाई 1902 ई. को परमशक्ति में विलीन हो गया।

उनके संदेश सदा उनकी अमरता का उद्घोष करते हुए आज भी युवाओं का मानव जाति के विकास हेतु आह्वान कर रहे हैं।

विश्वकवि रवीन्द्र नाथ टैगोर ने उनके प्रति अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि 'यदि तुम भारत संबंधी ज्ञान अर्जित करना चाहते हो तो विवेकानंद को पढ़ो, उनमें सब कुछ सकारात्मक है, नकारात्मक कुछ भी नहीं।' विवेकानंद की शिक्षाएँ मनुष्य के पूर्णत्व को जाग्रत करने में सक्षम थी। यही कारण है कि हमारे युवक उनको अनेकानेक रूपों में ग्रहण कर त्याग तथा पौरुष के द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु जाग्रत हुए। विलियम जेम्स के विचार-'मैं अभी-अभी विवेकानंद द्वारा इंग्लैंड में दिए गए भाषणों को पढ़ रहा था, जिन्हें मैंने पहले नहीं पढ़ा था। यह व्यक्ति आश्चर्यजनक रूप से अद्भुत तथा शक्तिशाली वक्ता है। स्वामी जी हर प्रकार से मानवता के लिए एक गौरव है।

महात्मा गाँधी के अनुसार 'मैंने गहराई से उनकी समस्त पुस्तकों का अध्ययन किया है और ऐसा करने के बाद मेरे देश प्रेम में हजार गुना वृद्धि हुई।

सी. राजगोपालाचारी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि-'स्वामी विवेकानंद ने हिन्दू धर्म और भारत की रक्षा की। उनके योगदान के बिना हम अपने धर्म से विमुख हो चुके होते और स्वंतत्रता प्राप्त करने में असमर्थ बने रहते। इसीलिए आज हमारे पास जो कुछ भी है वह स्वामीजी के ही कारण है।'

बालगंगाधर तिलक के अनुसार 'स्वामी विवेकानंद ने पाश्चात्य भौतिकतावादी विज्ञान के विरुद्ध हिन्दुत्व की पताका सर्वत्र फहराई। स्वामी जी ने हिन्दू धर्म के पुनरुत्थान की महती जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठा उसकी कीर्ति सुदूर देशों तक फैलाई।'

सेवानिवृत्त अध्यापक
1/131, हाउसिंग बॉर्ड कॉलोनी, हनुमानगढ़
मो. 9414474636

सुभाष की सच्ची लगन

❐ सांवलाराम नामा

यह प्रसंग नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के विद्यार्थी जीवन का बड़ा ही रोचक व प्रेरणाप्रद है। जब वे कटक के प्रोटेस्टैण्ड यूरोपियन स्कूल में पढ़ा करते थे। वे बचपन से ही पढ़ने-लिखने में बहुत ही तेज थे। कक्षा में उनके सभी विषयों में अच्छे नम्बर आते थे लेकिन बंगाली में अन्य विषयों की अपेक्षा कम अंक आते थे। एक दिन अध्यापक ने सभी छात्रों को बंगाली में निबंध लिखने को कहा। सभी छात्रों ने बंगाली में अच्छे से निबंध लिखे, मगर सुभाष के निबंध में बाकी छात्रों की तुलना में अधिक कमियाँ निकली। अध्यापक ने जब इन कमियों का उल्लेख कक्षा में किया तो कक्षा के अन्य छात्र मजाक उड़ाने लगे।

कक्षा का एक छात्र सुभाष से यूं बोला- 'वैसे तो तुम बड़े देशभक्त बने फिरते हो मगर अपनी ही भाषा पर तुम्हारी पकड़ कितनी कमजोर है?' यह बात सुभाष के मन-मस्तिष्क को अन्दर तक चुभ गई। उन्होंने उसी समय मन ही मन में निश्चय कर लिया कि वह अपनी भाषा को सही करके ही दम लेंगे। चूँकि उन्होंने संकल्प कर लिया था इसलिए उन्होंने अगले दिन से ही बंगाली भाषा का व्याकरण पढ़ना आरम्भ कर दिया। अब उनका एक ही प्रण था कि इसमें केवल पास ही नहीं होंगे बल्कि कक्षा में सभी छात्रों से अधिक अंक लाकर भी दिखाएँगे। कक्षा में विद्यार्थियों ने परिहास करते हुए सुभाष से कहा-'भले ही तुम कक्षा में प्रथम आते हो मगर जब तक बंगाली में तुम्हारे अंक हम सभी से अच्छे नहीं आते, तब तक तुम सर्वप्रथम नहीं कहलाओगे।'

जब वार्षिक परीक्षा का परिणाम घोषत हुआ तो सुभाष कक्षा में ही नहीं विद्यालय में भी प्रथम आए थे। इतना ही नहीं बंगाली भाषा में उन्होंने सबसे अधिक अंक प्राप्त किए थे। यह देखकर कक्षा के सभी सहपाठी और शिक्षकगण भी दंग रह गए। उन्होंने सुभाष से पूछा-'इतने कम समय में यह कैसे संभव हुआ?' तब सुभाष ने कहा-'यदि मन में लगन, उत्साह, मेहनत और एकाग्रता हो तो व्यक्ति के लिए संसार में कुछ भी कार्य असंभव नहीं है- आवश्यकता केवल दृढ़ संकल्प की होती है।'

से.नि. व्याख्याता, सदर बाजार रोड,
निकट बड़ा चौराहा, भीनमाल,
जालोर (राज.) 343029

हिमाद्री तुंग शृंग
प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला
स्वतंत्रता पुकारती
अमर्त्य वीर पुत्र हो
दृढ़ प्रतिज्ञा सोच लो
प्रशस्त पुण्य पथ है,
बढ़े चलो बढ़े चलो।

भारतवर्ष के महान कवि मैथिलीशरण गुप्त की इन पंक्तियों को देश के कई वीर महापुरुषों ने आत्मसात किया, लेकिन उनमें से एक व्यक्तित्व ऐसा था, जिसने न केवल स्वयं इसे अपनाया अपितु दूसरों को भी इसे अपनाने के लिए प्रेरित किया। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस देश के ऐसे ही वीर योद्धा थे जिनके जीवन में चाहे कितनी भी मुश्किलें, परेशानियाँ, तकलीफें आई लेकिन देश को स्वतंत्र कराने के मार्ग पर आगे बढ़ते गए।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में अपने सर्वांगीण वैशिष्ट्य के कारण नेताजी सुभाष चन्द्र बोस अलग नजर आते हैं। शारीरिक और मानसिक रचना, आचरण और जीवनशैली, विचार और व्यवहार की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण व्यक्तित्व और उपलब्धियों की दृष्टि से भी वे बीसवीं शताब्दी के भारत के एक चमत्कारी व्यक्ति थे। जिस समय वे जन्मे थे, बंगाल का नवजागरण अपनी पराकाष्ठा पर था। नई राष्ट्रीय चेतना ने, जो तब तक दृष्टिगोचर होने लगी थी, उनके प्रारम्भिक विकास पर पूरा-पूरा प्रभाव डाला था। वे भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के साथ-साथ अच्छी तरह हिल-मिल कर बड़े हुए थे और उनकी मनुहार पर उनकी प्रतिक्रिया और प्रत्युत्तर सकारात्मक थे। वे मानवतावादी, विवेकानन्दी साँचे में ढले सामाजिक क्रांतिचेता और सबसे बढ़कर अतिर्नियम अनुभव प्रक्रिया से गुजरे-तपे राजनीतिक योद्धा बनकर उभरे।

23 जनवरी 1897 को जानकीनाथ बोस के घर कटक (उड़ीसा) में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का जन्म हुआ। आप एक समृद्ध परिवार से संबंध रखते थे। उनके पिता जानकीनाथ पेशे से वकील थे एवं उनकी माता प्रभा देवी धर्मपरायण गृहिणी थी। बचपन से नेताजी विलक्षण प्रतिभा के धनी रहे थे, इसी का नतीजा था कि 1920 में मात्र 23 वर्ष की आयु में उन्होंने आई.सी.एस.

देश प्रेम दिवस

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

❒ ब्रिजेश कुमार वैष्णव

की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी।

जब नेताजी आई.सी.एस. की परीक्षा चौथी रैंक पास हुए तब उनके पिता तथा भाई इस सफलता पर बहुत प्रसन्न थे, किन्तु सुभाष के हृदय में राष्ट्रभक्ति का ज्वार लहरें ले रहा था। उन्होंने इंग्लैण्ड से अपने बड़े भाई शरतचन्द्र को पत्र में लिखा- 'सिविल सर्विल से व्यक्ति को सभी प्रकार के सुख तो प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन क्या सुख एवं वैभव के लिए अपनी आत्मा को कुचलना, देश के प्रति दायित्व को छोड़ देना, उचित कहा जा सकता है?' तेईस वर्षीय सुभाष ने लिखा, 'मुझे विश्वास है कि दस साल के अन्दर हमें स्वराज्य मिल जाएगा और निश्चय ही इससे पहले, यदि हम इसकी कीमत चुकाने के लिए तैयार हों। बलिदानों और कष्टों के रूप में यह कीमत चुकानी होगी। बलिदानों और कष्टों की भूमि पर ही हम राष्ट्रीय भवन खड़ा कर सकते हैं। यदि हम अपनी नौकरियों से चिपके रहे और अपने स्वार्थों में ही लिप्त रहे तो मैं नहीं समझता कि हमें 50 साल में स्वराज्य मिल पाएगा।'

कॉलेज में रहते हुए भी वे देश के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेते रहते थे जिसके कारण उन्हें कॉलेज से निकाल दिया गया। इसके बावजूद भी उन्होंने राष्ट्रवाद की भावना को नहीं छोड़ा। विषम परिस्थितियों में अपने अध्ययन कार्य जारी रखते हुए दर्शनशास्त्र में प्रथम श्रेणी में बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की तत्पश्चात आगे की पढ़ाई के लिए आप लंदन चले गए जहाँ आई.सी.एस. की परीक्षा की तैयारी के साथ-साथ कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से दर्शन में एम.ए. की परीक्षा पास की।

देश के लिए कुछ करने एवं राष्ट्रवादी भावना होने के कारण उन्हें ब्रिटिश राज्य के अधीन काम करना मंजूर नहीं था। शिव कुमार गोयल अपनी किताब में लिखते हैं कि जब 1921 में सुभाष लंदन से लौटे उन दिनों गाँधीजी द्वारा असहयोग आंदोलन का बिगुल बजाया हुआ था। सुभाष ने बम्बई जाकर गाँधीजी से भेंट की तथा असहयोग आन्दोलन के बारे में उनसे विचार-विनिमय किया। कुछ मुद्दों पर वे गाँधीजी से सहमत न हो सके। केवल अहिंसात्मक आंदोलन से अंग्रेज भारत छोड़ जाएँगे-इस मत से सुभाष सहमत नहीं थे उनका मानना था कि क्रांति तथा संघर्ष के माध्यम से ही अंग्रेजों को भारत से खदेड़ा जा सकता है।

इसी के चलते सन् 1921 में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य बने। अपने शुरूआती जीवनकाल में नेताजी देशबन्धु चितरंजन दास के सहयोगी रहे। देशप्रेम की भावना, अपनी नीतियों एवं कार्यशैली के कारण जल्द ही वह अपने साथियों के चहेते बन गए। अपने सार्वजनिक जीवन में सुभाष को कुल 11 बार कारावास की सजा दी गई थी। सबसे पहले उन्हें 16 जुलाई 1921 को छह महीने का कारावास दिया गया था। अंग्रेज सरकार ने एक अंग्रेज की हत्या के झूठे आरोप में इन्हें मांडले जेल में डाल दिया। वे 1929 और 1937 में कलकत्ता कॉर्पोरेशन काँग्रेस के मेयर बने।

सबसे पहले गाँधीजी को राष्ट्रपिता कह कर नेताजी ने ही संबोधित किया था, गाँधीजी ने उन्हें नेताजी। 1938 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष निर्वाचित होने के बाद उन्होंने राष्ट्रीय योजना आयोग का गठन किया। द्वितीय विश्व युद्ध के समय नेताजी ने इंग्लैण्ड के विरोधी राष्ट्रों के साथ दोस्ती की पहल की। दुश्मन का

दुश्मन दोस्त होता है। उनका मानना था कि स्वतंत्रता हासिल करने के लिए राजनीतिक गतिविधियों के साथ-साथ कूटनीतिक और सैन्य सहयोग की जरूरत पड़ती है। ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ाई में नेताजी को हिटलर और मुसोलिनी में भविष्य का मित्र दिखाई पड़ रहा था।

उनकी इन गतिविधियों के चलते ब्रिटिश सरकार ने उन्हें कलकत्ता में नजरबंद कर दिया लेकिन बोस अपने सहयोगियों की सहायता से भेष बदल कर वहाँ से निकल पड़े। अपनी विदेशी नीतियों और भेष बदलने की विद्या में पांरगत होने के कारण उन्हें अन्य राष्ट्रों में जाने में समस्या नहीं आई तथा वे अफगानिस्तान और सोवियत संघ होते हुए जर्मनी जा पहुँचे।

जर्मनी में रहते हुए सुभाष हिटलर से मिले, ब्रिटिश हुकुमत के खिलाफ और देश की आजादी के लिए उन्होंने जर्मनी में रहते हुए अपनी गतिविधियों को गुप्त रूप से जारी रखा। वहीं उन्होंने अपनी सेक्रेट्री और ऑस्ट्रियन मूल की युवती एमिली शैफेल से विवाह किया। विकट परिस्थितियों में उन्हें जर्मनी छोड़ना पड़ा, वहाँ से बोस जापान होते हुए सिंगापुर गए।

सिंगापुर ने उन्होंने कैप्टिन मोहनसिंह द्वारा स्थापित आजाद हिन्द फौज की कमान अपने हाथों में ले ली। उस वक्त रासबिहारी बोस आजाद हिन्द फौज के नेता थे। आपने आजाद हिन्द फौज का पुनर्गठन किया। महिलाओं के लिए रानी झाँसी रेजीमेन्ट का गठन हुआ जिसकी कैप्टिन लक्ष्मी सहगल बनी। महिलाओं को सर्वप्रथम सेना में आने की प्रेरणा देने का श्रेय सुभाष चन्द्र बोस को ही जाता है।

नेताजी ने 5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हॉल के सामने 'सुप्रीम कमाण्डर' के रूप में सेना को संबोधित करते हुए 'दिल्ली चलो!' का नारा दिया और जापानी सेना के साथ मिलकर ब्रिटिश व कॉमनवेल्थ सेना से बर्मा सहित इम्फाल और कोहिमा में एक साथ जमकर मोर्चा लिया।

21 अक्टूबर 1943 को सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार 'आजाद हिन्द सरकार' बनाई जिसका प्रतीक चिह्न एक झंडे पर दहाड़ता हुआ बाघ था। जिसे जर्मनी, जापान, फिलीपींस, कोरिया, चीन, इटली, मान्चुको और आयरलैण्ड ने मान्यता दी। जापान ने अंडमान व निकोबार द्वीप इस अस्थायी सरकार को दे दिए। सुभाष उन द्वीपों में गए और उनका नया नामकरण किया।

भारतवर्ष की आजादी के लिए 4 जुलाई 1944 को उन्होंने बर्मा में हजारों देशवासियों को संबोधित करते हुए अपना प्रसिद्ध नारा-'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।' दिया। उनके इस कथन से हजारों युवाओं में एक अदृश्य जोश का संचार हुआ। अब हर कोई व्यक्ति देश की आजादी के लिए अपना बलिदान देने का मन बना चुका था।

जहाँ एक ओर गाँधीजी का अहिंसात्मक आंदोलन चल रहा था, वहीं दूसरी ओर नेताजी की सैन्य गतिविधियों ने अंग्रेजों के होश उड़ा रखे थे। अंग्रेजों के भारत छोड़ने के पीछे न केवल गाँधीवादी विचारधारा थी अपितु आजादी में बोस जैसे नेताओं की कार्यशैली का बहुत बड़ा योगदान रहा। अगर नेताजी देश से बाहर जाकर सशस्त्र सेना का गठन नहीं करते, देश के युवाओं में बलिदान की भावना नहीं जगाते, ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध सैन्य युद्ध का आगाज नहीं करते तो शायद ही हमें स्वतंत्रता मिल पाती। बाहरी ताकतों को खदेड़ने के लिए सशस्त्र क्रांति लाना आवश्यक था, जिसका सम्पूर्ण भार नेताजी ने अपने कंधों पर ले रखा था।

नवम्बर 1945 में दिल्ली के लाल किले में आजाद हिन्द फौज पर चलाए गए मुकदमें ने नेताजी के यश में वृद्धि की और वे लोकप्रियता के शिखर पर जा पहुँचे। अंग्रेजों के द्वारा किए गए दुष्प्रचार तथा तत्कालीन प्रमुख राजनीतिक दलों द्वारा सुभाष के विरोध के बावजूद सारे देश को झकझोर देने वाले उस मुकदमें के बाद माताएँ अपने बेटों को 'सुभाष' का नाम देने में गर्व का अनुभव करने लगी। घर-घर में राणा प्रताप के साथ नेताजी का चित्र भी दिखाई देने लगा।

आजाद हिन्द फौज के माध्यम से भारत को अंग्रेजों के चंगुल से आजाद करवाने का नेताजी का प्रयास नींव का पत्थर साबित हुआ। सन् 1945 मे हुआ नौसेना विद्रोह इसी का परिणाम था। सैन्य विद्रोह के चलते अब अंग्रेजी शासन की जड़े देश से उखड़ने लगी थी। भारत को स्वतंत्र करवाने के अलावा उनके पास दूसरा कोई विकल्प बचा नहीं था। जब तक यह वीर पुरुष जीवित था, अंग्रेजों के सामने दहाड़ते हुए शेर की तरह डटा रहा।

जहाँ स्वतंत्रता से पूर्व विदेशी शासक नेताजी के सामर्थ्य से घबराते रहे, तो स्वतंत्रता के बाद देशवासियों पर उनके व्यक्तित्व एवं कर्त्तव्यनिष्ठा का अमिट प्रभाव पड़ा। स्वातन्त्र्यवीर सावरकर ने स्वतंत्रता के उपरान्त देश के क्रांतिकारियों के एक सम्मेलन का आयोजन किया था और उसमे अध्यक्ष के आसन पर नेताजी के तैलचित्र को आसीन किया था।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के समान कोई दूसरा व्यक्तित्व नहीं हुआ, एक महान् सेनापति, वीर सैनिक, राजनीति के अद्भुत खिलाड़ी और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नेताओं के समकक्ष बैठकर राजनीति तथा चर्चा करने वाले इस विलक्षण व्यक्तित्व के बारे में जितना कहा जाए उतना कम है। सुभाषचन्द्र बोस का नाम स्वतन्त्रता सेनानियों में बड़े सम्मान के साथ लिया जाता रहेगा। उनके द्वारा दिया गया 'जय हिन्द' का नारा आज हमारा राष्ट्रीय नारा है। जो लाल किले की प्राचीर से पूरे देश में गूंजता है। ध्वजारोहण कार्यक्रम का समापन जयहिन्द के उद्घोष से होता है।

अभी हाल ही में 21 अक्टूबर 2018 को सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व वाली आजाद हिन्द सरकार का 75 वाँ स्थापना दिवस मनाया गया। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जवानों के लिए सुभाष चन्द्र बोस के नाम पर अवार्ड का ऐलान किया। जिसे 23 जनवरी को बोस के जन्मदिन के मौके पर दिया जाएगा। भारत के प्रत्येक नागरिक को बोस के आदर्शों को अपनाना चाहिए तभी इस वीर योद्धा को सच्ची श्रद्धांजलि मिल पाएगी।

भारतवर्ष के विद्यार्थियों, किशोरों, नौजवानों को नेताजी के आदर्शों, उनके राष्ट्र प्रेम को अपनाना चाहिए तथा महापुरुषों को अपने हृदय में जगह देकर, इनके बतलाए मार्गों का अनुसरण करना चाहिए। क्योंकि हमारा राष्ट्र मानव जाति के उच्चतम आदर्शों सत्यम् शिवम् सुन्दरम् से प्रेरित है।

व्याख्याता
E-87/2, कान्ता खतूरिया कॉलोनी,
बीकानेर (राज.) 334001

जयन्ती

साहस व त्याग के धनी नेताजी

❒ रामगोपाल राही

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान घर में नजर बंद नेताजी सुभाष चन्द्र बोस भेष बदल निकले और कलकत्ता से जर्मनी पहुँचे। जर्मनी में सुभाष चन्द्र बोस ने वहाँ के शासक हिटलर से मुलाकात की। दुनिया का सर्वशक्तिशाली शासक हिटलर सुभाष के इंग्लैण्ड से भारत को मुक्त कराने के मंसूबों, इरादों-संकल्पों को सुन बहुत प्रभावित हुआ तथा उनसे नेताजी को बिना शर्त, आर्थिक सहयोग करने की घोषणा कर दी। जर्मनी के आर्थिक सहयोग से सुभाष चन्द्र बोस ने बर्लिन में फ्री इंण्डिया सेंटर अर्थात 'आजाद भारत केन्द्र' संगठन बनाया और आजाद हिंद रेडियो की स्थापना की। फ्री इंण्डिया सेन्टर, अर्थात् आजाद भारत केन्द्र की पहली बैठक दो नवम्बर 1941 को सुभाष चन्द्र बोस की अध्यक्षता में हुई, जिसमें लिए चार निर्णयों में से दो आज भी देश भक्त सुभाष चन्द्र बोस की याद ताजा करते हैं। उन दो निर्णय में प्रथम आजाद भारत में अभिवादन के लिए-'जयहिंद' का प्रयोग तथा सुभाष चन्द्र बोस को 'नेताजी' कहकर सम्बोधित करना। तभी से अभिवादन शब्द 'जयहिंद' तथा सुभाष चन्द्र बोस को 'नेताजी' कहा जाने लगा। आज भी 'जयहिंद' व 'नेताजी' उनकी याद ताजा करते हैं।

नेताजी को पहनाई गई मालाएँ और उनकी नीलामी- 5 जुलाई, 1943, सिंगापुर के फरेर पार्क में विशाल जन सभा में भारतीय स्वतंत्रता परिषद् (आइआइएल.-विदेश में भारत आजाद कराने का संगठन) चला रहे स्वतंत्रता सेनानी रास बिहारी बोस ने संगठन का नेतृत्व नेताजी को सौंपा। यहीं इसी समय आजाद हिन्द फौज की कमान भी विधिवत नेताजी के हाथ में आई। इस पर इस विशाल जन सभा में नेताजी को पहनाई मालाओं से लगभग एक ट्रक भर गया। बताया जाता है इन मालाओं की नीलामी से पच्चीस करोड़ की राशि एकत्रित हुई थी। विश्व के इतिहास में किसी नेता को पहनाई गई मालाओं की नीलामी से मिली यह सर्वोच्च राशि थी। समझा जा सकता है आज के मूल्यों में

अनुमानतः यह राशि पच्चीस, तीस गुना तो हो ही हो।

मालाओं की नीलामी में पहली माला एक करोड़ तीस लाख में बिकी थी। इसे मलाया के उद्योग पति हबीबुर्रहमान ने लिया था। इसी सभा में एक अन्य माला की नीलामी में बनारस वासी शेखर नाम के युवक ने अपनी सारी जमा पूँजी सात लाख लगाई, पर बोली और भी बढ़ गई। इस पर युवक ने नेताजी के चरण छू लिए व बोला में माला नहीं खरीद पाऊँगा, आप मेरे यह सात लाख लेकर मुझे आजादी की लड़ाई में हिस्सेदार बना लीजिए। युवक की बात सुन नेताजी ने उसे गले लगाया और माला पहना दी। इस अवसर पर एक वृद्धा अपने जवान बेटे को लेकर आयी और नेताजी से कहा-'मेरा सब कुछ यही है, यह आजादी की लड़ाई में काम आए यह मेरा सौभाग्य होगा।' वृद्धा की बात सुन नेताजी की आँखें भर आयी, उन्होंने बूढी माँ (वृद्धा) के पैर छू इसे सबसे ऊँची बोली घोषित किया। बताया जाता है सभा में कई महिलाओं ने अपने मंगल सूत्र देकर मालाएँ खरीदी थी।

देश भक्ति में नेताजी के संकल्प व साहस की अदम्य गाथा-दूसरे विश्व युद्ध में नाज़ी (जर्मन) सेना को पीछे हटना पड़ा था, इससे युद्ध का पासा पलट गया। युद्ध में जब तक धुरी राष्ट्र मित्र राष्ट्रों पर भारी पड़ रहे थे, अब उल्टा हो गया। मित्र राष्ट्र धुरी राष्ट्रों पर भारी पड़ने लगे थे। नेताजी को जर्मनी द्वारा मिल रहे सहयोग की अब उम्मीद नहीं रही। जर्मनी में नेताजी अँग्रेजों से भारत मुक्त कराने के प्रयासों में सक्रिय थे। इंग्लैण्ड युद्ध में उलझा था। इसके चलते नेताजी अपनी-'अभी नहीं तो कभी नहीं' की नीति पर कायम थे। इस पर बदली हुई परिस्थितियों में नेताजी ने जापान सरकार से सम्पर्क किया। जापान से सकारात्मक संदेश पा जापान के लिए रवाना हुए। देशभक्त नेताजी की जर्मनी से जापान की यह यात्रा विश्व का बहुत बड़ा चमत्कार समझी गयी थी। यह यात्रा नेताजी के देश भक्ति के संकल्प अँग्रेजों से भारत मुक्ति की अदम्य गाथा है। आज भी लोग यह गाथा जान दाँतों तले अंगुली दबाते हैं उस समय भी दुनिया के लोग चकित रह गए थे। उस दौरान अँग्रेजों ने नेताजी की दुनिया भर से चौकसी कर रखी थी। इसलिए नेताजी समुद्री मार्ग से जापान के लिए जर्मनी से 9 फरवरी 1943 को जर्मन पनडुब्बी यू 180 से गुप्त रूप से रवाना हुए। इस पनडुब्बी ने शत्रु राष्ट्र ब्रिटेन के समुद्र में अंदर ही अंदर गहराइयों में चक्कर लगाकर अटलांटिक महासागर में प्रवेश किया। उधर जापानी पनडुब्बी आइ.-29 मलेशिया के निकट पेनांग द्वीप से 20 अप्रैल 1943 को नेताजी के लेने के लिए रवाना हुई। 26 अप्रैल को पेडागास्कर के समुद्र में अत्यधिक गहराई में दोनो पनडुबियाँ पहुँची। संकेतों के आदान-प्रदान से सुरक्षा निश्चित कर नेताजी रबर की नौका में सवार हो बड़ी तेजी से जापानी पनडुब्बी में जा बैठे। नेताजी की यह जर्मनी से जापान की यात्रा में कहा जाता है 90 दिन यानी तीन माह लगे थे। द्वितीय विश्व युद्ध के समय एक पनडुब्बी से दूसरी पनडुब्बी में यात्रा स्थानान्तरण की यह विश्व की एक मात्र घटना है।

उल्लेखनीय है कि देश को अँग्रेजों से मुक्त कराने में अदम्य साहस व त्याग के धनी नेताजी सुभाष के देश भक्ति के प्रसंग आज भी प्रासंगिक है। देश भक्ति की प्रेरणा कोई ले तो नेताजी के जीवन से ले।

व्याख्याता (से.नि.)
लाखेरी-323615, जिला-बूँदी (राज.)
मो. 9166021065

राष्ट्रीय स्कूल मानक एवं मूल्यांकन कार्यक्रम

शाला सिद्धि

❒ सिद्धार्थ कुमार गौरव

प्रस्तावना: बच्चों को सहज एवं सुलभ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित करने के उद्देश्य से हमारे देश में आजादी के बाद भारतीय विद्यालयी शिक्षा प्रणाली में प्रभावी विद्यालयों एवं विद्यालय संचालन की गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी, ताकि देश के भावी नागरिकों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करवाई जा सके। जिसके क्रियान्वयन हेतु समय-समय पर विभिन्न शिक्षा आयोगों, राष्ट्रीय शिक्षा कार्यक्रमों, पाठ्य-परिचर्या मंडलों तथा शिक्षा का अधिकार अधिनियम आदि का प्रावधान कर शिक्षा में गुणात्मक एवं मात्रात्मक सुधार लाने का सतत प्रयास किया गया। इन विभिन्न आयोगों की सिफारिशों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न शिक्षा कार्यक्रम क्रियान्वित किए गए। इसी दिशा में राष्ट्रीय शिक्षा आयोग 1964-66 की सिफारिश ''विद्यालयी सुधार हेतु एक राष्ट्र-व्यापी कार्यक्रम प्रारंभ किया जाए जिसके अन्तर्गत प्रत्येक विद्यालय के लिए ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न की जाए कि वह अपनी क्षमताओं के अनुरूप अच्छे परिणामों की प्राप्ति हेतु निरन्तर प्रयासरत रहे।'' इस सिफारिश को ध्यान में रखते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के अन्तर्गत 'राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासनिक विश्वविद्यालय' द्वारा राष्ट्रीय स्कूल मानक एवं मूल्यांकन कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है जिसे सामान्यत: शाला सिद्धि के नाम से जाना जाता हैं।

राष्ट्रीय स्कूल मानक एवं मूल्यांकन का परिचय : यह एक ऐसा राष्ट्रीय स्तर का कार्यक्रम हैं जिसका उद्देश्य प्रत्येक विद्यालय का एक संस्था के रूप में मूल्यांकन कर उसके विकास की जवाबदेही के साथ विद्यालय हितधारकों में स्व-उन्नति की भावना विकसित करना है। इस कार्यक्रम की संकल्पना एक ऐसे सकारात्मक प्रयास के रूप में की गई है जिसके द्वारा विद्यालयों को स्वयं अपने सुधार एवं विकास के लिए निरन्तर प्रयासरत बनाना हैं। यह कार्यक्रम विद्यालय मूल्यांकन को साधन एवं विद्यालय सुधार को एक साध्य के रूप में देखता है जो कि राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हुए शिक्षा शोधों पर आधारित हैं। इस कार्यक्रम के द्वारा देश के प्रत्येक विद्यालय को मूल्यांकन की सतत् एवं संस्थागत व्यवस्था में लाकर विद्यालय के हितधारकों (संस्थाप्रधान, शिक्षक, शिक्षार्थी एवं अभिभावक) में विद्यालय विकास की योजना बनाकर शिक्षा की गुणवत्ता में विभिन्न विद्यालय आयामों के माध्यम से सुधार की सामान्य सोच-समझ विकसित करने का प्रयास करता है।

राष्ट्रीय स्कूल मानक एवं मूल्यांकन की विशेषता: इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ है :-

1. यह विद्यालय के मुख्य आयामों को चिह्नित कर प्रत्येक आयाम का मूल्यांकन एवं सुधार के लिए मूल मानकों का निर्धारण करता हैं।
2. शाला सिद्धि विद्यालय के स्व-मूल्यांकन एवं बाह्य मूल्यांकन दोनों के लिए प्रमुख साधन हैं।
3. यह कार्यक्रम विद्यालय मूल्यांकन को साधन एवं विद्यालय सुधार को एक साध्य के रूप में देखता है।
4. यह विद्यालय की मूल्यांकन प्रक्रिया को पारदर्शी बनती हैं।
5. यह विभिन्न प्रकार के विद्यालयों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए राज्यों को आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु इसमें बदलाव की छूट देता हैं।

राष्ट्रीय स्कूल मानक एवं मूल्यांकन के उद्देश्य: इस कार्यक्रम में निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया हैं-

1. देश के विद्यालयों की विविधता के अनुरूप उपयुक्त अवधारणा, प्रविधि, मूल्यांकन उपकरण एवं प्रक्रिया विकसित करना।
2. प्रत्येक राज्य में संस्थागत मशीनरी की स्थापना के लिए मानव संसाधनों का विकास करना ताकि स्थानीय जरूरतों के अनुसार विद्यालय मूल्यांकन की रूपरेखा बनाई जा सके।
3. विद्यालयों एवं शिक्षा विभाग के कर्मचारियों की क्षमताओं में वृद्धि करना ताकि वे विद्यालयों का मूल्यांकन कर उसके विकास के लिए निरन्तर प्रयासरत रहे।
4. विद्यालय की प्रासंगिक स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप विद्यालयी व्यवस्थाओं में परिवर्तन कर विद्यालय विकास हेतु परिवेश तैयार करना।
5. विद्यालय नेतृत्व, शिक्षकों के कार्यों, विद्यालय प्रबन्धन तथा विद्यार्थियों के मूल्यांकन का विश्लेषण कर उपयुक्त नीतिगत परिवर्तन के माध्यम से विद्यालय विकास की योजना बनाना।

राष्ट्रीय स्कूल मानक एवं मूल्यांकन के प्रमुख आयाम: शाला सिद्धि में विद्यालय के कार्यों एवं आवश्यकताओं के मूल्यांकन के लिए इस कार्यक्रम में सात प्रमुख आयामों का निर्धारण किया गया हैं, जिसमें 46 विभिन्न मानकों का समूह हैं जो कि उस आयाम के कार्यक्षेत्र के बारे में बताते हैं तथा ये सब मानक मिलकर स्कूल के कार्य-स्तर एवं मानक का गुणात्मक आंकलन करने में सहायक होते हैं। इस प्रत्येक आयाम के मूल मानकों की उपलब्धता, पर्याप्तता, गुणवत्ता एवं उपयोगिता का तीन स्तर पर मूल्यांकन किया जाता हैं जिसमें प्रथम स्तर उस मानक के उपलब्ध नहीं होने, द्वितीय स्तर मानक उपलब्ध तो हैं लेकिन उपयोगी नहीं होने तथा तृतीय स्तर मानक पूर्णरूप से उपयोगी होने का द्योतक हैं। इसके प्रमुख आयाम निम्नलिखित हैं-

1. **स्कूल संसाधन: उपलब्धता, पर्याप्तता एवं उपयोगिता:** इस आयाम में विद्यालय में उपलब्ध भौतिक एवं शिक्षण अधिगम संसाधनों की उपलब्धता, गुणवत्ता, पर्याप्तता एवं उपयोगिता से सम्बन्धित निम्नाकित कुल 12 मूल मानक हैं-

1.1 विद्यालय परिसर
1.2 खेल का मैदान, खेल सामग्री एवं उपकरण
1.3 कक्षा-कक्ष और अन्य कक्ष
1.4 विद्युत और उपकरण
1.5 पुस्तकालय
1.6 प्रयोगशाला
1.7 कम्प्यूटर
1.8 रैम्प
1.9 मध्याह्न भोजन, रसोई एवं बर्तन
1.10 पेयजल
1.11 हाथ धोनें की सुविधा
1.12 शौचालय

2. **शिक्षक–अधिगम एवं आंकलन:** इस आयाम में बच्चों के बारें में शिक्षक की समझ, विषय का ज्ञान, कक्षा–प्रबन्धन, वातावरण, T.L.M. सामग्री का उपयोग आदि से सम्बन्धित कुल 9 मूल मानक हैं।

2.1 विद्यार्थियों के बारें में शिक्षक की समझ
2.2 शिक्षक का विषय एवं शैक्षणिक ज्ञान
2.3 शिक्षण योजना
2.4 सीखने के वातावरण को सक्षम बनाना
2.5 शिक्षण अधिगम प्रक्रिया
2.6 कक्षा–कक्ष प्रबंधन
2.7 बच्चों का आकलन
2.8 शिक्षण– अधिगम साधनों का उपयोग
2.9 शिक्षक का शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पर स्व–चिन्तन

3. **बच्चों की प्रगति, उपलब्धि एवं विकास:** इस आयाम में बच्चों की अधिगम में भागीदारी, जुड़ाव, सीखने की गति तथा बच्चों का व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास से सम्बन्धित कुल 5 मूल मानक हैं –

3.1 बच्चों की उपस्थिति
3.2 बच्चों की सहभागिता एवं जुड़ाव
3.3 बच्चों की प्रगति
3.4 बच्चों का व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास
3.5 बच्चों की उपलब्धि

4. **शिक्षकों के कार्य निष्पादन का प्रबन्धन एवं व्यावसायिक विकास:** इस आयाम में शिक्षक के कार्यों, उनका क्रियान्वयन, उपस्थिति, नवनियुक्त शिक्षकों का आमुखीकरण, पाठ्यक्रम की तैयारी आदि से सम्बंधित कुल 6 मूल मानक हैं।

4.1 नव–नियुक्त शिक्षकों का उन्मुखीकरण
4.2 शिक्षक उपस्थिति
4.3 दायित्व का विभाजन एवं कार्य प्रदर्शन लक्ष्य
4.4 पाठ्यक्रम की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षकों की तैयारी
4.5 शिक्षकों के कार्य–प्रदर्शन की मॉनिटरिंग
4.6 शिक्षकों का व्यावसायिक विकास

5. **विद्यालय नेतृत्व और प्रबन्धन:** इस आयाम में विद्यालय के नेतृत्वकर्त्ता एवं उसके विद्यालय प्रबंधन से सम्बन्धित कुल 4 मूल मानक हैं –

5.1 सोच बनाना और दिशा निर्धारित करना
5.2 परिवर्तन एवं सुधार के लिए नेतृत्व
5.3 शिक्षण–अधिगम के लिए नेतृत्व
5.4 विद्यालय प्रबन्धन के लिए नेतृत्व

6. **समावेशन, स्वास्थ्य और सुरक्षा:** इस आयाम में SWSN विद्यार्थियों का समावेशन, विद्यार्थियों की स्वच्छता, स्वास्थ्य तथा भौतिक, प्राकृतिक एवं भावनात्मक सुरक्षा से सम्बन्धित 5 मूल मानक हैं।

6.1 समावेशी परिवेश
6.2 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का समावेशन
6.3 भौतिक या प्राकृतिक सुरक्षा
6.4 भावनात्मक सुरक्षा
6.5 स्वास्थ्य एवं स्वच्छता

7. **समुदाय की गुणात्मक सहभागिता:** इस आयाम में विद्यालय एवं उसके परिक्षेत्र में निवासरत समुदाय के मध्य सम्बन्धों एवं सहयोग से सम्बन्धित कुल 5 मूल मानक हैं –

7.1 SMC/SDMC का गठन एवं प्रबन्धन
7.2 विद्यालय सुधार में SMC/SDMC की भूमिका
7.3 विद्यालय–समुदाय का आपसी सम्बन्ध
7.4 अधिगम के साधनों के रूप में समुदाय
7.5 समुदाय का सशक्तिकरण

राष्ट्रीय स्कूल मानक एवं मूल्यांकन वेब पोर्टल : स्कूल मानक एवं मूल्यांकन कार्यक्रम के आंकड़ों को स्थाई बनाने के शाला सिद्धि नाम से एक वेब पोर्टल संचालित हैं। ये पोर्टल एक संवादात्मक मंच हैं जहाँ प्रत्येक विद्यालय अपनी स्व–मूल्यांकन रिपोर्ट ऑनलाइन जमा कर सकता है। इस वेब पोर्टल की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें जमा की गई रिपोर्ट अभिभावकों और आम जनता के लिए उपलब्ध रहती है, जहाँ से पढ़कर वे अपना फीडबैक दे सकते हैं। शाला सिद्धि वेब पोर्टल पर स्व–मूल्यांकन रिपोर्ट जमा करने का कार्य निम्नलिखित पांच चरणों में पूरा होता हैं।

1. **प्रथम चरण–रजिस्ट्रेशन:** इस चरण में इस पोर्टल का प्रथम बार उपयोगकर्त्ता को अपने स्कूल के यू–डाईस कोड एवं ई–मेल या मोबाईल नंबर के माध्यम से चाही गई सूचनाओं को दर्ज करते हुए रजिस्ट्रेशन करना होता हैं। इसके बाद अपने ई–मेल या मोबाईल नम्बर पर आए ओटीपी को दर्ज कर पासवर्ड दर्ज करे तथा भविष्य के उपयोग के लिए अपना पासवर्ड सहेज कर रखे।
2. **द्वितीय चरण–लॉग इन:** इस चरण में अपने विद्यालय के यू–डाईस कोड (जोकि आपका यूजरनेम हैं) एवं पासवर्ड दर्ज कर अपने स्कूल की यूजर–आईडी लॉग–इन कर सकते हैं।
3. **तृतीय चरण–डेशबोर्ड भरना:** इस चरण में विद्यालय में कक्षा, लिंग एवं श्रेणीवार छात्र संख्या, गत वर्ष की कक्षा एवं लिंगवार छात्र उपस्थिति, अध्यापकों की संख्या एवं उनकी गत वर्ष उपस्थिति को दर्ज करने के स्कूल मानक एवं मूल्यांकन सातों आयामों में प्रत्येक मानक में चाही गई सूचना भरनी होती हैं। इसमें प्रत्येक आयाम में सूचना भरने के बाद सबमिट पर क्लिक करना होता हैं जिससे सूचना सेव होती रहेगी।
4. **चतुर्थ चरण–लास्ट सबमिट एवं डाटा अनफ्रीज:** इस चरण में डाटा को सबमिट करने से पहले नियम एवं शर्तों पर स्वीकारोक्ति देनी होती हैं उसके बाद डाटा को अंतिम सबमिट करने के बाद डाटा को अनफ्रीज करना होता हैं लेकिन ये ध्यान रखना होता की डाटा को लास्ट सबमिट करने के बाद उसमें संशोधन नहीं होगा इसलिए अंतिम सबमिट करने से पहले डाटा को चेक अवश्य कर लेना चाहिए।
5. **पंचम चरण–रिपोर्ट प्राप्त करना:** इस चरण में रिपोर्ट आईकन पर क्लिक कर आपके द्वारा सबमिट की गई सूचनाओं की विभिन्न फॉर्मेट जैसे एक्सेल, पीडीएफ, वर्ड में रिपोर्ट डाउनलोड कर उसकी प्रिंट प्राप्त कर सकते हैं।

यह राष्ट्रीय स्तरीय स्व–मूल्यांकन कार्यक्रम राज्य, जिला एवं ब्लॉक स्तर के अधिकारियों, शिक्षाविदों, विद्यालय प्रमुखों, शिक्षक संघों, अध्यापकों एवं अभिभावकों आदि के सहयोग एवं सहभागिता से संचालित हैं। अत: यह स्पष्ट हैं कि यह कार्यक्रम विद्यालय के सभी हितधारकों सहमति एवं सहभगिता पर आधारित है कि अपने विद्यालय का विकास किस प्रकार किया जाए।

कार्यवाहक प्रधानाचार्य, रा.आ.उ.मा.वि. गुड़ावीड़ा,
ब्लॉक–सिवाना जिला–बाड़मेर(राज)
मो.7611004501

शैक्षिक उद्देश्य चिंतन

व्यवहारगत परिवर्तनों से अलगाव

❒ लोकेश कुमार पालीवाल

एक बड़े कॉलेज के सामने से गुजरते समय अकस्मात मेरी नजर वहाँ खड़े छात्र-छात्राओं के समूह पर पड़ी, जो टायर जलाकर प्रदर्शन कर रहे थे। पूछने पर विदित हुआ कि उन्होंने आज हड़ताल कर दी है। ''क्यों भाई, आप लोगों ने हड़ताल किस कारण से की है?'' मैंने एक छात्र से पूछा। ''पता नहीं, और लोगों ने हड़ताल की तो हम भी हड़ताल पर आ गए। ''उसका सहज उत्तर था। मेरे मन में प्रश्न उठा कि कम से कम स्नातक कक्षाओं में पढ़ रहे इन बच्चों के विवेक को क्या हो गया है? भारत की ये युवा पीढ़ी कब तक भीड़ तंत्र के रूप में व्यवहार करती रहेगी? सार्वजनिक सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाती रहेगी? हम लोग इस पीढ़ी को किस दिशा में ले जाना चाहते है? भीड़ तंत्र के रूप में व्यवहार करते इस समूह में इंसानों की कमी क्यों होती जा रही है?

तभी मुझे कुछ याद आया। मेरा ध्यान उन शिक्षक महानुभाव की तरफ गया जिन्होंने अपने स्कूल की दीवार पर बड़े-बड़े अक्षरों में यह लिखवा रखा था, 'लाओ तुम्हारे लाल को इंसान बना दूँ, दुनिया पूजे इतना महान बना दूँ।' एक अन्य दीवार पर यह भी लिखा था 'तमसो मा ज्योतिर्गमय।' साथ ही विद्यालय के प्रवेश द्वार पर दोनों तरफ लिखा था-ज्ञानार्थ प्रवेश, सेवार्थ प्रस्थान।

दीवार की लिखावट का उन नौजवानों के व्यावहारिक जीवन से अलगाव (जिन्होंने यहाँ अध्ययन किया है) वास्तव में चिंता का विषय है। मुझे डॉ. राधाकृष्णन का स्मरण हो आया, जिनके अनुसार, ''विश्वविद्यालय महापुरुषों का निर्माण करने वाले कारखाने है और अध्यापक उनमें काम करने वाले कारीगर है।'' विद्यालयों में दी जाने वाली नैतिक मूल्यों की शिक्षा और प्रार्थना सभा में संस्कारों की चर्चा परिचर्चा के बावजूद हमारे बच्चों में बढ़ते कुसंस्कार इस बात को दर्शाते है कि कुछ छूट रहा है जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। अभी हाल ही में दिल्ली राज्य के शिक्षा निदेशालय द्वारा स्कूलों को

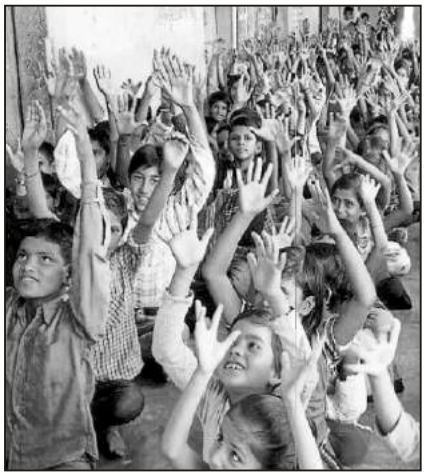

लिखी गई चिट्ठी में ये निर्देश प्रदान किए गए है कि स्कूल अपनी पी.टी.एम., एस.एम.सी., तथा प्रार्थना सभा में बच्चों को बताए कि वे सार्वजनिक सम्पत्तियों और ऐतिहासिक धरोहरों को नुकसान न पहुँचाए और न ही ऐसा किसी को करने दे। इसके लिए बच्चों को विभिन्न मंचों के माध्यम से जागरूक किया जाए। क्या भीड़ की तरह व्यवहार करते इन पढ़े-लिखे नौजवानों को नैतिकता सिखाई नहीं गई? यदि सिखाई गई तो व्यवहारगत परिवर्तन क्यों नहीं आया? इसके पीछे छिपे कारणों में से कुछ है शिक्षक महोदय द्वारा शिक्षण उद्देश्यों का ठीक से निर्धारण नहीं कर पाना अथवा इन उद्देश्यों को नजरअंदाज करते हुए शिक्षण करवाना या शिक्षक स्वयं द्वारा नैतिकता को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किए बिना, मात्र उपदेशों का सहारा लेना।

शिक्षक को शिक्षण से पूर्व शिक्षण उद्देश्यों और उनके व्यवहारगत परिवर्तन पर विचार करना आवश्यक है। शिक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण करते समय हमें देश की संस्कृति तथा उन आदर्शों को भी ध्यान में रखना होगा जो मानव जीवन के लिए आवश्यक है। मनुष्य एक बौद्धिक प्राणी है। उसके सारे क्रियाकलाप उद्देश्य आधारित होते है, जिनका वह मूल्यांकन भी करता है। अतः कक्षा शिक्षण से पूर्व पढ़ाए जाने वाले प्रकरण पर मंथन के साथ-साथ शिक्षण उद्देश्यों पर विचार करना आवश्यक है। साथ ही मूल्यांकन के तरीकों पर भी विचार करना आवश्यक है। वास्तव में पाठ्यक्रम पूरा करने की आपाधापी में तथा अंकों के मक्कड़जाल में उलझा शिक्षक, शिक्षा के दूरगामी उद्देश्यों पर फोकस नहीं कर पाता है और नतीज़ा सिफ़र रहता है। ध्यान रहे अंकों की प्राप्ति तो शिक्षण का सबसे निम्नतम उद्देश्य है, जिसकी पूर्ति तो कोई भी अच्छी पुस्तक कर सकती है। शिक्षक की भूमिका तो बच्चों में संस्कारों को सींचने की है।

वास्तव में हमारी दिव्य संस्कृति हमारे शिक्षण उद्देश्यों का मार्गदर्शन करती है। ठाकुर रवीन्द्रनाथ ने लिखा है कि मुझे सूर्य को देखने से वसुधैव कुटुंबकम का भाव आता है कि जैसे सूर्य बिना भेदभाव किए सभी को आलोकित करता है वैसे हम सभी धरती पर बसने वाले भाई भाई है। अतिथि देवो भवः तथा पधारो म्हारे देश नामक उक्तियाँ हमारा मार्गदर्शन करती है कि घर आया मेहमान हमारे लिए आदरणीय है। सत्यमेव जयते हमें कष्टों में भी सत्य पर बने रहने की प्रेरणा देता है तथा राजा हरिशचंद्र का उदाहरण हमारे भावों की पुष्टि करता है। अहं ब्रह्मास्मि कथन हमें आत्मा में परमात्मा के दर्शन की बात कहता है। शिक्षक तथा छात्र दोनों की आत्मा उस परमात्मा का अंश होने से समभाव के लिए प्रेरित करते हुए गुरुमित्र के भावों को मजबूती प्रदान करता है। अहिंसा परमोधर्म हमें प्राणि मात्र के प्रति मन, वचन और कर्म से अहिंसा के पालन की बात कहता है तथा महावीर और गाँधी हमारे मार्गदर्शन की भूमिका में होते है। हमारे आदर्शों में मीरा की भक्ति, प्रताप का शौर्य, पन्ना का त्याग, चेतक की स्वामिभक्ति, दधीचि का दान है। बुद्ध का माध्यम मार्ग एवं महावीर का स्यादवाद हमें जीवन के मर्म को बारीकी से समझने की प्रेरणा देता है। विवेकानंद, दयानन्द, राजाराम मोहन राय और देश हित प्राणों की बाजी लगाने वाले अगणित देशभक्त हमारे पथ प्रदर्शक है जिनके द्वारा दिखलाए गए मार्ग का अनुसरण हमारे शिक्षण का लक्ष्य होना चाहिए।

हमें कक्षा में जाने से पूर्व हमारी महान परम्पराओं को दृष्टिगत रखते हुए उद्देश्यों का निर्धारण करना होगा कि जिओ और जीने दो की परम्पराओं वाले इस राष्ट्र में मरो और मारो की पनपती अपसंस्कृति का मुकाबला कैसे किया जाए। हमें पहला सुख निरोगी काया का मंत्र भी बच्चों को देना होगा। पिज्जा और बर्गर के रूप में बासी भोजन के प्रति चाव रखने वाली इस पीढ़ी को सीखना होगा की हम उस देश के वासी है जहाँ आटा भी प्रतिदिन ताजा-ताजा पीसने के बाद उपयोग में लाया जाता था। कंप्यूटर और मोबाइल में खेल ढूँढ़ने वाली इस पीढ़ी को खो-खो, कबड्डी, गिल्ली-डंडा, सतोलिया और कुश्ती के महत्त्व को समझाना होगा जो कि न केवल सस्ते खेल है वरन शारीरिक चुस्ती-फुर्ती प्रदान करने वाले है।

वनों के बारे में पढ़ने के बाद यदि हमारा बालक वृक्षारोपण के प्रति लगाव न रखे, उनकी देख-रेख न करे और पेड़ों पर कुल्हाड़ी चलावे तो यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या शिक्षण उद्देश्यों पर ठीक ढंग से विचार नहीं किया गया था? विचार करें कि क्या कक्षा शिक्षण के दौरान बच्चों को पेड़ पौधों के संरक्षण की हमारी प्राचीन परम्पराओं के बारे में बताया गया? क्या बच्चों में मानव की प्रकृति पर निर्भरता के बारे में समझ बनाई गई थी? क्या पेड़-पौधों के औषधीय गुणों के बारे में बताया गया था? क्या पीपल और वटवृक्ष के नीचे ले जाकर यह समझ बनवाई गई थी कि न जाने कितने जीव जंतुओं का निवास स्थान होने के साथ-साथ हाथी जैसे भारी भरकम जीव का पेट यही वृक्ष भरता है। बच्चों को एक वृक्ष द्वारा अपने जीवन काल में की जाने वाली कार्बन डाई ऑक्साइड की समाप्ति और ऑक्सीजन की उपलब्धता के बारे में तुलनात्मक समझाया गया कि कैसे एक पेड़ ऑक्सीजन के सिलिंडर से सस्ता पड़ता है? क्या डिजिटल साधनों की सहायता से बताया गया कि पेड़ मिट्टी के कटाव को कैसे रोकता है? लकड़ी हमारी अर्थव्यवस्था को कैसे मजबूत करती है, इस विषय पर संवाद करवाया गया? बढ़ती जनसंख्या का पेड़ो पर प्रभाव एवं यदि वृक्ष इसी तरह कटते रहे तो आने वाली पीढ़ी के जीवन की कल्पना बच्चों को करवाई गई? यहाँ ध्यान देना होगा की शिक्षण का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं वरन तुलना, समझ, कौशलों का विकास, अभिवृत्ति तथा अभिरुचि भी है। क्या शिक्षण के दौरान बच्चों को अमृता देवी के बलिदान के बारे में समझाया गया था? उक्ति 'सिर सांठे रुख रहे तो भी सस्तों जान' तथा 'एक वृक्ष सौ पुत्र समान' के शब्दार्थ एवं भावार्थ को आत्मसात करवाया गया? 'चिपको आंदोलन' एवं खेजड़ली गाँव का चित्रण कक्षा कक्ष में करवाया गया? मात्र उपदेशों के बजाय यदि शिक्षक स्वयं वर्ष भर में केवल एक वृक्ष उगाकर उसकी देखभाल करे और बच्चों को भी ऐसा ही करने के लिए प्रेरित करे तो कुछ ही दिनों में शाला परिसर के साथ-साथ पूरे गाँव की धरती हरी चुनरी ओढ़ ले इसमें कोई दो राय नहीं है।

वास्तव में उद्देश्यों के निर्धारण के साथ-साथ उनकी प्राप्ति की प्रभावी कार्ययोजना के साथ-साथ सकारात्मक संवाद आवश्यक है, ताकि बच्चों में बेहतर समझ बनाई जा सकें।

हमारे शैक्षिक उद्देश्यों में बालकों के शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक विकास को भी शामिल करना होगा। हमारे शिक्षण से बालकों की कल्पना शक्ति, तर्कशक्ति, चिन्तनशक्ति का विकास कैसे हो यह सुनिश्चित करना होगा। मनुष्य की मूलभुत आवश्यकता रोटी, कपड़ा और मकान है। अभिभावक अपने बच्चों को शिक्षा मंदिरों में इसलिए भेजते है ताकि उनके बच्चे होशियार बनकर अपनी आजीविका का निर्वहन कर सके। व्यावसायिक शिक्षा के साथ-साथ शिक्षा में श्रम के महत्त्व को प्रचारित करना भी शिक्षण का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। व्यक्ति ही समाज की लघु ईकाई है। अपने सुख-दुःख से ऊपर उठकर मानव मात्र के कल्याण का भाव बच्चों में पैदा करना होगा वैयक्तिक विकास के साथ-साथ सामाजिक विकास पर ध्यान देना होगा। समाज के अस्तित्व के लिए सहयोग, प्रेम, सहानुभूति, दया, सहनशीलता, संवेदना, क्षमा के भावों को होना आवश्यक है। बच्चों को समझाना होगा कि स्व के साथ-साथ पर का उत्थान भी महत्त्वपूर्ण है। परिवार के कल्याण के लिए व्यक्ति के और समाज के कल्याण के लिए परिवार की कुर्बानी से पीछे नहीं हटना चाहिए।

औसत आयु में वृद्धि से पूरे विश्व में वरिष्ठ नागरिकों की संख्या में इज़ाफ़ा हुआ है। बढ़ते वृद्धाश्रम चिंता का विषय है। माता-पिता की मौजूदगी हमारा मार्गदर्शन करती है, वे आनंद के साथ जीवन पूरा करे, यह हमारा दायित्व है। घटते लिंगानुपात पर चर्चा, महिला सशक्तिकरण पर संवाद, जेंडर संवेदनशीलता के साथ-साथ विश्व शाँति जैसे ज्वलंत मुद्दें हमारे शैक्षिक उद्देश्यों में समाहित होने चाहिए। संविधान में वर्णित न्याय एवं समता के भावों का बच्चों में विकास करना होगा। अधिकारों के साथ-साथ कर्त्तव्यपालन के लिए जागरूक करना होगा। पिछले कुछ वर्षों में जीवन के प्रत्येक प्रभावित करने वाले सूचना और प्रौद्योगिकी के ज्ञान को भी शिक्षण के उद्देश्यों में शामिल करना होगा।

डेलर्स आयोग की रिपोर्ट में समाहित शिक्षा के उद्देश्यों Learning to know (ज्ञान योग), Learning to do (कर्म योग), Learning to be (स्वनिर्माण योग) तथा Learning to live together (साहचर्य योग) को प्रत्येक बच्चे में साकार करना होगा, क्योंकि आज का बालक ही कल का नागरिक है जिस पर हमारा और हमारे देश का भविष्य निर्भर है आवश्यक है कि शिक्षक शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण करे तथा उनकी प्राप्ति के लिए सार्थक प्रयास करें।

प्राध्यापक (स्कूल शिक्षा)
रा.उ.मा.वि. कोशीवाड़ा,
जिला-राजसमंद (राज.) 313321

अनुसंधान

प्राचीन भारत में समय की सापेक्षता!

❒ डॉ. श्याम मनोहर व्यास

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्स्टीन का 'समय की सापेक्षता' का सिद्धान्त बीसवीं शताब्दी की महत्त्वपूर्ण खोज है। आइन्स्टीन ने जटिल गणना द्वारा सिद्ध किया कि भिन्न वेगों पर समय की गति भी भिन्न होती है अर्थात् जब हम स्थिर हैं, तो समय जिस गति से व्यतीत होगा, उसकी तुलना में जब हम कार में चल रहे होंगे तब कार में समय व्यतीत होने की गति कम होगी। इसका अर्थ है जितने ही अधिक वेग से हम चलेंगे, समय की गति उतनी कम होती जाएगी। प्रकाश की गति में भी इसी प्रकार अन्तर पड़ेगा।

साधारण तथा गतिमियता में अन्तर इतना कम होता है कि हमें भान नहीं हो पाता। प्रकाश की गति तीन लाख किलोमीटर प्रति सैकेण्ड होती है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि यदि आप किसी ऐसे अन्तरिक्ष यान में यात्रा करें जिसका वेग तीन लाख कि.मी. प्रति सैकेण्ड हो तो उसमें समय व्यतीत होना समाप्त हो जाएगा। इसकी हम केवल कल्पना ही कर सकते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि समय सापेक्ष है।

जिसे हम वर्ष कहते हैं वह पृथ्वी का एक बार सूर्य के चारों और घूमने का समय है, किन्तु समय के सम्बन्ध में यह धारणा शुक्रवासियों के लिए भिन्न होगी। शुक्र ग्रह 225 दिन में ही सूर्य की एक परिक्रमा कर लेता है। इसलिए शुक्र वासियों के लिए समय सम्बन्धी धारणा भिन्न है। यह अलग विषय है कि शुक्र ग्रह पर जीवधारियों का अस्तित्व है या नहीं।

अगर निरपेक्ष समय का अस्तित्व रहता है तो निश्चित रूप से यह पृथकता नहीं घट पाती। सुप्रसिद्ध आधुनिक वैज्ञानिक स्टीफन हार्किंग ने भी अपनी पुस्तक 'समय का इतिहास' में इस बात का उल्लेख किया है। एक पौराणिक कथा है- सत्ययुग में राजा रेवत न्यायी, वीर एवं प्रजापालक नरेश हुए हैं। उन्होंने समुद्र के भीतर मय दानव की सहायता से कुशस्थली नाम की नगरी बसाई थी। उसी नगरी में रह कर राजा रेवत जम्बूद्वीप के कई प्रदेशों पर शासन करते थे। उनके सौ पुत्र और पुत्रियाँ थी। एक बार कार्यवश रेवत अपनी पुत्री रेवती को लेकर ब्रह्मलोक में गए। उस समय वहाँ कोई उत्सव मनाया जा रहा था। गन्धर्व, किन्नर और अन्य देवता गण चतुरानन की स्तुति करने में लगे थे। बातचीत का उचित अवसर न मिलने के कारण राजा रेवत वहाँ कुछ क्षण ठहर गए। उत्सव के अंत में ब्रह्माजी को नमस्कार कर राजा रेवत ने उनसे वार्तालाप किया। तदनन्तर राजकुमारी रेवती के लिए योग्य वर की बात चलाई। ब्रह्माजी ने कहा-''राजन्! वर के लिए जिन-जिन व्यक्तियों के नाम तुमने सुझाए हैं, वे अब काल के गाल में समा चुके हैं। जब तुम यहाँ आए थे तो पृथ्वी पर सत्ययुग चल रहा था और जब वापस धरती पर लौटेंगे तो द्वापर चल रहा होगा। अभी तो वहाँ त्रेतायुग चल रहा है और विष्णु के अवतार रामचन्द्रजी राज्य कर रहे हैं। जब तुम पृथ्वी पर लौटोगे तो विष्णु के अंशावतार बलराम अवतार ले चुके होंगे। तुम अपनी कन्या रेवती का विवाह उनसे करा देना। वे ही रेवती के लिए उपयुक्त वर होंगे।'' बलराम लम्बे थे और रैवती की लम्बाई भी अधिक थी, अतः बलराम ही उसके लिए उपयुक्त वर थे। कथा वैसे सामान्य है परन्तु समय के अन्तर वाला इसका अंश बड़ा विचित्र एवं रहस्यमय है। ब्रह्मलोक का कुछ समय पृथ्वी के दो युगों के बराबर होगा। त्रेतायुग और द्वापर युग क्रमशः 12,96,000 और 8,64,000 वर्ष के होते हैं। वाल्मीकि रामायण में काकभुशुंडिजी की कथा आती है। रामायण के उत्तरकांड में एक प्रसंग आया है कि जब कांकभुशुँडिजी राम के मुख में समा जाते हैं तो वहाँ सौ कल्प (एक कल्प 432 करोड़ वर्ष के बराबर) तक रहते हैं। धरती पर वापस लौटने पर ज्ञात होता है कि पृथ्वी पर केवल दो घड़ी ही बीती है। दो घड़ी का अर्थ है- लगभग 45 मिनट होते हैं। इस कथा में भी 'समय की सापेक्षता' का ही सिद्धान्त व्यक्त हुआ है, परन्तु यहाँ सापेक्षता का रूप उल्टा है।

पहले इन कथाओं को केवल कल्पना मात्र ही समझा जाता था पर आइन्स्टीन की समय की सापेक्षता की खोज के बाद स्थिति भिन्न हो गई है। यद्यपि इन कथाओं में अतिशयोक्ति हो सकती है पर यह तो निष्पक्ष रूप से स्वीकार करना ही पड़ेगा कि समय की सापेक्षता की कल्पना सर्वप्रथम भारतीय ऋषि-मुनियों ने की।

श्रीमद्भगवद्गीता विश्व का एक अमूल्य ग्रन्थ है। उसमें वर्णित एक श्लोक 'समय की सापेक्षता' के सिद्धान्त को ही प्रतिपादित करता है। श्लोक इस प्रकार है :-

सहस्त्रयुग पर्यन्त महर्यन्तम
हर्यन्तम हर्मद् ब्रह्मणो विदुः।
रात्रि युग सहस्त्रान्तां
तेऽहोशरामविदो जनाः।।

अर्थात : ब्रह्मा का जो एक दिन है, उसको एक हजार चतुर्युगी तक की अवधि वाला और रात्रि को भी एक हजार चतुर्युगी तक की अवधि वाली जो पुरुष जानते हैं, वे योगीजन काल के तत्व को जानने वाले हैं।

केवल अन्य ग्रहों में ही नहीं इस धरती पर भी दो व्यक्तियों सम्बन्धी धारणा भिन्न हो सकती है। मान लीजिए आसमान से एक गोला पृथ्वी के धरातल पर गिरता है। दो व्यक्ति गोलों के गिरने के स्थान से 2 और 3 कि.मी. दूर खड़े हैं, हम यह नहीं कह सकते हैं कि दोनों ने एक समय में गोला गिरते देखा है। पहले व्यक्ति ने गोला गिरने के 2/3,00,000 सैकेण्ड पश्चात् उसे देखा और दूसरे व्यक्ति ने 3/3,00,000 सैकेण्ड पश्चात् उसे देखा क्योंकि प्रकाश की गति 3 लाख कि.मी. प्रति सैकेण्ड है। प्रकाश की इस गति कि कारण दोनों उसे भिन्न-भिन्न समय पर देखेंगे। जैन धर्म का स्याद्वाद आइन्स्टीन के सापेक्षवाद के सदृश ही है। जैन दर्शन के अनुसार एक ही वस्तु को भिन्न-भिन्न रूपों से देखा जा सकता है। एक प्रसंग है-

अनामिकाः कनिष्ठा मधिकृत्य दीर्घत्वम् मध्यमा अधिकृत्य हस्वत्वम्।

अर्थात् एक व्यक्ति ने अनामिका (चौथी अंगुली) और कनिष्ठा (पंचम अंगुली) एक

साथ फैलाकर अपने साथी से पूछाः–

बताओ, बड़ी अँगुली कौन सी है?

साथी ने कहा–'अनामिका।'

इस पर उस व्यक्ति ने कनिष्ठा नीचे दबाकर अनामिका के बराबर वाली मध्यमा अंगुली खोल दी और पूछा–'क्या अनामिका बड़ी है?'

साथी ने कहा–'नहीं, अनामिका छोटी है।'

इस छोटे से उदाहरण में 'सापेक्षवाद का सिद्धान्त' गागर में सागर के समान छिपा पड़ा है।

राजा रेवत शायद किसी ऐसे अंतरिक्ष विमान में बैठ कर ही ब्रह्मलोक में गए होंगे जिसकी गति काफी तीव्र होगी प्रकाश के वेग से भी अधिक परिणाम स्वरूप ब्रह्मलोक के समय की गति अन्यन्त मंद पड़ गई और पृथ्वी का समय पूर्ववतः गति से व्यतीत होता रहा। ब्रह्मलोक की चलायमान गति से भी समय प्रभावित रहा होगा।

सूर्य भी ब्रह्माण्ड के केन्द्र बिन्दु (ब्लेक हॉल) का अपने ग्रह मंडल के साथ परिभ्रमण करता है। यह समय 'कॉस्मिक वर्ष' कहलाता है जो एक पूरे चक्कर पर पूरा होता है।

समय की बात–

- समय–नियोजन जीवन की बहुत बड़ी कला है।
- समय की सुव्यवस्था मन के कार्यों के निष्पादन में सहायता करती है।
- समय की अनियमितता से मनुष्य की जीवन शैली अव्यवस्थित हो जाती है।
- जागरण और शयन की नियमितता व्यक्ति को अनेक कठिनाइयों से उबार लेती है।

अतीत व भविष्य दर्शन–

विख्यात अंतरिक्ष विज्ञानवेता फ्रैंड हॉयल का कथन है कि काल (समय) आगे से पीछे की ओर भी जा सकता है। नए अनुसंधान के अनुसार ब्रह्मांड में प्रतिपदार्थ (एन्टी मैटर) के गोलाकर पिंडों की खोज हुई है। ये पॉजिट्रान काल में पीछे की ओर भी चलते हैं। वैज्ञानिक फेयनमां ने उनकी गति का चित्र फिल्म पर भी उतारा था। अंतरिक्ष विज्ञानवेताओं का कथन है कि अंतरिक्ष में हमारे सौर मंडल को छोड़कर कुछ सौरमंडल ऐसे भी हैं जो सम्पूर्ण रूप से प्रतिपदार्थ के बने होते है, वहाँ काल–प्रवाह विपरीत दिशा में हो सकता है अर्थात् काल (समय) अतीत की ओर जा सकता है। उन्होंने टेंक योन नामक ब्रह्मांडीय कणों की कल्पना की है जो प्रकाश से भी तेज गति से चलते हैं जो अतीत व भविष्य की ओर जा सकते है। यदि ऐसा है तो भविष्य व अतीत को देखना संभव है। जो घटना पृथ्वी पर कभी घट चुकी है। वह ब्रह्माण्ड के किसी ग्रह में वर्तमान है। जो आज धरती है वह किसी ग्रह के लिए भविष्य काल की घटना हो सकती है।

महाभारत काल में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को जो गीता का उपदेश दिया वह हमारे लिए अतीत है और किसी ग्रह के लिए वर्तमान काल। यदि उस ग्रह के निवासियों ने ऐसा उपकरण बना रखा होगा तो वे श्रीकृष्ण की वाणी को वर्तमान में रहे होंगे। 'समय की सापेक्षता' विज्ञान के लिए अनुसंधान के लिए नए आयाम खोलती हैं।

पूर्व शिक्षा उपनिदेशक एवं प्राचार्य, (डाइट)
15 पंचवटी, पो. उदयपुर–313004
मो: 7506375336

दृढ़ संकल्प

❒ कमलेश जैन

यह अनुभव सिद्ध बात है कि दृढ़ता के बिना अन्य दिव्य गुण हमारे आचरण में स्थायी रूप से स्थापित नहीं हो सकते। अतः दृढ़ता सर्वप्रधान अथवा परमावश्यक है। जिस मनुष्य का मनोबल कम हो, जिसके संकल्प में दृढ़ता न हो, वह कोई भी महान कार्य सफलतापूर्वक नहीं कर सकता। वह आज अपने जीवन में कोई अच्छाई धारण करता है तो कल उसे छोड़ देता है। वह प्रातः कोई प्रतिज्ञा करता है तो शाम तक उसे भंग कर देता है। उसमें अच्छा बनने की इच्छा तो होती ही है परन्तु उसे पूर्ण करने की शक्ति नहीं होती है। अतः पुरुषार्थ के लिए जरूरी है कि मनोबल अथवा दृढ़ता बढ़े। परन्तु स्पष्ट है कि मनुष्य में स्वयं में तो बल है नहीं, अवश्य ही यह बल उसे किसी से लेना होगा। अच्छाई के लिए आत्मबल अथवा शक्ति तो परमपिता से ही प्राप्त हो सकती है। क्योंकि एक वह ही सर्वशक्तिमान है। उससे शक्ति लेने के तरीके को ही योग कहा जाता है। योग से आत्मबल अथवा मनोबल निश्चित ही प्राप्त होता है।

मनोबल में वृद्धि के लिए अनुकूल विचारधारा–दूसरी बात यह है कि जब मनुष्य प्रतिज्ञा करने के बाद उसे निभा नहीं पाता तो उसका मन दुःखी ही नहीं होता बल्कि आगे के लिए उसके संकल्पों में दृढ़ता भी नहीं रहती। उसकी वृत्ति में निराशा बनी रहती है और आत्म विश्वास भी नहीं रहता। इसके बजाय यदि मनुष्य थोड़े समय भी अपने भीतर की दूषित इच्छाओं के तीव्र वेग का दृढ़तापूर्वक सामना कर ले तो उससे थोड़ी सी सफलता से भी उसका उत्साह आत्मविश्वास तथा मनोबल इतना बढ़ेगा कि वह बड़ी–बड़ी कठिनाइयों का, आलोचनाओं का तथा मानसिक तूफानों का भी सामना कर सकेगा। इसके लिए यह जरूरी है कि मनुष्य यह याद रखे कि मेरे सामने जो परीक्षाएँ आ रही हैं, वे सफलता की सीढ़ियाँ हैं, वे क्षणिक हैं। उनको गुजार लेने से महानता तथा सद्गुणों का विकास ही होगा।

सभी जानते हैं कि यदि किसी भवन की नींव सुदृढ़ न हो तो भवन अधिक समय तक टिक नहीं सकता।

ठीक इसी प्रकार यदि मनुष्य के संकल्पों में दृढ़ता न हो तो उसका पुरुषार्थ भी चिर–स्थायी नहीं होता। थोड़ा सा विघ्न उपस्थित होने पर, थोड़ी सी बाधा आने पर वह हथियार डाल देता है। अपने लक्ष्य को छोड़ देता है। वह बहुत बड़ी दुर्बलता है। संसार में दृढ़ विचार वाले व्यक्तियों ने ही उच्च कर्त्तव्य किए हैं। यदि ऐसे व्यक्ति संसार में न होते तो समाज ने वैज्ञानिक, आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में इतने प्रकार की जो भी प्रगति की है, वह हमें उपलब्ध न होती।

प्राध्यापक,
रा.आ.उ.मा.वि. पोहरी खातुरात,
नोडल ब्लॉक–डमोथरी, जिला–डूँगरपुर
मो. 9983125167

बालिका शिक्षा

एक बालिका जिसने सोच बदल दी

❒ नूतन बाला कपिला

हमेशा की तरह विद्यालय में प्रातः कार्यालय में बैठ कर रोज का कार्य कर रही थी। थोड़ी देर में एक लड़की ने कक्ष में प्रवेश किया, साड़ी पहने हुए, लेकिन चेहरे पर नूर नहीं, एक सहमा हुआ बेरंग चेहरा। साथ में उसके एक लड़की भी थी शायद उसकी पड़ोसन होगी। उसे देख कर में अवाक रह गई। यह तो अवनि थी। मेरे विद्यालय की होनहार छात्रा जिस पर हम सबको नाज़ था। जब वो बास्केटबॉल खेलती थी, सब हूटिंग करते थे एक गोल और, अवनि एक गोल और। विद्यालय की बास्केटबॉल टीम की वो कैप्टन थी। उसे मैं देखती रह गई। वह मेरे सामने खड़ी थी और मैं उसे देखे जा रही थी। एक पल में, मैं जैसे उसमें पुराना प्रतिबिम्ब देखने की कोशिश कर रही थी। वो हँसती, खेलती अवनि कहां है? ये वो अवनि नहीं।

उसने मुझे एक प्रार्थना पत्र दिया। उसे पढ़ा। उसने अपनी कक्षा 12 वीं पास की टी.सी. चाही थी। उसे मैंने बैठाया और पूछा कि उसे टी.सी. क्यों चाहिंए? उसने कहा, वो आगे पढ़ाई करना चाहती है। मैंने कहा–तुमने तो दो साल पहले 12 वीं पास की थी इतनी देर से टी.सी. क्यों? उसने कहा–मैडम 12 वीं पास करने के बाद पापा ने शादी कर दी। मैंने कहा–तुमने विरोध नहीं किया? उसने कहा– बहुत किया, मैं पढ़ना चाहती हूँ, लेकिन पापा ने कहा हमारे समाज में ज्यादा पढ़े–लिखे लड़के नहीं मिलते। समाज में सब कहते हैं कि ज्यादा क्यों पढ़ा रहे हो? तुम्हारे दादा गाँव में रहते हैं, वो तो कहते यदि अभी शादी नहीं की तो वो मुझसे कभी बात नहीं करेंगे, समाज की भी सुननी पड़ती है। अभी तो लड़के वाले राजी है, नहीं तो वो मना कर देंगे। उसने कहा–पापा ने परीक्षा परिणाम आने से पहले शादी तय कर दी। जून माह में शादी हो गई।

मैंने कहा तुम्हारी ससुराल कैसी है? ये सुन कर, उसकी आंखों में आंसू आ गए। मैंने उसे संभाला। कुछ संभल कर उसने कहा कुछ दिन तक सब ठीक रहा। घर का सब काम मुझसे

करवाते। बीमार हो गई तो पीहर भेज दिया। पीहर में पापा ने इलाज करवाया। जब ठीक हो गई तो फिर ससुराल चली गई, लेकिन बाद में उनका व्यवहार और खराब हो गया। कई बार खाना भी नहीं देते। मैंने पापा–मम्मी को कुछ नहीं बताया। मैंने पूछा, तुमने पति को नहीं बताया? उसने कहा वो तो अभी पढ़ रहे है। कॉलेज में हैं। वो कुछ नहीं सुनते। वो कहते हैं मम्मी–पापा जो कहते है, वह करो। अभी ससुराल वालों ने घर से निकाल दिया है। पीहर आ गई हूँ। वो कहते हैं कि तलाक देंगे। 6 माह हो गए पीहर में रहते हुए। अब पापा ने कहा आगे पढ़ो। मैडम, अब मैं आगे पढूँगी और अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हूँ। मैंने कहां बेटी तुम सब कुछ कर सकती हो। अपने जीवन के ये दो साल भूल जाओ। अपनी जिंदगी को फिर से जीओ।

उस दिन अवनि टी.सी. लेकर चली गई। उस दिन के बाद से मेरा ध्यान उस ओर जाने लगा कि बालिकाओं को मजबूत बनाना चाहिए। जब भी कोई अवसर मिलता, बालिकाओं को शिक्षा पूर्ण करने के लिए कहती।

कक्षा 12 में पढ़ने वाली बेटियों के पिताजी यदि आ कर कहते अभी बेटी को छुट्टी दे दो, घर पर उसे देखने वाले आए हैं। मैं उन्हें बाल विवाह नहीं करने एवं बाल विवाह से होने वाली हानियों के बारे में बताती, शायद में किसी अवनि को फिर बचा सकूं। माता–पिता की सोच बदल सकूं।

संयुक्त निदेशक (कार्मिक)
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर (राज.)

कॅरियर डे

❒ डॉ. गोविन्द नारायण कुमावत

विद्यालयों में मनाया जाने वाला प्रतिवर्ष 12 जनवरी को 'कॅरियर डे' बच्चों के उज्ज्वल भविष्य को दिशा देने वाला सिद्ध हो सकता है। स्वामी विवेकानन्द जयंती को हम कॅरियर डे के रूप में मनाते हैं। सर्दी की छुट्टियों के बाद मकर संक्रांति के दो दिन पूर्व आने वाला ये पावन पर्व हमारे लिए प्रेरणादायी है। शिक्षकों को इस दिवस को पूर्ण मनोयोग पूर्वक विशेष रूचि लेकर मनाया जाना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द का व्यक्तित्व व कृतित्व युवाओं के लिए प्रेरणादायी है। **उतिष्ठतः जाग्रतः प्राप्यवरानी बोधतः** जैसे संकल्प को लेकर आगे बढ़ते है तो विश्व की महाशक्तियाँ भी भारतीय युवाओं का लोहा आज भी मान रही है।

युवा पीढ़ी के प्रतीक स्वामी विवेकानन्द से अभिप्रेरित होकर राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर के मनोवैज्ञानिक आधार एवं व्यावसायिक शिक्षा विभाग–3 के द्वारा सत्र 1997–98 में विवेकानन्द जी के जन्म दिवस को 'कॅरियर डे' के रूप में मनाये जाने का निर्णय लिया गया।

कॅरियर डे पर विद्यालयों में दिन भर विभिन्न कार्यक्रम–पत्रवाचन, निबन्ध लेखन, कॅरियर चार्ट निर्माण एवं निर्देशक साहित्य संकलन जैसी प्रतियोगिताएँ विशेषज्ञों को बुलाकर युवाओं को उनके अनुभवों की जानकारी दी जाती है।

अपने भविष्य का निर्माण बेहतर ढंग से कैसे करें। अपनी रुचि के अनुसार कैसे संसाधनों की आवश्यकता है। उनकी उपलब्धता कैसे की जा सकती है, ऐसी ही चर्चाएँ कॅरियर कॉन्फ्रेन्स में की जा सकती है। नवीनतम सूचना संसार में अपना भविष्य एक नवयुवक कैसे तलाशें, कैसे प्रयास करें आदि ये सब कॅरियर 'डे' उत्सव बालकों को चिंतन–मनन कर लक्ष्य की ओर बढ़ने का अवसर उपलब्ध कराता है।

प्रधानाचार्य
रा.आ.उ.मा.वि., ड्योढ़ी सांभर लेक,
जयपुर–302040
मो. 8946838583

बाल साहित्य

बच्चों में जगाएँ पढ़ने की रुचि

❒ कान्ता कल्ला

आज के बच्चों को अच्छे संस्कारों से जोड़ना तथा नैतिक मूल्यों को बनाए रखना शिक्षा जगत के लिए नहीं पारिवारिक संस्थाओं के लिए भी एक बड़ी चुनौती हो गई है। बच्चों के जीवन को उद्देश्यों से जोड़ते हुए उनका बहुमुखी विकास बाल साहित्य ही एक सशक्त माध्यम माना गया है। बच्चों का सही विकास तभी सम्भव है जब बच्चे स्वस्थ एवं सौद्देश्य साहित्य खूब पढ़े। आज हमें बच्चों को राजा-रानी एवं परियों के मनोरंजक एवं उपदेशात्मक, रुचिकर, किस्से-कहानियाँ, कविताओं, कार्टूनों, चुटकुलों के अलावा बच्चों की वास्तविक जरूरतों और समस्याओं के प्रति उन्हें संवेदनशील बनाते हुए उनकी भागीदारी से एक शाश्वत समाधान की ओर प्रेरित करना होगा।

बचपन कभी तितलियों की थिरकन या नर्तन करता मालूम जान पड़ता है, तो कभी शिशिर की शबनमी बूँदों का शीतल जान पड़ता है। बचपन सीपियों से मोती चुराने का स्वर्णिम संयम है। बचपन आकाश मुट्ठी में भर लेने का जज्बा है। सरल व सहज जीवन का दूसरा नाम ही तो बचपन है। अनगढ़ बचपन को सुगढ़ बनाने के लिए शिक्षक व शिक्षा जगत विद्यालय के माध्यम से भूमि तैयार करता है। बाल साहित्यकार उस भूमि में सपनों के बीजारोपण करता है। माता-पिता व शिक्षक उसकी समय-समय पर देखभाल व सार संभाल कर उसके अंकुरित होने से लेकर पौधे से पेड़ बनने तक ख्याल रखते हैं।

बाल साहित्य के महत्त्व को व्याख्यायित करते हुए नेहरू जी ने भी कहा है कि-''बचपन में ही पढ़ने की रुचि जाग्रत की जा सकती है। अतः यह विशेष रूप से आवश्यक है कि हम बच्चों को पढ़ने की आदत डालने के लिए प्रोत्साहित करें और जानकारियों के लिए लालायित करें। यदि इस उद्देश्य को दृष्टिगत रखकर बच्चों को रुचि के अनुकूल बाल पुस्तकों को तैयार किया जाए तो निश्चय ही बच्चे रुचि लेकर साहित्य को पढ़ने की ओर बढ़ेंगे। अंग्रेजी

के महानतम कथाकार टॉलस्टॉय ने बड़ों के साहित्य सृजन के समान ही बच्चों के साहित्य को भी पूरी निष्ठा एवं रचनात्मकता के साथ लिखा और खूब लिखा। इन सभी बातों को संदर्भित करने का सीधा सा तात्पर्य यह है कि बाल साहित्य को बच्चों तक पहुँचाने के लिए हमें रचनाकार, प्रकाशक, पाठक व अभिभावक की भूमिका कौन-कौनसी हो इनकी जिम्मेदारियों का निर्वहन ठीक ढंग से समयानुसार करना चाहिए। इनके अलावा भी समाज, पुस्तकालय, मल्टीमीडिया, प्रिंट मीडिया, रेडियो, टेलीविजन, पत्रकार समूह तथा शिक्षकों की भी अहम भूमिका का निर्धारण कर समयानुकूल क्रियान्वयन की सुनिश्चितता की जानी आवश्यक है।

बाल साहित्य बच्चों तक सुलभता से पहुँचे इस विषय को समझने के लिए हमें बच्चों को उनके आचार-विचार को और सूक्ष्मता से समझना होगा। कहने का तात्पर्य यह है कि बच्चों के साहित्य का रचनाशास्त्र ही अलहदा है। उसकी रचना प्रक्रिया का रसायन ही अलग है। आम रचनाओं के लिए तो परकाया प्रवेश काफी है लेकिन बाल साहित्य में बालमन और आत्मा से तादात्म्य स्थापित होना आवश्यक है। क्योंकि बाल मन स्वतंत्र तथा कालातीत सृजनशील के अवबोध से समृद्ध होता है। खिलौने को सप्राण सहचर बना लेने की शक्ति से स्फूर्त बालक जब एक असाधारण सी छड़ी को दोनों पैरों के बीच पकड़कर कोड़ा फटकारता हुआ दौड़ता है तो साक्षात् अश्वमेघ के रथ पर सवार के अहसास से समृद्ध ही दिखाई देता है। मिट्टी के घरोंदों को बनाने एवं किसी के तोड़ देने की प्रतिक्रिया वास्तविकता के बहुत नजदीक हो जाती है। गुड्डे-गुड़िया के खेल या आसपास के वातावरण से प्रेरित दुकान से मनपसंद चीजें खरीदना, स्कूल-स्कूल में टीचर बनकर पढ़ना आदि दृश्यात्मक स्वतः ही सृजन कर घरों में अभिनय करते हुए देखा जा सकता है।

बाल साहित्य की किसी रचना पर विचार करते हुए हमें यह तय करना होगा कि क्या वह मन से समरस है, क्या वह बाल मन के सरोकारों को छूती है। बाल साहित्य को रचनात्मक कसौटी यह है कि क्या उसमें यथार्थ को अतिक्रांत कर कल्पना लोक में उन्मुक्त उड़ान भरने की क्षमता है। क्या उसमें बाल स्वभाव के हर स्तर आरोहण की शक्ति है। क्या वह उम्र को संतरित कर कला की आदि माया और जादू को रच सकती है। क्या वह जिज्ञासा को जगाता है, प्रश्नानुकूलता का समाधान दे सकती है और सबसे सर्वोपरि कि उसमें सादादिली है जो बाल मन को आनन्दित करती है, सहलाती है।

समाधानों के संदर्भ में कहा जा सकता है कि आज बाल साहित्य को बच्चों तक पहुँचाने के लिए सर्वप्रथम अभिभावकों एवं पालकों को शुरूआत करनी होगी। जिस प्रकार बच्चों के लिए अच्छे कपड़ें, जूते व खिलौने खरीदते हैं उन्हीं के साथ अच्छे सोद्देश्य बाल साहित्य नियमित रूप से कम से कम हर माह एक पुस्तक बालकों के लिए खरीदनी चाहिए। बाल साहित्य बिकने लगेगा तो साहित्यकार भी बाल साहित्यों का सृजन करेगा और प्रकाशक भी रुचि लेकर प्रकाशन। शिक्षक अभिभावक बैठक में अभिभावकों को प्रतिमाह बच्चे के जन्म दिन पर एक बाल पुस्तक पढ़ने के लिए खरीद कर बाजार से लाकर दें। 10 सालों में उसके पास एक

आलमारीनुमा 120 बाल पुस्तकालय में उसका अपना रचना संसार होगा। वह अपने ऐसे ही 10 साथी मित्रों से यदि बाँटता है तो 1200 बाल पुस्तकों का आनन्द ले सकता है। यदि यह शुरूआत कक्षा 1 से ही शुरू करें तो कक्षा 10 तक आते-आते उसको बाल साहित्य से किशोर साहित्य फिर युवा साहित्य एवं समृद्ध साहित्य की ओर शिक्षक व अभिभावकों के मार्गदर्शन में बढ़ाया जा सकता है। बच्चे पाठ्यक्रम में सम्मिलित साहित्य तो पढ़ लेते हैं लेकिन पाठ्यक्रम से इतर साहित्य को पढ़ने में रुचि नहीं होती जिसे प्राथमिक स्तर पर जगाया जा सकता है।

बच्चों में साहित्य के प्रति आकर्षण एवं रुझान पैदा करने के लिए बच्चों को खेल-खेल में शिक्षण देने के साथ-साथ साहित्य को सहभागी बनाना होगा। चाहे वह कविताओं का हावभाव पूर्ण वाचन या किसी नाटक का अभिनय तथा चित्रकथाओं का अनुसरण करते हुए चित्रांकन आदि आदि। घर में बाल साहित्य को मंगवाकर, उन्हें स्वयं पढ़कर बच्चों को सुनाना तथा जन्मदिन अथवा अन्य अवसरों पर बाल साहित्य की पुस्तकें भेंट करना एक उपयोग व समयानुकूल अच्छा व बाल साहित्य में अपना सकारात्मक योगदान देने वाला कार्य बन सकता है।

हम सभी अभिभावकों के लिए बच्चे ही सबकुछ होते हैं खासकर माताओं का संसार ही बच्चों से शुरू होता है जो जीवनभर उनके हित के लिए समर्पित होता है। परन्तु हम जानते हुए भी कि उनके शरीर का 20 प्रतिशत हिस्सा (मस्तिष्क) जो कि 80 प्रतिशत कार्यों के लिए उत्तरदायी है फिर भी हम उस मस्तिष्क के लिए बच्चों पर होने वाले कुल खर्च का केवल 20 प्रतिशत ही खर्च करते हैं जबकि बाकी शरीर (80 प्रतिशत) के लिए खाना-खिलाना, कपड़े-लत्ते, खिलौने आदि। अगर आप भविष्य में अपने बच्चे को हर परिस्थिति में उचित निर्णय ले सकने की योग्यता से सज्जित देखना चाहते है जो कि केवल उसके मस्तिष्क की क्षमता पर निर्भर है तो उसके मस्तिष्क को योग्य व परिपक्व बनाने के लिए उसे बचपन से ही बाल साहित्य से रूबरू करवाना होगा। उसे समझाना होगा कि साहित्य ही तुम्हारा सच्चा साथी है, यह कभी धोखा नहीं देता, हर परिस्थिति का समाधान दिखाता है, तुम्हारी मदद करता है और आप सभी को अपने घर में कोई न कोई पाठ्यक्रम से इतर साहित्य को बच्चों के सामने पढ़ते रहना चाहिए क्योंकि बच्चे वही करते है जो आप करते है वह नहीं करते जो आप कहते हैं। आशा है अपने बच्चों के सुंदर व समाजोपयोगी भविष्य के लिए अपने से ही शुरू करेंगे। धन्यवाद।

सहायक प्रशासनिक अधिकारी,
शिविरा प्रकाशन अनुभाग, मा.शि.राजस्थान, बीकानेर
मो. 9252928448

दूसरों के साथ वह व्यवहार न करो
जो तुम्हें अपने लिए पसन्द नहीं।
***
अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है।

मासिक गीत

चल रहे हैं चरण अगणित ....

❒ मुकेश कुमार लखारा

चल रहे हैं चरण अगणित ध्येय के पथ पर निरन्तर।
ध्येय के पथ पर निरन्तर।।

श्रेष्ठ जीवन की धरोहर, पूर्वजों से जो मिली है,
विश्व को सुख शांति दात्री, जो यहाँ संस्कृति पली है,
है उसे रखना चिरन्तन, मृत्यु का भी सिर कुचलकर।।
ध्येय के पथ पर निरन्तर ।।1।।

हूण, शक, बर्बर यवन की मौत इस भू पर हुई है,
आंग्ल-मुगल, विदेशियों की जीत हार बनी यही हैं,
अन्त में विजयी हमीं हैं, आदि का अभिमान लेकर।।
ध्येय के पथ पर निरन्तर ।।2।।

भ्रांति जन-मन की मिटाते, क्रांति का संगीत गाते
एक के दस लक्ष होकर, कोटियों को है बुलाते,
मातृ-भू की अर्चना में, विजय का विश्वास रखकर।।
ध्येय पथ पर निरन्तर ।।3।।

साध्य करना है हमें गीता प्रदर्शित ध्येय-सपना,
बस इसी की पूर्ति के हित हो समर्पित जन्म अपना,
तुष्ट माँ होगी तभी तो विश्व में समान पाकर।।
ध्येय के पथ पर निरन्तर ।।4।।

लखारों की गली, बाड़मेर - 344001
मो. 8003890145

पर्यावरण

प्रदूषण निवारण

❒ राजेन्द्र ढुंढ़ाड़ा

विज्ञान के इस युग में मानव को जहाँ कुछ वरदान मिले है, वहाँ कुछ अभिशाप भी मिले हैं। प्रदूषण भी एक अभिशाप है जो विज्ञान की कोख से जन्मा है और सहने के लिए अधिकांश जनता मजबूर है, जहाँ विज्ञान मानव जीवन को उच्च स्तर पर ले जाता है। वहीं मानव जीवन को खतरे में डाल रहा है। प्राकृतिक संतुलन में दोष पैदा कर रहा है। न शुद्ध वायु मिलना, न शुद्ध जल मिलना, न शुद्ध खाद्य पदार्थ मिलना, न शाँत वातावरण मिलना, प्रदूषण कई प्रकार के होते हैं, महानगरों में यह प्रदूषण अधिक फैला हुआ है। वहाँ 24 (चौबीसों) घंटे कल कारखानों का धुँआ, वाहनों का काला धुँआ, इस तरह फैल रहा है कि स्वस्थ वायु में साँस लेना दूभर हो रहा है। महानगरों में वायु प्रदूषण के कण साँस के साथ मनुष्य के फेफड़ों में चले जाते हैं और असाध्य रोगों को जन्म देते हैं। यह समस्या वहाँ अधिक होती है जहाँ सघन आबादी होती है। वृक्षों का अभाव होता है और वातावरण तंग होता है। कल-कारखानों का दूषित जल नदी-नालों में मिलकर जल प्रदूषण पैदा करता है। बाढ़ के समय कारखानों का दूषित जल सब नदी नालों में मिल जाता है। इससे अनेक बीमारियाँ फैल जाती हैं। आज के वैज्ञानिक युग ने मनुष्य के शाँत वातावरण को भंग कर दिया, यातायात के साधनों का शोर, मोटर गाड़ियों की चिल्ल पों एवं लाउडस्पीकरों की कर्णभेदी ध्वनी ने बहरेपन और तनाव को जन्म दिया है। प्रदूषण को बढ़ाने में कल-कारखानों, वैज्ञानिक साधनों का अधिक उपयोग फ्रीज, कूलर एसी ऊर्जा संयंत्र दोषी है। प्राकृतिक संतुलन के बिगड़ने का मुख्य कारण है। वृक्षों की अंधाधुंध कटाई से मौसम का चक्र बिगड़ रहा है। घनी आबादी वाले क्षेत्रों में हरियाली न होने से भी प्रदूषण बढ़ रहा है, इसे रोकने के लिए हमें अधिक से अधिक वृक्ष लगाना चाहिए। रियासी वाले इलाकों एवं सड़क किनारे घने वृक्ष लगाने चाहिए, मेरा मानना है कि प्रकृति के असंतुलन में मानव जाति का हाथ है। अतः मेरा सुझाव है कि प्रकृति एवं पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने के लिए हम सभी को आगे आना चाहिए।

आप सभी की एक ही पुकार।
पर्यावरण में अवश्य करो सुधार।।

हमारे पर्यावरण को मुख्य रूप से चार तरह के प्रदूषण से खतरा है। भूमि प्रदूषण बनावटी खादी के प्रयोग से भूमि प्रदूषण बढ़ रहा है तथा भूमि की उपजाऊ शक्ति कम हो रही है।

भूमि बचाओ नहीं तो बीमारियाँ पाओ।

जल प्रदूषणः– बड़े-बड़े कारखानों का गंदा पानी तथा कूड़ा-कचरा नदियों में मिलकर उसके जल को प्रदूषण कर रहा है। हमें इसे रोकना होगा।

'जल है तो कल है'

वायु प्रदूषणः– पेड़ों के कटने से, कारखानों और वाहनों के धुँए से वायु प्रदूषण फैल रहा है। मनुश्य को इससे सांस की बीमारियाँ हो रही है।

पेड़ लगाओ देश बचाओ

ध्वनि प्रदूषणः– बड़े-बड़े कारखानों, वाहनों के शोर, विवाह शादी से ऊँची आवाज में बजते गाने से ध्वनि प्रदूषण बढ़ रहा है इससे उच्च रक्त चाप तथा बहरेपन जैसी बीमारियाँ हो जाती है।

बन्द करो यह शोर नहीं तो सुनो आधो-आधा

आज के इस युग में समझदार एवं पढ़े-लिखे सभी व्यक्तियों को चाहिए कि फैशन के इस दौर में ध्वनि प्रदूषण को बन्द करे। प्रदूषण के कारण ही भूकम्प, सूखा, बाढ़ आदि का प्रकोप भी झेलना पड़ रहा है। पर्यावरण पर बड़ी-बड़ी बातें करने से पहले हमें खुद कई प्रयास व्यक्तिगत करने होंगे। घरों में पानी की टंकियों से ओवर फ्लो से पानी नहीं निकलना चाहिए, कारों एवं छोटे वाहनों को खुले पानी से धोना बन्द करे। सिर्फ गीले कपड़ों से ही पोंछे, कूड़ा खाली प्लांट तथा सड़कों पर न डालकर कूड़ेदान या कूड़े की गाड़ी में डाले, अपने आसपास पेड़ लगाएँ, उन्हें पानी दे, देखभाल अवश्य करे, कम से कम अपने प्रत्येक जन्मदिन पर, प्रत्येक त्यौहार, अपने पूर्वजों की पुण्यतिथि पर पौधे अवश्य लगाए, पुण्य कमाएं, पर्यावरण को प्रदूषण से बचाए, बाजार जाते समय अपने पास कपड़े या जूट का एक थैला अवश्य साथ ले जाए, कम दूरी पर जाना हो तो पैदल या साइकल पर जाए, पर्यावरण बचाएं, घर में सभी को एक साथ खाना खाना चाहिए ताकि बार-बार गर्म ना करना पड़े। आज धीरे-धीरे हम ग्लोबल वार्मिंग और प्रदूषण जैसे आपदाओं से घिरे हुए है जो शायद आगे पृथ्वी के विनाश का मुख्य कारण बन जाएँगे। हम अपने प्रकृति के सौंदर्य को देखकर कितना खुश होते है और उसी की प्रकृति को प्रदूषित करते समय सोचते तक नहीं है।

पर्यावरण का महत्त्वः– पर्यावरण वह है जो प्राकृतिक रूप से हमारे चारो तरफ है। हम चारों ओर पर्यावरण से घिरे हुए है। पर्यावरण के बगैर किसी का जीवन असम्भव है। बेहतर जिंदगी जीने के लिए एक स्वच्छ वातावरण बहुत जरूरी है।

जब कोई मुख्य दिन जैसे गाँधी जयन्ती, स्वतंत्रता दिवस आता है तो हम बहुत उत्साहित हो जाते है और कुछ दिनों बाद हम सब भूल जाते है। अगर सही मायने में हम सोचे तो पर्यावरण की बात आने पर हम थोड़ा मतलबी हो जाते है। पर्यावरण को हरा-भरा रखने के लिए हमें प्रतिवर्ष वृक्षारोपण करना चाहिए। आज के आधुनिक युग में हम टेक्नोलॉजी करते है और अपने पर्यावरण का ख्याल रखना भूल चुके है। हमें टेक्नोलॉजी के साथ-साथ पर्यावरण पर भी अपना पूरा ध्यान देना होगा। सरकार की ओर से भी कई प्रकार की योजनाएँ और अभियान चलाए जा रहे हैं। परन्तु हमें केवल सरकार पर निर्भर नहीं होना चाहिए, जब तक हम हर एक व्यक्ति यह कसम नहीं खा लेता कि पर्यावरण मुझे बचाना होगा और इसे स्वच्छ रखना मेरा कर्त्तव्य है तब तक पर्यावरण को पूर्ण रूप से बचाना मुश्किल है। चलिए आज हम मिलकर प्रण लें। पर्यावरण को हम दूषित होने से रोकेंगे, अपने गली-मौहल्ले को स्वच्छ रखेंगे और अपने पर्यावरण की रक्षा करने के लिए हर सकारात्मक कदम उठाएँगे।

सहायक प्रशासनिक अधिकारी
ए.जी. ऑडिट
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो: 9414989140

आदेश-परिपत्र : जनवरी, 2019

1. हितकारी निधि से बालिका शिक्षा पर ऋण सुविधा।

2. स्कूल शिक्षा विभाग की नवीन एकीकृत शिक्षा संकुल व्यवस्था में सूचना के अधिकार के अन्तर्गत चाही सूचनाओं को उपलब्ध करवाए जाने हेतु लोक सूचना अधिकारी एवं अपील अधिकारियों का मनोनयन।

3. राज्यस्तरीय शैक्षिक सम्मेलन की तिथि 01-02 फरवरी-2019 निर्धारित।

1. हितकारी निधि से बालिका शिक्षा पर ऋण सुविधा।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा/हिनि/28130/2018-19 दिनांक : 5.12.2018 ● समस्त उप-निदेशक (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा) समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा) समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा, मुख्यालय) समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, समस्त विशिष्ट संस्थाएँ, समस्त प्राचार्य डाईट। ● विषय : हितकारी निधि से बालिका शिक्षा पर ऋण सुविधा।

उपयुर्क्त विषय में लेख है कि हितकारी निधि नियम 13(घ) एवं राज्य सरकार का अनुमोदन पत्रांक प21(7)शिक्षा-2/हितकारी निधि/2017 दिनांकः 08-10-2018 के अनुसरण में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सत्र 2018-19 के लिए ऋण आवेदन पत्र निम्नलिखित नियमों एवं शर्तों के अध्यधीन आमंत्रित किए जाते हैं :-

1. स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त कर रही बालिका के अभिभावक के आवेदन करने पर एक बार ऋण राशि प्रदान की जावेगी।
2. ऋण प्राप्त करने के इच्छुक कार्मिक को अधिकतम 50,000/- रुपये का ऋण दिया जा सकेगा।
3. योजनान्तर्गत 100 आवेदकों को ही राशि वितरित की जावेगी। योजना का द्वितीय वर्ष है। इसकी सफलता के पश्चात् आगामी वर्षों में बढ़ोतरी संभव हो सकेगी।
4. योजना का लाभ नियमित अंशदाता को ही देय होगा।
5. आवेदन पत्र कार्यालयाध्यक्ष, जिला शिक्षा अधिकारी को प्रेषित करेंगे तथा जिला शिक्षा अधिकारी, निदेशालय को अग्रेषित करेंगे।
6. ऋण अदायगी 21 समान किश्तों में मय ब्याज 2400/- रुपये प्रतिमाह जमा करवानी होगी, एवं अंतिम किश्त 2530/- रुपये होगी।
7. उक्त राशि की प्रतिपूर्ती हेतु कार्मिकों को 22 हस्ताक्षरित चैक जिसमें मासिक राशि एवं माह की कोई एक निर्धारित दिनांक हो का उल्लेख कर भिजवाया जाना होगा।
8. आवेदन अनुसार ऋण राशि की स्वीकृति जारी होने के उपरांत ही बिन्दु संख्या-7 अनुसार चैक भिजवाए जाने हैं।
9. चैक अनादरण की स्थिति में नियमानुसार विभाग स्तर/अन्य नियमों के तहत कार्यवाही करने हेतु स्वतंत्र होगा।
10. ऋण आवेदन के लिए कम से कम 05 वर्ष की राजकीय सेवा पूर्ण हो चुकी हो तथा सेवानिवृत्ति में कम से कम 05 वर्ष की अवधि शेष हो आवेदन के लिए पात्र होंगे।

● **(घीसा लाल शर्मा)** उप निदेशक (प्रशासन) एवं सचिव हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

हितकारी निधि

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● हितकारी निधि से राज्य कर्मचारियों, राजपत्रित शिक्षा अधिकारी/व्याख्याता (स्कूल शिक्षा)/शिक्षक/मंत्रालयिक/सहायक कर्मचारी एवं समस्त वर्ग के राज्य कर्मचारियों (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा) के बालिका शिक्षा ऋण हेतु प्रार्थना-पत्र।

1. कर्मचारी का नाम.....जन्मतिथि.....आयु.....
2. पद एवं पदस्थापन स्थान मय आई.डी. संख्या.....
3. कर्मचारी की नियुक्ति तिथि.....
4. कर्मचारी का स्थायी पता.....
   टेलीफोन नम्बर/मोबाइल नम्बर.....
5. कार्मिक का बैंक खाता विवरण :
   1. बैंक का नाम एवं शाखा का नाम.....
   2. आई.एफ.एस.सी. कोड नम्बर.....
   3. कार्मिक का बैंक खाता संख्या (पासबुक की प्रति).....
6. अध्ययनरत छात्रा का नाम.....जन्मतिथि.....आयु.....
7. छात्रा से सम्बन्ध.....
8. छात्रा अध्ययनरत है-स्नातक/स्नातकोत्तर/व्यावसायिक शिक्षा(✓ करें)
9. महाविद्यालय में प्रवेश तिथि (प्रथम वर्ष).....
10. महाविद्यालय/विद्यालय का नाम एवं पता जहाँ छात्र/छात्रा अध्ययनरत है.....(✓ करें)
    (संस्था राजकीय/अराजकीय/निजी/मान्यता प्राप्त)
11. छात्रा जिस महाविद्यालय में अध्ययनरत है उस संस्था से प्राप्त प्रमाण पत्र संलग्न है।.....
12. हितकारी निधि पंजीयन संख्या (वर्षवार कटौती विवरण) संलग्न पृष्ठ.....
13. बकाया अंशदान भिजवाने का ड्राफ्ट संख्या व दिनांक.....

मैं प्रमाणित करता हूँ/करती हूँ कि मेरी सर्वोत्तम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण बिल्कुल सही है। इन बिन्दुओं

में कोई असत्यता पाई जाती है तो हितकारी निधि, शिक्षा विभाग, बीकानेर मेरे विरुद्ध जो भी उचित समझे कार्यवाही कर सकेगा। वह मुझे स्वीकार्य होगी।

कर्मचारी के हस्ताक्षर
(पद एवं कार्यरत स्थान)

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती.....
पद एवं पदस्थापन स्थान.....
जो मेरे अधीन कार्यरत है। इनके पुत्री.....जो
(महाविद्यालय/विद्यालय) का नाम.....
में अध्ययनरत है एवं स्नातक/स्नातकोत्तर/व्यावसायिक शिक्षा.....
में प्रवेश लिया है को सहायता हेतु इनका प्रार्थना-पत्र अध्यक्ष हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर को अनुशंषा सहित अग्रेषित किया जाता है।

जिला शिक्षा अधिकारी — संस्थाप्रधान के हस्ताक्षर
हस्ताक्षर मय सील — (मोहर)

.....
महाविद्यालय/विद्यालय का नाम.....

अध्ययनरत महाविद्यालय/विद्यालय का प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि सुश्री.....
पुत्री.....
जो (महाविद्यालय का नाम).....
में अध्ययनरत है। इनके पुत्री इस महाविद्यालय की नियमित छात्रा है।

महाविद्यालय/विद्यालय में अध्ययनरत छात्र/छात्रा विषयक विवरण निम्नानुसार है :-

पाठ्यक्रम का नाम	पाठ्यक्रम की अवधि (सेमेस्टर सहित)	प्रवेश तिथि	वर्तमान में किस वर्ष में अध्ययनरत है	उत्तीर्ण/ विशेष अनुत्तीर्ण विवरण

संस्थाप्रधान के हस्ताक्षर
मय मोहर

2. स्कूल शिक्षा विभाग की नवीन एकीकृत शिक्षा संकुल व्यवस्था में सूचना के अधिकार के अन्तर्गत चाही सूचनाओं को उपलब्ध करवाए जाने हेतु लोक सूचना अधिकारी एवं अपील अधिकारियों का मनोनयन।

● कार्यालय निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● आदेश ● सूचना के अधिकार अधिनियम 2005 के अन्तर्गत निदेशालय प्रारंभिक शिक्षा बीकानेर कार्यालय स्तर से जारी आदेश क्रमांक : शिविरा/प्रारं/सूअ/13705/आदेश/09 दिनांक 18.6.09 को तत्काल प्रभाव से प्रत्याहरित कर स्कूल शिक्षा विभाग की नवीन एकीकृत शिक्षा संकुल व्यवस्था को मद्देनजर रखते हुए मंडल स्तर, जिला स्तर व ब्लॉक स्तर पर सूचना के अधिकार के अन्तर्गत चाही गई सूचनाओं को उपलब्ध करवाये जाने हेतु निम्नानुसार लोक सूचना अधिकारी एवं अपील अधिकारियों का मनोनयन किया जाता है:-

क्र. सं.	लोक सूचना अधिकारी	अपील अधिकारी
1.	अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन), प्राशि., निदेशालय, बीकानेर नोडल अधिकारी	निदेशक, प्राशि. निदेशालय, बीकानेर
2.	संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा (संबंधित मंडल के लिए)	अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन) प्राशि. निदेशालय, बीकानेर
3.	पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षाएँ, बीकानेर	अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन) प्राशि. निदेशालय, बीकानेर
4.	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी (संबंधित जिले के लिए)	संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा (संबंधित मंडल के लिए)
5.	प्रधानाचार्य, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाईट) संबंधित जिले के लिए	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी (संबंधित जिले के लिए)
6.	जिला शिक्षा अधिकारी, प्राशि. (मुख्यालय) (संबंधित जिले के लिए)	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी (संबंधित जिले के लिए)
7.	मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (संबंधित ब्लॉक के लिए)	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी (संबंधित जिले के लिए)

ये आदेश तुरन्त प्रभाव से लागू होंगे।

● निदेशक प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/प्रारं/सूअ/सी/विविध/18/1 दिनांक : 13-12-2018

3. राज्य स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन की तिथि : 01-02 फरवरी 2019 निर्धारित।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● आदेश ● विषयः राज्य स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन की तिथि 01-02 फरवरी-2019 निर्धारित। ● क्रमांक- शिविरा/माध्य/मा-स/22418/शिविरा पंचांग/2018-19/199-दिनांक 13.12.18

इस कार्यालय के समसंख्यक आदेशांक : 186, दिनांकः 08.10.2018 के द्वारा सत्रः 2018-19 हेतु राज्य स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन की पूर्व घोषित आयोजन दिनांकः 26-27 अक्टूबर 2018 को आगामी आदेश तक स्थगित किया गया था। उक्त राज्य स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन के आयोजन हेतु एतद् द्वारा दिनांकः 01-02 फरवरी, 2019 की तिथियाँ निर्धारित की जाती हैं।

समस्त सम्बन्धित उक्तानुसार पालना सुनिश्चित करें।

● **(नथमल डिडेल) आई.ए.एस.**, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

माह : जनवरी, 2019	विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम	प्रसारण समय : दोपहर 12.40 से 1.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ का नाम
01.01.2019 से 07.01.2019 तक शीतकालीन अवकाश					
08.01.2019	मंगलवार	जयपुर	12	राजनीति विज्ञान	परीक्षामाला
09.01.2019	बुधवार	जोधपुर	12	जीव विज्ञान	परीक्षामाला
10.01.2019	गुरुवार	बीकानेर	12	हिन्दी अनिवार्य	परीक्षामाला
11.01.2019	शुक्रवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम	गुरु गोविन्द सिंह जयंती	
12.01.2019	शनिवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम	स्वामी विवेकानन्द जयंती (राष्ट्रीय युवा दिवस-उत्सव), कॅरियर डे	
14.01.2019	सोमवार	जोधपुर	12	भौतिक विज्ञान	परीक्षामाला
15.01.2019	मंगलवार	बीकानेर	गैरपाठ्यक्रम	मकर संक्रांति (उत्सव)	
16.01.2019	बुधवार	उदयपुर	12	व्यावसायिक अध्ययन	परीक्षामाला
17.01.2019	गुरुवार	जयपुर	12	हिन्दी साहित्य	परीक्षामाला
18.01.2019	शुक्रवार	जोधपुर	12	रसायन विज्ञान	परीक्षामाला
19.01.2019	शनिवार	बीकानेर	12	भूगोल	परीक्षामाला
21.01.2019	सोमवार	उदयपुर	12	अंग्रेजी अनिवार्य	परीक्षामाला
22.01.2019	मंगलवार	जयपुर	12	अर्थशास्त्र	परीक्षामाला
23.01.2019	बुधवार	जोधपुर	गैरपाठ्यक्रम	सुभाष चंद्र बोस जयंती, देश प्रेम दिवस (उत्सव)	
24.01.2019	गुरुवार	बीकानेर	12	इतिहास	परीक्षामाला
25.01.2019	शुक्रवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम	गणतंत्र दिवस	
26.01.2019	शनिवार			गणतंत्र दिवस (अवकाश-उत्सव अनिवार्य)	
28.01.2019	सोमवार	जयपुर	10	अंग्रेजी	परीक्षामाला
29.01.2019	मंगलवार	जोधपुर	10	विज्ञान	परीक्षामाला
30.01.2019	बुधवार	बीकानेर	गैरपाठ्यक्रम	शहीद दिवस	
31.01.2019	गुरुवार	उदयपुर	12	गणित	परीक्षामाला

कार्यदिवस-21 (प्रसारण-20, अन्य-01) अवकाश-10 (रविवार-04, अन्य-06) उत्सव-05 ● **निदेशक,** शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर।

जनवरी-2019					
रवि		6	13	20	27
सोम		7	14	21	28
मंगल	1	8	15	22	29
बुध	2	9	16	23	30
गुरु	3	10	17	24	31
शुक्र	4	11	18	25	
शनि	5	12	19	26	

शिविरा पञ्चाङ्ग जनवरी, 2019

जनवरी 2019 ● कार्य दिवस-21, रविवार-04, अवकाश-06, उत्सव-05

● **01 से 07 जनवरी-**शीतकालीन अवकाश, **05 जनवरी-**समुदाय जागृति दिवस-SMSA, **12 जनवरी-1.** स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (राष्ट्रीय युवा दिवस-उत्सव), कॅरियर डे का आयोजन (माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय), **13 जनवरी-** गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती(अवकाश- उत्सव), **14 से 17 जनवरी-**राज्य स्तरीय पं. दी. द. उ. विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी-2018 (SCERT), **15 जनवरी-**मकर सक्रान्ति (उत्सव), **15 से 21 जनवरी-** केजीबीवी. में शैक्षिक किशोरी मेलों का आयोजन-SMSA; **23 जनवरी-**सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती, देश प्रेम दिवस (उत्सव), **24 जनवरी-**'राष्ट्रीय बालिका दिवस' का आयोजन-SMSA, **26 जनवरी-**गणतंत्र दिवस (अवकाश-उत्सव अनिवार्य)। **29 से 31 जनवरी-**राज्यस्तरीय जीवन कौशल विकास बाल मेला (SCERT), **30 जनवरी-**शहीद दिवस (प्रात: 11.00 बजे दो मिनट का मौन) 'अध्यापिका मंच' की द्वितीय बैठक का आयोजन-SMSA। **नोट- 1.** द्वितीय योगात्मक आकलन का आयोजन-CCE/SIQE संचालित विद्यालयों में (माह के अन्तिम सप्ताह में)। **2.** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल उन्नयन की राज्यस्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन एवं विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का जिला स्तर पर आयोजन। **SMSA से सम्बन्धित कार्यक्रम:** केजीबीवी. शिक्षिकाओं हेतु कार्यशाला-SMSA

जीवन मूल्य

नैतिक शिक्षा के कारक

❒ सत्यनारायण पंवार

हमारे समाज में आधुनिकीकरण और प्रौद्योगिकीकरण के कारण हमारे आचार, विचार, रहन-सहन तथा खान-पान आदि बदल गए हैं। आधुनिक समय में विज्ञान ने स्वास्थ्य तथा प्रौद्योगिकीकरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है और मानव की उम्र को बढ़ा दिया है। आजकल गलाकाट प्रतिस्पर्धा, समाज में असंतोष, विदेशी सभ्यता के आक्रमण और पीढ़ियों के बढ़ते अन्तर के कारण नैतिक जीवन-मूल्यों का ह्रास हो रहा है। बढ़ती जनसंख्या के कारण भ्रष्टाचार, अन्याय, हिंसा, लोभ, स्वार्थ, दुराचार, तनावों, संघर्षों से हम पूर्णतः ग्रसित है।

आजकल लोगों का आर्थिक स्तर तो ऊपर उठ रहा है लेकिन उनके नैतिक गुणों में ह्रास क्यों हो रहा है? हमारे देश में चारों ओर संदेह, घृणा और असुरक्षा का वातावरण दिखाई दे रहा है। आज का बालक कल का राष्ट्र निर्माता है। बालक की शिक्षा में बौद्धिक, शारीरिक एवं भावनात्मक शक्तियों को विकसित करना पड़ता है लेकिन पाठ्यक्रमों में नैतिक शिक्षा नाम मात्र की रह गई है। इतना ही नहीं मूल्यों की शिक्षा पुस्तकों के द्वारा मात्र बुद्धिपरक न होकर मानव हृदय में अनुभूत हो। शिक्षा का मूल उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होना चाहिए जो बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक इन चारों पक्षों से मिलकर बनना चाहिए। वास्तव में आज शिक्षा व्यवसाय बनकर रह गई जिसमें व्यक्ति का सर्वांगीण विकास उपेक्षित है और अध्यापक केवल बच्चों को पढ़ाकर बोर्ड का सर्टिफिकेट दिलाने में लगा है।

मूल्यपरक शिक्षा लच्छेदार भाषण देने आदर्शता का ढोंग करने से या सिर्फ योजना बनाने से संभव नहीं है। मूल्यपरक शिक्षा की पृष्ठभूमि तो कर्त्तव्यपरायणता, त्याग, सहयोग, सहनशीलता, विनम्रता, समता आदि गुणों से तैयार होती है। इन गुणों का अनुपालन व्यक्ति स्वयं, अभिभावक, समुदाय और शिक्षा संस्थाएँ सभी अपने-अपने स्तर पर निरन्तर प्रयास करें। अतः हमें विद्यार्थियों को ऐसी औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा प्रदान करनी चाहिए जो हमारे उचित सामंजस्य और समन्वित प्रयासों से ही संभव है। इस गुणवत्तायुक्त शिक्षा के द्वारा व्यक्ति आत्मनिर्भर बन सुयोग्य नागरिक बने जिससे उसके मन में देश में उसकी संस्कृति के प्रति प्रेम विकसित हो। इतना ही नहीं इस शिक्षा के द्वारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना एवं श्रम के प्रति आदर भाव उत्पन्न करना अतिआवश्यक है। गुणात्मक शिक्षा के लिए पाँच उत्तरदायी कारक है।

समाजः- मानवीय गुणों का स्तर सीधा समाज के स्तर से जुड़ा हुआ है। जिन परम्पराओं को समाज अपनाएगा, वे ही सामाजिक सम्मान की प्रतीक होगी। आजकल हमने भौतिक सुख-सुविधाओं को अपने सम्मान का प्रतीक माना है जिसके कारण लोगों में बौद्धिक, मानवीय एवं सांस्कृतिक मूल्य समाज में प्रतिष्ठा के प्रतीक नहीं बन सके। अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए हम कोई निन्दनीय कृत्यों को करने के लिए तैयार हो जाते है। इतना ही नहीं समाज में अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए आदमी अपनी तनख्वाह ज्यादा बताएगा और औरतें अपनी उम्र कम बताएगी। आजकल गरीब लोग भी अपने बच्चों को महंगी अंग्रेजी माध्यम वाली स्कूल में भर्ती करवाना चाहते हैं। वास्तव में समाज में झूठ बोलने वाला मानव अपनी आत्मा का हनन तो करता ही है लेकिन जिसे झूठ बोलता है उसे गुमराह करता है। समाज की प्राचीन परम्पराओं को मानने वाले लोगों को लोग रुढ़िवादी, दकियानूसी, संकीर्ण कहेंगे। आजकल लोग स्मगलिंग करके पैसा कमाते है तो उन लोगों की समाज में धनवान होने की प्रतिष्ठा मिलती है। ऐसे धंधे वाले पैसों के जोर से नेता बन जाते है। समाज के ठेकेदारों को जनता के सामने आदर्श प्रस्तुत करना होगा और बढ़ती जनसंख्या पर नियंत्रण करना होगा तभी गुणवत्तायुक्त शिक्षा सार्थक होगी।

अभिभावकः- सभी स्कूलों में अध्यापक पाठ्यक्रम परीक्षाएँ ग्रेड और सर्टिफिकेट आदि कार्यों में इतने व्यस्त रहते है कि उन्हें नैतिक जीवन मूल्यों की शिक्षा देने का समय ही नहीं मिलता। वास्तव में बच्चों के प्रथम गुरु उनके माँ-बाप होते हैं इसलिए उन्हें सर्वाधिक जाग्रत रहने की आवश्यकता है। इतना ही नहीं बच्चे 18 घंटे अभिभावकों के साथ घर में रहते हैं और सिर्फ 6 घंटे स्कूल में रहते है। इसलिए अभिभावकों का यह उत्तरदायित्व हो जाता है कि वे उन्हें नैतिक जीवन मूल्यों से अवगत कराएँ। घर में ऐसा वातावरण उपलब्ध कराएँ जिससे उनके बच्चों को नैतिक जीवन-मूल्यों की शिक्षा मिले।

वास्तव में बच्चों को मारना या झिड़कना महापाप है क्योंकि ऐसे व्यवहार से बच्चों के सर्वांगीण विकास की जगह सर्वांगी ह्रास होने लगता है। श्रेष्ठ अभिभावक अपने बच्चों के लालन-पालन, संस्कार, शिष्टाचार और लोक व्यवहार के प्रति संवेदनशील होते हैं और घर में ऐसा वातावरण पैदा कर देते है कि बच्चों को नैतिक जीवन मूल्यों की शिक्षा मिलती रहे जिसे हम अच्छे संस्कारों के नाम से पुकारते हैं।

आजकल गरीब अभिभावक अपनी रोजी-रोटी के चक्कर में पड़ा रहता है और धनवान अभिभावक अपने व्यापार में व्यस्त रहता है इसलिए अभिभावकों को अपने बच्चों को नैतिक जीवन-मूल्यों की शिक्षा देने का समय कम मिलता है। अधिकतर मध्यम श्रेणी के बच्चों को अच्छा नागरिक बनाने में बच्चों को नैतिक-मूल्यों की शिक्षा नहीं मिले तो वे चोरी, धोखाधड़ी के धंधों में संलग्न हो जाते हैं। बड़े होकर रिश्वत, कालाबाजारी और तस्करी के धंधे करने लगते हैं जिन्हें हम अच्छे नागरिक नहीं कह सकते।

विद्यालयः- गुणात्मक शिक्षा का सर्वप्रथम उत्तरदायी कारक है-शिक्षण संस्थाएँ जिनका शैक्षिक वातावरण और उनके अध्यापक विद्यार्थियों को प्रभावित करते हैं। विद्यालय की

प्रातःकालीन प्रार्थना सभा, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यसहगामी गतिविधियाँ, सभी राष्ट्रीय और धार्मिक पर्वोत्सव का आयोजन, कार्यानुभव, खेलकूद और समाज सेवा इत्यादि के द्वारा जीवन-मूल्यों को सिखाया ही न जाए बल्कि आत्मसात किए जाए। विद्यालय के सम्पूर्ण वातावरण को मूल्यपरक शिक्षायुक्त बनाया जाए। प्रधानाध्यापक, शिक्षक और छात्र एकरस होकर मूल्य शिक्षा के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन करें। कुछ सह पाठ्यगामी क्रियाओं में मौन बैठक, प्रेरक प्रसंग, कहानी, कथन, विभिन्न भाषाओं में प्रार्थनाएँ, सामूहिक राष्ट्रीय गीत गायन, मूल्यपरक पुस्तकों का परिचय, आशुभाषण, वाद-विवाद प्रतिभा प्रतियोगिताओं का आयोजन, चलचित्र प्रदर्शन, सेमिनार, सृजनात्मक लेखन, शैक्षिक भ्रमण, N.S.S. व N.C.C. और स्काउट केम्पों का आयोजन किया जाए। इन आयोजनों में प्रधानाध्यापक शिक्षक एवं सभी छात्रों को उपस्थित रहकर आदर्श उपस्थित करना चाहिए। विद्यालय के संसाधनों के सदुपयोग तथा सामुदायिक साधनों के द्वारा गुणात्मक शिक्षा का कारक बने।

विद्यार्थी:-श्रेष्ठ विद्यालय के कुशल प्राचार्य, ईमानदार अध्यापकों द्वारा गुणात्मक शिक्षा तो दी जा सकती है लेकिन विद्यार्थियों में भी ऐसे गुण होने चाहिए कि उस मूल्यपरक शिक्षा को ग्रहण करके अपने जीवन में उपयोग करे। विद्यार्थी जीवन में समय का बहुत बड़ा महत्त्व है इसलिए सभी विद्यार्थियों को उस समय का सदुपयोग करना चाहिए। विद्यार्थियों के पाँच लक्षण होते हैं। कुत्ते के समान सोने वाला, बगुले के समान ध्यानमग्न रहने वाला, कौवे के समान चेष्टाशील, कम खाने वाला तथा ज्ञानार्जन हेतु त्याग करने वाला। विद्यार्थी को कुत्ते की तरह सोने के समय भी सतर्क रहना चाहिए। जिससे 'खट' की आवाज सुनते ही उठ जाना चाहिए। अधिक सोने का आलस्य से निकट सम्बन्ध। आलस्य मनुष्य के शरीर में बसा शत्रु है और उद्यम मनुष्य का भाई है। जिस प्रकार बगुला अपने शिकार के निशाने पर ध्यान रखता है उसी प्रकार विद्यार्थी को अपने ध्येय पर निगाहें गड़ाए रखनी चाहिए। कहा जाता है कि कौवा अत्यंत चेष्टाशील होता है। इस बात की पुष्टि के लिए एक कहानी है जिसमें एक प्यासा कौआ, पानी से आधी भरी सुराही में कंकड़ों को डालकर पानी की सतह को ऊपर करके पानी पी लेता है। धीरज चेष्टा में सहायक होती है। अल्पहारी-विद्यार्थी को कम खाना चाहिए। अधिक आहार का निद्रा तथा आलस्य से गहरा सम्बन्ध है। अधिक निद्रा और आलस विद्यार्थी जीवन के दुश्मन हैं। ज्ञानार्जन हेतु त्याग- जो विद्यार्थी सुखी रहना चाहता है वह विद्या का त्याग दें और जो विद्यार्थी ज्ञानार्जन करना चाहता है वह सुख को छोड़ दें।

श्रम ही सो सब मिलते है, बिन श्रम मिले न काहि।
टेढ़ी उंगली बिन किए, जैसे घी निकलता नाहि।।

गुणवत्तायुक्त शिक्षा विद्यार्थियों के उत्थान के लिए है। अतः विद्यार्थियों को अपना लक्ष्य निर्धारित कर तन-मन से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। इसके लिए टी.वी. संस्कृति से मुक्त होकर 'अध्ययन संस्कृति' अपनानी चाहिए। इतना ही नहीं उनका सद्साहित्य की ओर झुकाव होना चाहिए। विद्यालय में नियमित रूप से उपस्थित होना चाहिए और गलत संगत से दूर रहना चाहिए। उन्हें अपने अर्जित ज्ञान के पुनर्बलन और आत्मीकरण के लिए आत्मविश्वास के साथ अध्ययन और अभ्यास करना होगा। जिससे वे अच्छे नागरिक बने।

अध्यापक:- अध्यापकों को शिक्षा प्रदान करते वक्त मूल्यपरक पाठ्यक्रम को प्रभावित शिक्षणविधि का प्रयोग करना चाहिए। इतना ही नहीं सभी अध्यापकों को खुले दिमाग वाला, संवेदनशील, व्यवहारिक सोच वाला और पूर्वाग्रहों से मुक्त होना चाहिए। सभी प्रधानाध्यापकों और अध्यापकों को स्वयं को आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए जिसका प्रभाव सभी छात्रों पर पड़े। उसमें अपने विचारों को अभिव्यक्त और प्रभावित करने की योग्यता हो, पढ़ाने में रुचि हो और छात्रों में आवश्यक परिवर्तन लाने की योग्यता हो तभी मूल्यपरक शिक्षा के द्वारा छात्रों को अच्छा नागरिक बना पाएगा। अध्यापकों को निरपेक्ष व्यवहार रखना चाहिए और उसे छात्रों के प्रति उच्चाकांक्षी होना चाहिए। हमारे देश के सभी अध्यापक यह सोच ले कि उनके पढ़ाए हुए छात्र सभी मानव मूल्यों से परिपूर्ण होकर राष्ट्र का विकास करें।

उपर्युक्त पाँच उत्तरदायी कारकों के द्वारा नैतिक शिक्षा दी नहीं जा सकती वरन् ये तो प्राप्त की जा सकती है। किसी ने ठीक ही कहा है कि ''Values are not taught but they are caught'' अतः उपर्युक्त कारकों को अनुकरण द्वारा सीखने के लिए वातावरण बनाने की आवश्यकता है। परिवार का स्वस्थ व सुखद वातावरण बच्चे का विकास करता है जो उसके सम्पूर्ण जीवन को स्थायित्व व दृढ़ता प्रदान करता है। खासकर अभिभावकों को प्रेरणास्पद महापुरुषों के जीवन की घटनाओं से परिचित कराने के लिए कहानियों का सहारा लेना चाहिए। विद्यालय में चित्रों, पोस्टरों, फिल्मों, स्लाइडों, गीतों आदि के प्रयोगों से नैतिक शिक्षा के लिए वातावरण बनाया जाय। छात्रों को खासकर प्रार्थना सभा में हर रोज नैतिक शिक्षा की कहानियाँ सुनाई जाय। विद्यार्थियों में स्वाध्याय की आदत डालनी चाहिए जिससे वे नैतिक शिक्षा की कहानियाँ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित हो। मौखिक कथा वाचकों और कहानी कहने वालों को विद्यालय में आमंत्रित करना चाहिए। अध्यापक ही अच्छे उदाहरण के द्वारा बोलने और पढ़ाने से ज्यादा अच्छा समझा और सीखा जा सकता है। अध्यापकों को गोष्ठियों में विचार-विमर्श द्वारा समय-समय पर कहानियाँ सुनाकर बालकों में अच्छे संस्कार दे सकता है। ज्ञान के साथ संस्कार का जुड़ना और अनुभव के साथ आचरण का जुड़ना ही शिक्षा का उद्देश्य है।

प्राचीनकाल में हमारी शिक्षा पद्धति नैतिक मूल्यों पर ही आधारित थी परन्तु आधुनिकता के इस दौर में प्रत्येक सम्बन्ध व्यापारिक दृष्टि से लिया जाता है इसलिए प्रत्येक विद्यालय के प्रत्येक अध्यापक को नैतिक शिक्षा के लिए विद्यार्थियों को पढ़ाते समय और अन्य सुअवसरों पर कहानी के माध्यम से बच्चों को नैतिक शिक्षा देनी चाहिए। आवश्यकता है मौखिक कथाओं से विद्यार्थियों, अर्द्ध-शिक्षितों तथा अनपढ़ों को प्रभावित किया जाए और जीवन में अच्छे संस्कारों को कहानियों के माध्यम से उत्पन्न किया जाए। भाषणों, प्रवचनों और उपदेशों की बौछार, तेज वर्षा की भाँति बह जाती है, उससे मानव मानस उर्वर नहीं हो सकता, परन्तु कहानियाँ रिमझिम करती मधुर

वर्षा मानस को सींचकर ज्ञान और अनुभव के नए अंकुर उत्पन्न कर सकती है। अस्तु यह कहने में संकोच नहीं कि जब जीवन एक कहानी है तो कहानी से ही सुधर सकता है और सभी कारकों को खासकर अध्यापकों को कथा शैली का ही अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। अध्यापकों को नैतिक शिक्षा की कहानियाँ ढूँढ़ने में समय लगता है इसलिए इस पुस्तक में चुनी लघुकथाओं को प्रस्तुत किया जा रहा है जिसमें व्यक्तिगत नैतिक मूल्यों, सामाजिक नैतिक मूल्यों और राष्ट्रीय नैतिक मूल्यों की शिक्षा का समावेश है।

गुणात्मक शिक्षा के उत्तरदायी उपर्युक्त कारकों को किसी जाति, समाज, राष्ट्र, लिंग, सम्प्रदाय के प्रति पूर्वाग्रहों से मुक्त रहना चाहिए। उनके विचार खुले और विस्तृत होने चाहिए। गुणवत्तायुक्त शिक्षा द्वारा सभी शिक्षित सही अर्थों में विकसित, प्रबुद्ध एवं उपयोगी सदस्य हों। इन लोगों में अपने समाज और समुदाय में द्रुतगति से आई चुनौतियों का सामना करने की शक्ति हो।

शिक्षा में गुणवत्ता द्वारा व्यक्ति में मानवीयता, बंधुत्व एवं सहिष्णुता से परिपूर्ण दृष्टिकोण विकसित करें। इतना ही नहीं गुणवत्ता युक्त शिक्षा के द्वारा राष्ट्रीयता का गौरव उत्पन्न करना, मूल्यों की शिक्षा देना, पर्यावरण संसाधन, जनसंख्या एवं स्वास्थ्य संबंधी संचेतना उत्पन्न करना तथा वैश्विक सरोकारों के प्रति जागरूक करना चाहिए।

आज राष्ट्रीय वातावरण को देखते हुए हमें आवश्यकता है कि हम समय रहते चेत जाए और बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण व विकास हेतु शून्य पड़े क्षेत्रों में भी अपनी सक्रियता दिखाए तथा एक सुसंस्कृरित भावी पीढ़ी तैयार करके देश को सौंपे। तभी व्यक्ति, समाज और देश का विकास होगा हम सभी जिसमें खासकर, मीडिया शिक्षा की गुणवत्ता के लिए समर्पित रहेंगे, जिससे हमारा देश ऊँचाइयों के शिखर पर पहुँचेगा।

शिक्षा अधिकारी (से.नि.)
68, गोल्फ कोर्स स्कीम, जोधपुर-342011
फोनः 0295-2670659

निवेश

कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय का निवेशक जागरूकता कार्यक्रम

❐ पूजा सिंह व रोशन लाल मीना

निवेशक जब अपनी पूँजी का निवेश करने के बारे में सोचता है तो उसके सामने हजारों की संख्या में व्यवसायिक संस्थान होते हैं। निवेशक कई बार लोभ, लालच अथवा अज्ञानता, अल्पज्ञान वश अपन पैसा गलत प्रकार से अथवा गलत लोगों के साथ लगा देते हैं और सारा धन खो बैठते हैं।

निवेशकों की धन की सुरक्षा हेतु भारत सरकार एवं भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा निवेशकों को जानकारी देने के लिए स्थान-स्थान पर निवेशक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं और समय-समय पर निवेश के हित में मार्गदर्शन जारी किए जाते हैं। निवेशकों को अपंजीकृत और अनिगमित संस्थाओं में धन जमा ना कराने, अवास्तविक बड़े रिटर्न्स के आश्वासनों के प्रलोभन में ना आने, ऐसे किसी आनलाइन स्कीम का हिस्सा ना बनने जो धन जमा करने और उच्च लाभ देने का वायदा करती हो उनसे सचेत रहने की जानकारी दी जाती है।

भारतीय रिज़र्व बैंक या अन्य बैंकों द्वारा किसी भी व्यक्तिगत जानकारी जैसे बैंक खाते का ब्यौरा, पासवर्ड आदि नहीं माँगा जाता है। बैंक धन रखने या देने का प्रस्ताव भी नहीं करता हैं। अतः ऐसी किसी सूचना का जवाब नहीं देवें। कम्पनी अधिनियम में भी निवेशकों की जागरूकता और उनके हितों के संरक्षण के लिए निवेशक शिक्षा एवं संरक्षण कोष (आईईपीएफ) की स्थापना का प्रावधान किया हैं। मंत्रालय (क) भारतीय चार्टर्ड एकाउंट्स संस्थान (ख) भारतीय कम्पनी सचिव संस्थान और (ग) भारतीय लागत लेखा संस्थान जैसी तीन पेशेवर संस्थानों के साथ मिलकर निवेशक जागरूकता कार्यक्रम, निवेशक शिक्षा एवं संरक्षण (आईपीपी) का आयोजन करता रहता हैं। आईईपी के आयोजन के साथ-साथ दूरदर्शन के समाचार और क्षेत्रीय चैनलों पर संदेशों, आकाशवाणी पर संदेशों का प्रसारण आदि कई प्रकार के नए प्रयास शुरू किए गए हैं ताकि गलत तरीके से धन जमा करने वाली संस्थाओं के प्रति निवेशकों में जागरूकता की जानकारी हो सके।

कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय मुख्य रूप से कम्पनी अधिनियम 1956, 2013 एवं एलएलपी एक्ट, 2008 तथा इससे संबंधित अधिनियम एवं इनसे संबंधित बनाए गए रूल्स एवं रेग्युलेशन के अनुसार कंपनियों एवं एलएलपी द्वारा किए जाने वाले कार्यकलापों को उक्त अधिनियमों के अनुसार होना सुनिश्चित करने के लिए निगरानी करता हैं। मंत्रालय द्वारा निवेशकों को अपने निवेश के सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई शिकायत हैं तो उसके लिए मंत्रालय ने निवेशकों की शिकायतों का निपटारा करने के लिए विशेष उठा रखे हैं। इस संबंध में कोई भी निवेशक अपनी शिकायत संबंधी कम्पनी रजिस्ट्रार अथवा मंत्रालय को लिखित में शिकायत दे सकते हैं, इसके अतिरिक्त निवेशक अपनी शिकायत इलेक्ट्रॉनिक मोड में ऑनलाइन भी भेज सकते हैं। आनलाइन शिकायत के लिए मंत्रालय की वेबसाइट पर Public Grievances का लिंक दिया गया हैं। मंत्रालय अथवा कम्पनी रजिस्ट्रार में प्राप्त शिकायतों का नियमानुसार निपटारा किया किया जाता हैं एवं इसकी सूचना संबंधित निवेशकों को भी प्रेषित की जाती हैं। निवेशक अपने द्वारा आनलाइन की गयी शिकायत से संबंधित विवरण आनलाइन भी देख सकते हैं।

निवेशकों की धन की सुरक्षा हेतु निवेश करते समय किसी भी संस्था के वित्तीय विवरण, रोकड़ प्रवाह विवरण, कम्पनी की तरलता, शोधन क्षमता तथा पर्याप्त सम्पत्ति आधार का सावधानीपूर्वक अवलोकन करना चाहिए। इसके अलावा विभिन्न संस्थाओं द्वारा दी गयी क्रेडिट रेटिंग तथा मूल्यांकन रिपोर्ट का भी अवलोकन करना चाहिए। अप्रैल 2006 से कारपोरेट कार्य मंत्रालय द्वारा ऐसी सुविधा उपलब्ध करा दी गयी हैं कि वे कम्पनी अधिनियम 1956/2013 एवं एलएलपी. एक्ट, 2008 के अन्तर्गत पंजीकृत होने वाली कंपनियों एवं एलएलपी द्वारा फाइल किए जाने वाले समस्त दस्तावेज मंत्रालय की वेबसाइट www.mca.gov.in पर उपलब्ध होंगे, जिनका निरीक्षण मंत्रालय की वेबसाइट www.mca.gov.in पर किया जा सकता हैं। अपने कीमती धन की सुरक्षा करें।

कनिष्ठ तकनीकी सहायक
वरिष्ठ लिपिक, कार्यालय कम्पनी रजिस्ट्रार-सह-शासकीय समापक राजस्थान, जयपुर
फोनः 0141-2981914

नारी शक्ति

नारी नर से महान है

❐ शशिकान्त द्विवेदी 'आमेटा'

जयशंकर प्रसाद ने नारी को श्रद्धा के रूप में देखा और कहा–

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में।।

भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान सबसे उत्कृष्ट माना जाता है, क्योंकि वह सृष्टि की सृजनकर्त्ता व पालनकर्त्ता है। भारतीय भावना नारी के सर्वोच्च सम्मान की भावना है। नारी पर सृष्टि उत्पादन का भार है। नारी राष्ट्र की ध्वजा है, वह समाज का मस्तक है, वह प्रचण्ड शक्ति है, वह मानवता की परिभाषा है, वह राष्ट्र का निर्माण करने वाली है। 'स्त्री राष्ट्रस्य सुदृढ़ा शक्ति सामंजस्य धारिणी नारायणी।'– नारी को नारायणी कहा गया है। नारी तो श्रद्धा का केन्द्र है। जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवता विचरण करते हैं और जहाँ नारी का अपमान होता है, वह स्थान श्मशान बन जाता है। लंका तथा कुरुक्षेत्र इसके साक्षात् उदाहरण है। कहा गया है–'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमंते तत्र देवताः।' नारी प्रेम, दया, श्रद्धा एवं त्याग की प्रतिमूर्ति है। भारतीय संस्कृति में नारी एक विशिष्ट गौरवपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित है। हिन्दु संस्कृति में पुरुष मर्यादा से नारी मर्यादा सदा ही उत्कृष्ट मानी गई है। महिलाएँ किसी भी लिहाज से पुरुषों से पीछे नहीं हैं।

तैतरीय उपनिषद् में कहा गया है–'मातृ देवो भव।' नारी एक शरीर नहीं, बल्कि भगवती शक्ति है। किसी ने सही कहा है कि भगवान हर जगह नहीं हो सकता, इसलिए उसने 'माँ' को बनाया है। महिला के अभाव में सृष्टि की कल्पना नहीं की जा सकती। महिला कामधेनु है, अन्नपूर्णा है, ऋद्धि है, सिद्धि है। प्राचीन भारत में महिलाओं को उच्च स्थान प्राप्त था। हमारे धार्मिक ग्रन्थों में भी नारी शक्ति पुञ्ज है। माँ सरस्वती विद्या की देवी, लक्ष्मीजी धन की देवी, दुर्गा शक्ति स्वरूपिणी इत्यादि सर्वत्र पूज्य हैं। मनुष्य का वाम भाग नारी है। नारी महिमा महान

है। नारी इस सृष्टि का सौन्दर्य है।

भारत गार्गी, मैत्रेयी जैसी विदुषी नारियों के कारण विश्व का गुरु कहलाता था। आज हमने इस तथ्य को भुला दिया है, जिसके कारण हम सम्पूर्ण विश्व के सिरमौर थे। इसके मूल में जो कारण था, वह था 'नारियों की सक्रिय सहभागिता।' उस युग में स्त्री व पुरुष समान रूप से विद्वता प्राप्त कर, ज्ञान रूपी प्रकाश पुञ्ज से इस जगत को आलोकित करते थे। यद्यपि भारत के समस्त नीति ग्रन्थ व धर्मशास्त्र स्त्री सम्मान के पोषक रहे हैं। नर–नारी एक दूजे के परिपूरक, संयोजक कड़ी हैं। महिला पुरुषों की संगिनी होती है। कहा गया है ''जिसके साथ न रहती नारी, वह न जाने दुनियादारी, आदमी मात्र एक पुतला है, इंसान उसे बनाती नारी।''

वर्तमान समय में नारी केवल अबला नही, वह शक्ति है। महिलाओं के सम्मान व स्वाभिमान की रक्षा के सम्बन्ध में भारतीय समाज हमेशा संवेदनशील रहा है। भारतीय नारियाँ पवित्र व त्यागमूर्ति हैं। वह जननी ही नहीं, बच्चों की प्रथम विवेकानन्द गुरु भी है। किसी भी समाज, राज्य, राष्ट्र के नागरिकों की परम्परा, संस्कृति और जीवन स्तर का दर्पण है, शिक्षा। यही उस नींव का पत्थर है, जिस पर सभ्यता के भव्य महल का निर्माण किया जा सकता है। इस समय की शिक्षा प्रणाली बालिकाओं को विकृति की ओर ले जा रही है। इस शिक्षा के कोहरे में अपने प्राचीन गौरव व स्वरूप को नहीं देख पा रही हैं 'हम पुरुषों से किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है।' आज की शिक्षा में धर्म एवं नैतिकता का कोई स्थान नहीं है। शिक्षा के इस उद्देश्य के अनुसार बालिकाओं के भीतर विद्यमान प्रतिभा को विकसित कर देने वाली शिक्षा ही सर्वोत्कृष्ट है। दुर्गासप्तशती में कहा गया है 'विद्यासमस्तास्तव देवि भेदाः। स्त्रियः समस्ता सकला जगत्सु।।' अर्थात् संसार की समस्त विद्याएँ तथा समस्त स्त्रियाँ जगन्माता के ही भेद हैं।

स्वामी विवेकानन्द ने प्राचीन भारत में स्त्री शिक्षा के उज्ज्वल आदर्शों की भूरि–भूरि प्रशंसा की है। उनके अनुसार उपनिषदों में प्राप्त गार्गी, मैत्रेयी आदि ब्रह्मवादिनियों के समक्ष पश्चिमी नारी की स्वतन्त्रता कुछ भी नहीं है। उन्होंने कहा है, 'क्या वनों में स्थित पुरातन विश्वविद्यालयों, लड़के एवं लड़कियों की समानता से अधिक पूर्ण कुछ और हो सकता है? उन्होंने स्पष्ट कहा है कि स्त्रियों में शिक्षा का प्रसार किए बिना किसी भी राष्ट्र की उन्नति सम्भव नहीं है। स्त्रियों के सम्मान के कारण ही अमरीका इतना आगे बढ़ सका है। बालिकाओं की शिक्षा कैसी होनी चाहिए, इस पर विचार करने से पूर्व यह जानना आवश्यक है कि शिक्षा का उद्देश्य क्या है? शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के अन्दर बीज रूप में विद्यमान शक्ति को बाहर लाकर पुष्पित पल्लवित करना है। वर्तमान समय के शिक्षा–शास्त्रियों का ध्यान भी इस ओर गया है, तभी तो वे कहते हैं कि बच्चों को उनकी अभिरुचि के अनुसार शिक्षा दी जानी चाहिए।

हमारे देश में महिलाएँ लगभग सभी क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। शिक्षा ने उन्हें स्वावलम्बी बनाया है, पर अभी उनका आत्मबल उतना मजबूत नहीं हो सका है। अभी भी समाज में बालिका को वह सम्बल नहीं मिल पाया जिसकी वस्तुतः जरूरत है। बेटियों को बचाना है तो उन्हें पढ़ाना होगा। समाज के हर तबके को इस बारे में शिक्षित करना होगा। उनको मौके देने होंगे। वे अगर आगे बढ़ेगी तो समाज और देश आगे बढ़ेगा। वैसे सच पूछो तो शिक्षित नारी ने पुरुष श्रेष्ठता के समक्ष एक बड़ा प्रश्न चिह्न लगाया है। पुरुष एकाधिकार लड़खड़ाने लगा है। अब महिला शिक्षा के महत्त्व को व्यापक स्वीकृति मिल गई है। बालिका शिक्षा

को प्रोन्नत करने की दिशा में सरकार सदैव कृतसंकल्पित रही है यही कारण है कि सरकार की पहल पर बालिका हितैषी योजनाएँ संचालित हैं तथा नई-नई योजनाओं का सूत्रपात किया जा रहा है।

भारतीय समाज तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। महिलाएँ समाज में कई रूपों में अपनी भूमिका का निर्वाह करती हैं। भारतीय स्त्रियाँ तेजी से बदल रही हैं और बदली है उनकी मानसिकता भी। आज की नारी समय के साथ बदल चुकी है। वह समय के साथ कदम भर रही है। राष्ट्रीय विकास में महिलाओं की भागीदारी है। देश का आर्थिक एवं सामाजिक विकास तभी होगा जब हम महिलाओं को समान स्तर देंगे। कोई भी राष्ट्र महिलाओं की उपेक्षा करके विकास की सीढ़ियाँ नहीं चढ़ सकता। देश व समाज केवल पुरुषों की अहम् भावना से सशक्त नहीं हो सकता। देश की महिलाओं में उल्लेखनीय परिवर्तन आए हैं। समाज उनकी भूमिका व योगदान को स्वीकार करने लगा है। स्त्री का कार्य चाहे घर के भीतर हो या बाहर, हर दृष्टि से मूल्यवान है। जब तक यह बात सर्वमान्य ढंग से स्वीकार नहीं की जाएगी, भारतीय महिलाओं के श्रम बल की यूँ ही अवहेलना होती रहेगी, तब तक एक स्वस्थ और लोकतान्त्रिक समाज की स्थापना केवल सपना ही बना रहेगा।

महिलाओं में चेतना का प्रसार हुआ है। वे हर क्षेत्र में अपना प्रभाव व दखल बढ़ाने के लिए प्रयासरत है। वैदिक संस्कृति में माता को निर्माता अर्थात् संसार का निर्माण करने वाली माना गया है। आप की प्रथम गुरु आपकी माता है। हमारे शास्त्रकारों ने माता को एक साँचा माना है, जिसमें इच्छानुसार संतान को ढाला जा सकता है। व्यक्ति का वास्तविक निर्माण संस्कारों के द्वारा होता है और संस्कार भी सर्वाधिक माता के द्वारा बच्चों पर पड़ते हैं, यह सर्वमान्य बात है। माँ शब्द का सीधा सम्बन्ध ममत्व से है। ममत्व का ममता से सीधा नाता है। बच्चा जब बोलना शुरू करता है तो मम् शब्द से शुरू करता है। संस्कृत में 'मम्' का अर्थ मेरा होता है। 'माँ सम दूजा न कोय' अथर्ववेद में प्रभु को यह निर्देश दिया गया है कि माता के कहने के अनुसार चलें। माता परिवार की धुरी है। माता अपनी मीठी बोली से रोचक कहानियाँ तथा अपनी शिक्षाओं से अपनी संतान का सही प्रकार से सामाजीकरण करने को सदा प्रयत्नशील रहती है। बच्चे माता-पिता की आकांक्षाओं के प्रतीक होते हैं।

सन्तान की जननी स्त्रियाँ ही हैं। धर्म स्त्रियों में ही रहता है। स्त्रियाँ शक्तिरूपा है। संसार स्त्रियों में ही स्थित है, इसलिए स्त्रियाँ संसार की माता हैं। प्रकृति की अनन्त शक्ति माता में ही विराजमान है। 'मातृ देवो भवः' में आस्था रखने वाले देश मे आज नारी को भोगवाद की शृंखला में देखा जा रहा है। स्मृतिकारों ने माता का महत्त्व पिता से कई गुणा अधिक माना है 'पितुः दश गुणा माता गौरवेणातिरिच्यते।' माता ज्ञान की पहली सीढ़ी है। सारे शास्त्र नारी को 'देवी' कहते हैं। इसी से हमारे यहाँ नारी के नाम के साथ 'देवी' शब्द जोड़ने की प्रथा है। नारी की विडम्बना है कि मुझे पहले देवी कहा जाता था। देवी के स्थान पर बिठाकर फैसले मेरे लिए देव ही लिया करते थे। समस्त पुराणों में माता का स्थान देवताओं से भी उच्च तथा पवित्र बतलाया गया है।

अब्राहम लिंकन का कहना था कि-'मैं जो कुछ भी हूँ या होने की आशा रखता हूँ, उसका श्रेय मेरी माँ को जाता है।' समाज में ये शक्तियाँ हाशिए पर ला खड़ी कर दी गई हैं। इसी कारण मानवीय गुणों का इतना ह्रास हो गया कि नारी के प्रति मातृत्व भाव नष्ट होने के कगार पर हैं।

विज्ञान के इस युग में हमारी सोच अभी भी आदिम युग जैसी बनी हुई है। नारी के बिना समाज व देश की उन्नति सम्भव नहीं है। गाँधीजी ने कहा था नारी को अबला कहना उसका अपमान करना है। पितृसत्तात्मक सोच वाले कुछ लोग स्वीकार करते हैं कि अगर नारी आत्मनिर्भर होगी तो उनके नियन्त्रण को अस्वीकार कर देगी। आज वह अपने देश, अपने शहर, गाँव या कस्बे में अर्थात् हर जगह असुरक्षित है। प्रतिदिन दुष्कर्म की घटनाएँ सुनने को मिल ही जाती हैं। आखिर क्यों हो रहा है इतना अत्याचार महिलाओं के साथ। महिलाएँ आज भी पूरी तरह स्वतन्त्र नहीं हैं।

सन्त पुरुषों का कहना है कि नारी को स्वतन्त्रता दी जानी चाहिए। नारी को आगे बढ़ाना और आत्मनिर्भर बनाना अच्छी बात है, लेकिन उसे प्रचार या विज्ञापन का माध्यम बनाना हमारे संस्कार नहीं है। भ्रूण हत्या जैसी जघन्य घटनाओं को रोक कर भेदभाव खत्म करना होगा। भावी माँ जो भविष्य में गर्भ धारण कर सृष्टि का विस्तार करती है जन्म से पहले ही उसको मौत के हवाले कर दिया जाता है। इस सृष्टि को आगे चलाने में भगवान के बाद जिस शक्ति का नाम आता है, वो सशक्त नाम है- 'मातृ शक्ति'

भारत में इस समय महिलाएँ राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, मुख्यमंत्री, उच्च न्यायालयों में जज सरीखे कई उच्च पदों पर आसीन हैं या हुई है। स्वामी विवेकानन्द के इस कथन में एक गहरी सच्चाई है कि ''आप मुझे सौ सुशिक्षित माताएँ दीजिए, मैं भारतीय समाज का नक्शा ही बदल दूँगा।'' मजरुह सुल्तानपुरी ने लिखा भी है, ऐ माँ तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी...।

समाज में बहुत बड़ा बदलाव आया है। पहले माता-पिता का अंतिम संस्कार सिर्फ बेटे ही किया करते थे। जिनके बेटे नहीं होते थे, उनके नाते-रिश्तेदार ऐसा करते थे। मगर अब बेटियाँ भी अपने माता-पिता का अंतिम संस्कार करती है। 'लड़का-लड़की एक समान' वाली बात अब जरूर पूरी होती दिखाई दे रही है।

एक दृश्य बहुत द्रवित करने वाला था। एक बार दिल्ली में आन्दोलन के दौरान एक नन्हीं बालिका के हाथों में मौजूद तख्ती पर लिखा था, 'नजर तेरी गंदी और परदा मैं करूँ।' मुझे लगा कि इस बालिका ने तख्ती के जरिए समुचे पुरुष समाज को आईना दिखाया है।

वक्त रहते हमने स्वयं अपनी सोच को नहीं बदला तो वह दिन दूर नहीं कि जब समाज इतना बिखर जाएगा और परिस्थितियाँ इतनी प्रतिकूल हो जाएगी कि हम चाह के भी अपने समाज को सँवार नहीं पाएँगे। यही अवसर है सोचने और समझने का, ताकि हमारा वर्तमान खुशहाल तथा भविष्य सुरक्षित हो सके।

कोमल है, कमजोर नहीं तू शक्ति का नाम ही नारी है ..... गीत की इन पंक्तियों को आत्मसात कर कहा जा सकता है, 'हर कामयाब पुरुष के पीछे एक महिला का हाथ होता है।'

नारी तुम केवल श्रद्धा हो।.....

(से.नि.) प्राध्यापक (हिन्दी)
फोरेस्ट चौकी के पास, लोहारिया जिला-बाँसवाड़ा
(राज.)-327605
मो. 9460116012

शोध अध्ययन

परिवार में समरसता : आज की आवश्यकता

❐ प्रो. (डॉ.) जमनालाल बायती

कर्त्तव्यपालन या करणीय सदैव ही मधुर एवं आह्लादकारी होते हैं, पर केवल तब ही जबकि परिवार रूपी गाड़ी के पहिये में ग्रीस यथा समय तथा उपयुक्त मात्रा में दिया जाता रहे, जिससे वे मधुर लय के साथ बराबर गतिशील रहे। यहाँ ग्रीस पर कर्त्तव्यपालन के रूप में आज्ञा, व्यवहार, प्रेम, सद्भाव, त्याग आदि मानवीय गुणों पर विचार किया जाता है।

क्या माता-पिता आज अपनी सन्तान के प्रति, पति अपनी पत्नी के प्रति तथा पति-पत्नी अपनी संतान के प्रति दायित्वों एवं कर्त्तव्यों का निर्वाह कर रहे हैं- इसी भाँति माताएँ अपनी सन्तान के प्रति कर्त्तव्यों का निर्वाह कर रही हैं? कर्त्तव्य पालन मधुर है-मीठा है, पर केवल तब जबकि वह पूर्ण स्वतंत्रता के साथ, आह्लाद के साथ व्यक्त किया गया हो। इसके दूसरी ओर प्रतिदिन दैनिक जीवन में हर समय सदैव ही क्रोध, गुस्सा, ईर्ष्या और असंख्य अन्य महत्त्वहीन मानी जाने वाली घटनाएँ होती रहती है। प्रतिदिन जीवन में घटने वाली इन असंख्य घटनाओं की एक ही नियति होती है कि सहते रहिए।

इस बात पर विश्वास करने के पर्याप्त आधार है कि जो माता-पिता अपने बच्चों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अशोभनीय व्यवहार का अभ्यासी बना रहे हैं, गालियाँ दे रहे हैं, झिड़क रहे हैं, परिवारीजन के प्रति अनुचित व्यवहार कर रहे हैं-निश्चय ही वह अपनी सन्तान के साथ अपूरणीय क्षति कर रहे हैं। अपनी सन्तान को पड़ोसियों के बच्चों से कमतर आँकना, उनसे हीन मानना, उनकी योग्यता पर विश्वास नहीं करना, अपनी सन्तान की भावनाओं, उनके कार्यों को, उनके व्यवहारों को सही रूप में न मानकर, न समझ कर भावी पीढ़ी की अपूरणीय क्षति कर रहे हैं। माता-पिता या संरक्षकों में विचार भिन्नता, विद्यालयी विद्यार्थियों में सामाजिक समरसता को नष्ट करने वाली आदतें विकसित करना है। लेकिन यहाँ उन बच्चों के लिए क्या सोचा जाय, किस धरातल पर

विचार किया जाए जिनके माता-पिता सदैव ही भिन्न एवं अवांछनीय विचारों में खोये रहते हैं, पति-पत्नी के विचारों में साम्यता नहीं है, दोनों भिन्न विचार रखते हैं। यह प्रश्न उन एकाकी परिवारों के लिए, जो माता-पिता या सास-ससुर के साथ नहीं रहते हैं और भी अधिक महत्त्वपूर्ण बन जाता है।

एकाकी परिवारों (पति-पत्नी और सन्तान) में पाले पोसे गये बच्चों का व्यक्तित्व अन्य विचारों के बच्चों से कई क्षेत्रों में भिन्नता रखता है और यह भिन्नता भी कई क्षेत्रों में नकारात्मकता लिए होती है। शोध में पाया गया है कि ऐसे बच्चे अपने व्यवहार में अति सक्रिय, अति सावधान (सजग), अति व्याकुल एवं साथी मित्रों तथा भाई-बहिनों को हानि पहुँचाने में तनिक भी नहीं हिचकिचाते हैं, अपने व्यवहार में वे इसे सामान्य ही मानते हैं और अपने व्यवहार को वयस्कों के व्यवहार के समान बताकर गर्व अनुभव करते हैं।

इस शोध अध्ययन का स्पष्ट संकेत है कि माता-पिता के बीच छोटा सा विरोध भी मत भिन्नता भी शुभ नहीं हैं, सराहनीय नही हैं, शिशुओं और 5-7 वर्ष के बच्चों के विकास नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। पर माऊण्ट विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग के प्रोफेसर एलिस शेरमनहॉर्न के मार्गदर्शन में हुए शोध भी ऐसे ही निष्कर्ष बताती है। वे अपने निष्कर्षों को दो फलितार्थ के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यदि बच्चे विरोधाभास तथा डर के कारण सजग या सावचेत हो जाते हैं तो मान लीजिए कि किसी कष्ट की अग्रिम सूचना दे रहे हैं और वे उसे क्रोधी स्वभाव के रूप में प्रकट कर रहे हैं। कुछ भी हो, वे भविष्य की कठिन चुनौतियों की सूचनाएँ दे रहे हैं। फलतः ऐसे वातावरण में पाले पोसे गये बच्चे उग्र रूप से क्रोधी हो जाते हैं, ऐसे बच्चों का उपचार भी कठिन हो जाता हैं, वे वयस्कों की बात पर ध्यान नहीं देते हैं, उनके कहने के अनुसार अपने को बदलने के लिए तैयार ही नहीं होते, इतना ही नहीं बल्कि वे उनकी बात या संदेश को धैर्य के साथ सुनना भी नहीं चाहते। अब फिर उनका कहना मानने या उसके अनुसार व्यवहार बदलने का तो प्रश्न ही नहीं होता है।

बच्चों की व्यवहारकुशलता का अध्ययन करने के लिए उनके लेवल की जाँच की गई, अवलोकन किया गया, इसके लिए एक प्रश्नावली से सूचनाएँ प्राप्त की गई। सूचनाओं के विश्लेषण से पाया गया कि माता-पिता की अपेक्षा उनके बच्चे अधिक शर्मीले हैं। असमान राय रखने वाले माता-पिता की अपेक्षा ऐसे बच्चे जो शर्मीले होने के साथ-साथ माता-पिता से प्रभावित है। वे निरुत्तर तथा शर्मीले बने रहते है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि वे शर्मीले माता-पिता अपना शर्मीलापन दूर करना चाहते हैं तथा इसे वे बच्चों के कल्याण के लिए जरूरी भी मानते हैं। वे यह भी जानना चाहते हैं कि बच्चों के सामने विरोध सूचक बातें कैसे रखी जाए या प्रस्तुत की जाए या कार्य कैसे निपटाए जाए।

अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता:-

माता-पिता के विचारों में भिन्नता पर यह अध्ययन बच्चों के लालन-पालन की दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण है। बच्चों के लालन-पालन को लेकर इस दृष्टि में अध्ययन अभिभावकों के लिए कई नई राहें खोलता है। बच्चों के लालन-पालन को सही रूप में समझा जाए यह प्रथम स्थान पर आवश्यक है। समाज के निम्न वर्ग के बच्चों को सही रूप में समझने के लिए यह शोध अध्ययन पर्याप्त धरातल प्रस्तुत करता है। कई रूपों तथा भिन्न-भिन्न तरीकों से बच्चों के लालन-पालन

पर जरूरत से अधिक ध्यान देना तथा आतुरता व्यक्त करना बच्चों के विकास को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करता है, वहीं दूसरी ओर बच्चों को सही रूप में समझना या जानना स्वयं बच्चों के लिए सम्भव है उतना महत्त्वपूर्ण न हो पर चरम सीमा के विरोधाभासी परिवारों के लिए यह बिन्दु अति महत्त्वपूर्ण है। इन अन्तर्विरोधों का शिक्षकों, बच्चों के संगी-साथियों एवं माता-पिता के आपसी सम्बन्धों में सुधार की दृष्टि से अतिमहत्त्वपूर्ण है।

प्रस्तुत अध्ययन आगे चलकर यह भी बताता है कि ऐसे अन्तर्विरोधों को शत-प्रतिशत नहीं मिटाया जा सकता, पर जब तक वे तर्क देते हैं, माता-पिता सुधारने का मन बनाते हैं, बालक सहमति जताते हैं-ऐसे विचारों को भी, सुधार की दृष्टि से छोटा ही सही, प्रारंभिक कदम मानना चाहिए।

व्यवहार में देखा जाता है कि चरम सीमा का भद्दापन भी हम अनचाहे मन से ही सही, सहन करते रहते हैं। इन बढ़ती हुई सामाजिक बुराइयों के प्रति भी नागरिकों की जिम्मेदारी है कि वे सुधार की दृष्टि से, बिना साथी मित्रों का दिल दुखाए, क्या कर सकते हैं? विद्यालय, महाविद्यालय, शिक्षा संस्थान में वांछनीय गुणों के व्यक्तित्व निर्माण के लिए, विद्यालयी हिंसा रोकने के लिए क्या योगदान कर सकते हैं? एक छोटा सा प्रयास बीज स्वरूप मानना चाहिए।

'प्रज्ञा' बी-186, आर.के. कॉलोनी
भीलवाड़ा-311001
मो: 99281-08669

भारतीय भावनाओं के गीतकार : पं. भरत व्यास

❒ ललित शर्मा

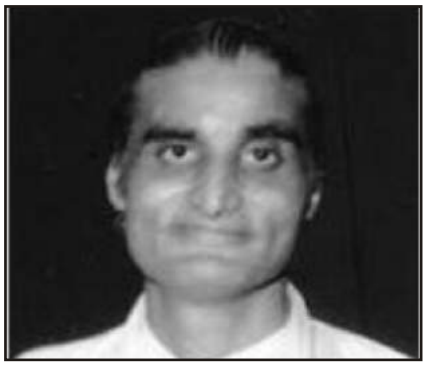

पं. भरत व्यास भारत की धर्म, संस्कृति, साहित्य और राष्ट्रीय भावनाओं की फिल्मों को समर्पित ऐसे यशस्वी गीतकार रहे हैं जिनकी वर्तमान सिनेमाई गीतकारों में मिसाल मिलना अत्यन्त दुष्कर है। उनके द्वारा भारतीय भावनाओं में तल-अतल तक डूबकर लिखे सैकड़ों गीत आज भी उतने ही मर्मस्पर्शी हैं जितने पचास से अस्सी के दशकों में रहे। पं. भरत व्यास ने उन दशकों में अपने भावनाप्रद फिल्मी गीतों के लेखन में भारतीय साहित्य व संस्कृति का जीवन्त प्रयोग कर न केवल देश में अपितु विदेशों में भी अपना एक अलग स्थान बनाया था। उन्होंने अपने प्रेरणास्पद और अनुपमेय गीतों से साहित्य में क्रांति की ऐसी ज्योति प्रज्वलित की थी कि लोग उन गीतों से अपने जीवन को प्रकाशित कर गए।

6 जनवरी सन् 1917 ई. को राजस्थान के चूरू शहर में जन्मे पं. व्यास पर अपने माता-पिता का स्नेहसिक्त साया अधिक समय तक नहीं रहा। माता-पिता के देवलोक गमन के बाद उनके दादा घनश्याम व्यास ने उनका लालन-पालन किया। पं. व्यास ने चूरू, बीकानेर एवं श्रीनाथद्वारा में शिक्षा प्राप्त की। आगे की पढ़ाई के लिए वे कलकत्ता चले गए। वहाँ अध्ययन व अन्य खर्चों में अर्थ की कमी को पूरा करने के लिए उन्होंने कलकत्ता के कवि-सम्मेलनों में काव्य पाठ किए तथा वहीं लघु नाटकों के प्रदर्शन के रिकार्ड बनाकर अपना भरण-पोषण किया। लगातार रिकार्ड प्रदर्शन का परिश्रम रंग लाया और पं. व्यास को लोकप्रियता की सीढ़ी पर चढ़ा गया। इसी मध्य उनके कवि मन ने 'केसरिया पगड़ी' कविता लिखी। इस काव्य की प्रसिद्धि ने उनके जीवन को भारत के काव्य जगत में ला खड़ा करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके मन में देश की संस्कृति और राष्ट्रीयता की सच्ची भावना निहित थी, अतः दिनों-दिन व्यास जी की बहुमुखी प्रतिभा निखरने लगी। वे अच्छे गीतकार और नाट्यकार के रूप में चर्चित होने लगे। उन्होंने अपना प्रथम नाटक 'रंगीला मारवाड़' कलकत्ता के सबसे पुराने अल्फ्रेड थियेटर नाट्य भारती के रंगमंच पर स्वयं के ही निर्देशन में प्रदर्शित किया था। दैवयोग की बात ही थी कि यह नाटक इतना अधिक सफल हुआ कि उस समय इस नाटक के पाँच रुपये के टिकट तीस रुपये में बिके थे। बाद में यह नाटक देश भर में प्रदर्शित किया गया और पं. व्यास की कीर्ति भारत भर में फैल गई। इस दौरान उन्होंने 'रामू-चानणा' तथा राजस्थान की महान प्रेम गाथा 'ढोला-मारु' की पटकथा व संवाद नाटक भी लिखे जिन पर बाद में सफल फिल्में बनी।

पं. भरत व्यास में इस प्रकार गीत व नाट्य लेखन के साथ-साथ एक कुशल अभिनेता के गुण भी विद्यमान थे। उन्होंने बाल्यावस्था के नाटकों में 'कृष्ण' का काफी सुन्दर अभिनय किया था, जिसका उल्लेख चूरू शहर के पुराने व्यक्ति आज भी करते हैं। कलकत्ता में उन्होंने 'राजा मोरध्वज' नाटक में राजा मोरध्वज की भूमिका बड़े ही सुन्दर ढंग से निभायी थी, जिसे दर्शकों ने खूब पसन्द किया था। 1939 के बाद वे मुम्बई गए और अपनी प्रतिभा के बल पर वहीं से उन्होंने फिल्म जगत में प्रवेश किया। दरअसल पं. व्यास फिल्मों में निर्देशन के इरादे से गए थे, मगर उनकी प्रतिभा के कारण वे गीतकार बना दिए गए। उन्होंने अपना प्रथम गीत उस समय के प्रख्यात फिल्म निर्माता-निर्देशक बी.एम. व्यास की फिल्म 'दुहाई' के लिए सन् 1943 ई. में लिखा। इसी दौरान पूर्व प्रस्तुत 'रंगीला मारवाड़' नाटक की प्रसिद्धि के कारण उनका परिचय प्रसिद्ध फिल्म वितरक राजस्थान निवासी ताराचन्द बड़जात्या से हुआ। उन्होंने पं. व्यास को अपनी फिल्म 'चन्द्रलेखा' के गीत लिखने को आमंत्रित किया

और वे इस फिल्म के गीत लिखने के लिए मद्रास भिजवा दिए गए। यहाँ यह भी तथ्य संज्ञान में लाने योग्य है कि बी.एम.व्यास ने मात्र 10 रुपये पुरस्कार स्वरूप देकर उनसे उस युग में फिल्म 'माँ' के लिए गीत लिखवाए, जो उनकी (पं. व्यास की) कलम से निकला प्रथम फिल्मी गीत था। इसके बोल थे-**'आँखें क्या आँखें हैं, जिसमें अंसुवन की धार नहीं, वो दिल पत्थर है, जिसमें माता का प्यार नहीं।'**

ईश्वरीय कृपा थी कि यह फिल्म (माँ) रातो-रात हिट हुई और शानदार गीतों के लेखन के लिए पं. व्यास सुपर हिट हो गए जो उनके महान परिश्रमपूर्ण कार्य का एक महान परिणाम रहा। इसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। वे लगातार अपने भावनामय गीतों की रचनाओं से देश की जनता को रससिक्त करते रहे और सफलता के शिखर पर चढ़ते गए, जिस पर पहुँचने के लिए गीतकार को अपनी फिल्मी जिंदगी में अन्तिम मेधा-शक्ति तक समर्पित कर देनी पड़ती है। उनके लिखे गीतों की संख्या लगभग 1200 बताई जाती है। इतने गीत उन्होंने लगभग 125 फिल्मों के लिए लिखे।

पं. भरत व्यास के गीतों की हिन्दी लेखन शैली तथा भाव-प्रवणता से फिल्मी जगत में एक क्रांति पैदा हो गई क्योंकि वह युग फिल्मी गीतों में उर्दू के शब्द प्रयोगों का था। पं. व्यास ने उस युग में हिन्दी भाषा के इतने सुन्दर गीत रचे, जिसकी आज तक कोई मिसाल नहीं मिलती। उन्हें हिन्दी भाषा से बेहद प्रेम था। इसी के परिणामस्वरूप प्रसिद्ध निर्माता-निर्देशक वी. शांताराम तो पं. व्यास के हिन्दी गीतों से इतने अधिक प्रभावित हो गए कि उन्होंने अपनी सारी फिल्मों के गीत उन्हीं से ही लिखवाए। इस प्रकार फिल्मी जगत के गीतों में हिन्दी का मूल प्रयोग कर उसे जन-जन तक पहुँचाने में उनकी भूमिका अहम मानी जा सकती है। यह उनके हिन्दी गीतों की साहित्यिक-क्रांति का सबसे बड़ा प्रमाण है, जिस कारण उनके गीतों ने निराश हृदयों में नये प्राण और नया जोश फूंका। पं. व्यास ने साहित्यकार फिल्म निर्देशक विमल राय तथा विक्रम भट्ट की फिल्मों में भी मनमोहक गीत लिखकर अपनी संस्कृति के विविध आयामों को देश भर में प्रचलित और पुनर्जीवित किया था। उनके लिखे अधिकांश गीतों को लता, मन्नाडे तथा मुकेश की आवाजें मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने 'मन की जीत' नामक फिल्म में 'छुप-छुप के न देखो भँवर जी, हमको नजर लग जायेगी' गीत भी गाया था जो उस समय खूब लोकप्रिय हुआ। उन्होंने अपनी भारतीय भावना की रससिक्त शैली के कारण फिल्मी गीतों में अपना उच्च स्थान बनाया।

राम-राज्य, परिणीता, जन्म-जन्म के फेरे, गूँज उठी शहनाई, तूफान और दिया, रानी रूपमती, नवरंग, दो आँखें बारह हाथ, स्त्री, दीया और तूफान, सन्त ज्ञानेश्वर, बालक, सम्पूर्ण रामायण, सारंगा, प्यार की प्यास, राम-लक्ष्मण, नवरात्रि, बालयोगी-उपमन्यु, बेदर्द जमाना क्या जाने जैसी सैकड़ों फिल्मों में उनके लिखे गीतों का कमाल देखने को मिलता है, जिन्होंने भारत भर में अपार सफलता हासिल कर लोगों को विषमता पूर्ण वातावरण से निकालने और अपने देश की भाषा, संस्कृति को पहचानने की दिशा दी। इन फिल्मों के गीतों ने प्रेम भावनाओं से ओतप्रोत भाव जगाने में महत्ती भूमिका निभाई। उनके द्वारा 'दो आँखें बारह हाथ' फिल्म में लिखे गीत 'ऐ मालिक तेरे बन्दे हम, तू अमावस को कर दे पूनम', तो भारत की विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं में प्रार्थना के रूप में आज भी सश्रद्धा गाया जाता है। यह गीत उनकी सार्वकालिक प्रस्तुति है। उन्होंने इसकी स्वर लिपि भी स्वयं तैयार की थी। वे विजयिनी मानवता के योद्धा गीतकार थे। वहीं उनके नवरंग फिल्म में लिखे गीतों ने देश भर में अपनी संस्कृति के आयामों और राष्ट्रीयता के प्रतिभावों की धूम मचा दी थी। रानी रूपमती फिल्म के गीत **'आ लौट के आजा मेरे मीत'** ने तो उनके दम पर संगीतकार एस.एन. त्रिपाठी को संगीतकारों की प्रथम पंक्ति में ला खड़ा किया था। फिल्म 'दीया और तूफान' में उनका लिखा गीत **'निर्बल से लड़ाई-बलवान की, ये कहानी है दीए की और तूफान की'** तो आज भी निर्बल का सम्बल गीत है। वहीं नवरंग फिल्म के **'आधा है चन्द्रमा रात आधी** तथा **जरा सामने तो आओ छलिये** (जन्म जन्म के फेरे), **नैना है जादू भरे** (बेदर्द जमाना क्या जाने) जैसे गीत लगातार भारतीयों की पायदान पर चढ़ते गए। उनके लिखे **'जय चित्तौड़'** फिल्म के गीत **'ओ पवन वेग से उड़ने वाले घोड़े'** ने तो राणा प्रताप के प्रमुख अश्व चेतक को अमर कर दिया, वहीं अंगुलीमाल फिल्म के गीत 'बुद्धम शरणमं गच्छामी' ने महान गौतम बुद्ध के सन्देश को विश्व के जन-जन में प्रसारित कर विश्व में भारतीय अहिंसा की उदात्त भावना का ठोस परिचायक माना जा सकता है, जिसमें शांति, भाईचारे व एकता का सुन्दर संदेश है।

लगातार मिलती सफलता के बावजूद भी पं. व्यास कभी यथार्थ की धरती से उठकर दम्भ के आकाश में नहीं पहुँचे। वे कहते थे- 'मेरे गीत, कविताऐं मेरे भारतीय संस्कारों भावनाओं के विचारों की उपज है।' इस प्रकार निर्देशक, कथाकार, संवाद लेखक, पटकथा लेखक तथा गायक के रूप में महिमा मंडित पं. भरत व्यास ने अपनी अनुपमेय प्रतिभा द्वारा भारतीय सिनेमा के माध्यम से लोगों को प्रभावित किया। वे गीतों के क्षेत्र में संत कबीर, संत पीपा एवं विवेकानन्द की ही भाँति रूढ़ियों के विरोधी थे। भारतीय धर्म और संस्कृति की शुद्ध भावना का मूल उनके गीतों में मुखर होता था। वे गीत रचना के सांस्कृतिक पक्ष की रक्षा करते हुए भी साहित्यिक प्रयोग करने में समर्थ थे जो उनकी रचनाधर्मिता, सृजनशीलता स्वरचित भावों के संकलन में देखी जा सकती है। भारतीय भावनाओं का फिल्मी गीतों में ऐसा सांगोपांग स्वरूप किसी भी उद्योग को बड़ी तपस्या से मिलता है और जिसको वह मिलता है, उसका जीवन धन्य हो जाता है। मूलतः उनके गीतों में गायन और भाव अपनी समस्त मुद्राओं और मूर्च्छनाओं में मूर्तिमान हो उठते थे।

कहा भी जाता रहा है कि साधक जब साधना करते-करते साध्यमय हो जाता है तो वह फिर 'संस्कृति' बन जाता है। पं. व्यास जैसे तपपूत गीतकारों के कारण ही फिल्मी जगत में भारतीय भावनाओं के गीतों का स्थायीकरण शीर्ष स्तर पर रहा। उनके गीतों वाली अंतिम प्रदर्शित फिल्म 1986 ई. की 'कृष्णा-कृष्णा' रही। मुम्बई में ही गीत लेखन में निरत रहे पं. व्यास का 4 जुलाई 1983 ई. को निधन हुआ। यद्यपि पं. व्यास आज हमारे मध्य नहीं है, किन्तु वे **'तुम गगन के चन्द्रमा हो'** गीत की तर्ज पर आज भी भारतीयों के मन में जीवित है।

जैकी स्टूडियों, 13 मंगलपुरा स्ट्रीट,
झालावाड़-326001 (राज.)

नवाचार

इंदरगढ़ (अलवर) के स्कूल में इन्द्रविमान

❒ राजेश लवानिया

यह अपनी तरह का एक पहला प्रयोग है जो कि इन्दरगढ़ स्कूल, अलवर में किया गया है। एक कक्षा कक्ष का निर्माण किया गया है परंतु इसकी खास बात यह है कि इसे एक हवाई जहाज के रूप में बनाया गया है। इसका प्रयोग Smart Class के रूप में किया जाएगा जहाँ सभी कक्षाओं के विद्यार्थी इंटरनेट के माध्यम से पढ़ाई करेंगे।

उद्देश्य साफ है, बच्चों को किताबों से हटकर बाहरी दुनिया का ज्ञान भी दिया जा सके जो शिक्षा को उनके लिए रोचक बनाए एवं ज्यादा से ज्यादा बच्चों को स्कूल से जोड़ा जा सके। गाँव में रहने वाले बच्चे जिन्हें हवाई जहाज सिर्फ आकाश में उड़ता ही दिखाई देता है, वे अब हवाई जहाज में बैठकर अति उत्साहित हैं एवं उन्हें अब स्कूल और भी आकर्षक लगने लगा है। भारत मे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है परंतु उससे पहले एक मुद्दा है बच्चों को स्कूल तक लाना। सरकारी विद्यालयों में शिक्षा मुफ्त है, मिड डे मील जैसी योजना भी है परंतु फिर भी सरकारी विद्यालय बच्चों एवं उनके माता पिता को अपनी ओर आकर्षित नही करते।

इसी कमी को पूरा करने के लिए विद्यालयों को आकर्षक रूप देना एवं Smart Class जैसे शिक्षा के नए साधन उपलब्ध कराना एक उपाय है। शिक्षा बच्चों का मूल अधिकार है एवं उन्हें यह दिलाने के लिए हर संभव प्रयास होना चाहिए।

इस महत्त्वपूर्ण काम को करवाने का श्रेय Sehegal Foundation एवं उनकी पूरी Team, विद्यालय प्रशासन एवं समस्त ग्रामवासियों को जाता है। **राजेश लवानिया**

लवानिया का प्रस्ताव स्वीकारते हुए सहगल फ़ाउंडेशन द्वारा हवाई जहाजनुमा कक्षा कक्ष बनाया गया जिसमें 50 बच्चों के बैठकर पढ़ने की व्यवस्था है। हवाई जहाजनुमा कक्षा कक्ष को एजुकेशन एयरलाइंस का स्मार्ट क्लास रूम बनाया गया है जिसका नाम इंद्र विमान रखा गया है जिसमे आँगनवाड़ी के बच्चों सहित स्कूल की प्रत्येक कक्षा के बच्चे बदलते हुए पीरियड में बैठकर प्लेन में बैठने का आनंद लेते हुए एल. ई. डी से पढ़ाई कर रहे हैं। प्लेन के अन्दर का लुक भी प्लेन की तरह ही दिया गया है। हवाई जहाजनुमा इस कक्ष में बारी-बारी से प्रत्येक पीरियड में क्लास बदलती है और उनको एल. ई. डी. के माध्यम से उनके स्तर अनुसार पढ़ाया जा रहा है। आँगनबाड़ी और नवप्रवेशी बच्चों को शिक्षाप्रद कार्टून, कहानियाँ आदि बहुत लुभा रही हैं।

बड़ी कक्षाओं को भी शिक्षक यू ट्यूब के माध्यम से पढ़ा रहे है शिक्षकों का कहना है कि वीडियो के माध्यम से बच्चों को जटिल कोनसेप्ट आसानी से समझ आ जाते है। बच्चों को हवाई जहाजनुमा इस कक्ष में बैठकर पढ़ना अच्छा लग रहा है। यह कक्षा कक्ष जमीन से 7 फीट ऊपर पिलर्स पर बना है जिसके नीचे पक्का फर्श चारों ओर घास का मैदान, कक्ष की सीढ़ियों तक पहुँचने हेतु पाथ-वे का निर्माण किया गया है। कक्ष के नीचे का स्थान साइकिल स्टेंड के रूप में विकसित किया है। पिलर्स के नीचे की ओर हवाई जहाज की तरह पहिए दर्शाए गए है। इस इंद्र विमान में चढ़ने के लिए सीढ़ियों के साथ दोनों ओर दरवाजे हैं। कक्ष का अंदर व बाहर से हवाई जहाज की तरह पैंट किया गया है। बच्चों को सीढ़ियाँ चढ़ते हवाई जहाज में चढ़ने का एहसास होता है।

बन चुका है शेल्फी पॉइंट- एक बार फिर रेल्वे स्टेशन स्कूल के बाद अलवर जिले का सरकारी स्कूल शेल्फी पॉइंट बन चुका है। आस पास के गाँव के लोग इसे देखने आ रहे है और शेल्फी लेते है। गाँव की एवं आस-पास की महिलाएँ समूह के साथ स्कूल के इस इन्द्र विमान को देखने आ रही हैं। शादियों के इस माहौल में गाँव के दूल्हा-दुल्हन भी फोटो खिंचवाने आते हैं।

स्कूल का सौंदर्यकरण भी कराया सहगल फाउंडेशन ने विद्यालय के मुख्यद्वार के दोनों ओर राजस्थानी कलाकृति के चित्र और अंदर घुसते ही पाथ वे के दोनों ओर किलोमीटर स्टोन पर विद्यालय के सभी पाट्र्स की दूरी मीटर मे दर्शाई गई है एवं दोनों ओर पार्क विकसित कर परिसर मनोरम दिखाई दे रहा है। इन्हीं किलोमीटर स्टोन पर दूसरी ओर दिल्ली, जयपुर अलवर सहित अलवर के सभी प्रमुख स्थानों की दूरी किलोमीटर मे दर्शाई गई है। पेड़ों के नीचे बैठने के लिए बेंच बालकों को सुकून देते नजर आ रहे हैं। कक्षा कक्षों का नामकरण महापुरुषों के नाम पर किया है। दरवाजे के साथ बने कोण मापक से दरवाजे को बंद करते और खोलते समय बच्चे कोण नापना सीखते नजर आते है। पिलर पर बने स्केल से बच्चे अपनी ऊँचाई नापते है। बरामदे की दीवार पर हिंदुस्तान और संसार के नक्शे बनाए गए हैं। चारदीवारी पर शिक्षाप्रद स्लोगन भी लिखे गए हैं।

स्वच्छता हेतु पेयजल के पास स्वच्छता से संबन्धित चित्र बने हैं वहीं पेड़ पौधे लगाकर पर्यावरण बचाने की जागरूकता का संदेश भी दिया है।

अलवर जिला मुख्यालय से 16 किमी. दूर उमरैन पंचायत समिति के सालपुर ग्राम पंचायत के रा. उच्च माध्यमिक विद्यालय इन्दरगढ़ को सहगल फाउंडेशन द्वारा गोद लेकर स्कूल की तस्वीर बदल दी। फाउंडेशन द्वारा सभी कक्षों को रिपेयर मय विद्युत फिटिंग कराया गया, चार दीवारी को ऊँचा किया गया, मिट्टी भरत कार्य, रेन वाटर हार्वेस्टिंग के चार टैंक बनाए गए, बड़ा ग्राउंड होने की वजह से ग्राउंड में वर्षा के पानी को रीचार्ज वेल बनाए गए, स्टाफ को शौचालय, पेयजल व्यवस्था, बच्चों को खेलने के लिए प्लेएलिमेंट लगाकर परिसर को चाइल्ड फ्रेंडली बनाया गया, परिसर में पार्क एवं 1100 पेड़ पोधे लगाए गए। छात्राओं के शौचालय में इनसीनरेटर लगाया है, पेड़ों के नीचे छात्रों को बैठने के लिए बेंच बनाई गई हैं। विद्यालय को डस्टबिन दिए गए है एवं कचरा जलाने हेतु इनसीनरेटर भी बनाया गया है समय-समय पर सफाई के प्रति जागरूकता के लिए ओरिएंटशन

प्रोग्राम किए जाते है। बच्चों को भोजन से पूर्व एवं शौच के बाद साबुन से हाथ धोने की व्यवस्था की है।

आँगनबाड़ी भी अब बन गई आकर्षण का केंद्र विद्यालय में समन्वित आँगनबाड़ी पूर्व में जीर्ण-शीर्ण स्थिति में थी जो विद्यालय परिसर में ही थी जिसकी कायापलट भी लवानिया के प्रस्ताव पर सहगल फाउंडेशन द्वारा की गई है। भवन की छत टपकती थी फर्श उखड़ा पड़ा था जिस पर आकर्षक टाइल फ्लोरिंग एवं एक ओर छोटा सा स्टेज निर्मित किया गया। कक्ष की दीवारों को रिपेयर कर पैंट कर कक्ष को चाइल्ड फ्रेंडली रूप दिया गया है ताकि बच्चे खेल खेल में सीखें। आँगनबाड़ी के एक ओर बच्चों को शौचालय, मूत्रालय, पेयजल एवं बर्तन धोने, हाथ धोने की व्यवस्था की गई है। भवन में विद्युत फिटिंग, पंखें लगाए गए है बाहर की ओर बच्चों को बैठने के लिए बेंच और खेलने के लिए झूला, फिसलपट्टी, सीसा आदि भी लगाए गए है साथ में निर्मित ए एन एम कक्ष को भी रिनोवेट किया गया है। आँगनबाड़ी परिसर की बाहरी दीवारों पर अक्षर व कार्टून बनाए गए है जो विशेष आकर्षण का केंद्र है कक्ष के जंगलों की ग्रिल में स्थायी अ आ इ ई व, इ, उ, ऊ बने हैं। सभी बच्चों को समुदाय की मदद से आकर्षक फर्नीचर उपलब्ध कराया गया है। आँगनबाड़ी में 27 बच्चे नामांकित हैं। सहगल फाउंडेशन ने इस स्कूल पर लगभग 45 लाख रुपये से ज्यादा खर्च किए हैं।

विद्यालय की प्रधानाचार्य पुष्पा मीना ने बताया कि ग्रामीणों के और स्कूल के साथ मिलकर सहगल फाउंडेशन ने इस स्कूल की कायापलट कर दी है एक वर्ष पूर्व विद्यालय भवन एवं परिसर दुर्दशा का शिकार था लेकिन अब स्कूल से बच्चों का घर जाने का मन नहीं करता है परिसर में लगे झूला, फिसलपट्टी, सीसा, पेड़ों के नीचे बनाई गई बेंच बच्चों को आनंद देती हैं। प्रधानाचार्य का कहना है कि विद्यालय के स्टाफ और बच्चों के द्वारा इस परिसर को स्वच्छ रखा जावेगा स्कूल के बच्चों में सफाई के प्रति जागरूकता बढ़ रही है स्कूल में सभी सुविधाएँ हो चुकी है इसलिए अब शिक्षा में गुणवत्ता पर और अधिक ध्यान दिया जावेगा। विद्यालय में कुल 406 का नामांकन है 167 छात्र,239 छात्रा हैं।

विद्यालय के इस रूप को देखकर 22 छात्रों ने निजी स्कूल छोड़कर प्रवेश लिया है। प्रधानाचार्य के प्रयास से सभी आँगनबाड़ी के बच्चों को यूनिफोर्म उपलब्ध कराई गई है। मीना कहती है कि अगले सत्र में नामांकन में बढ़ोतरी होगी।

विद्यालय की छात्रा कंचन कक्षा 10, प्रियंका कक्षा 11, अंजु कक्षा 12 कहती है कि कभी नहीं सोचा था कि हवाई जहाज में बैठकर पढ़ेंगे यह किसी सपने से कम नहीं है। हमारा स्कूल अब अच्छा हो गया है यहाँ से घर जाने का मन ही नहीं करता है।

डिजीटल लिटरेसी प्रोग्राम के तहत 100 छात्र एवं छात्राओं को कम्प्युटर की ट्रेनिंग दी जा चुकी है जिसमें संस्था द्वारा लेपटाप/ टेबलेट छात्रों को उपलब्ध कराकर पेंटिंग, वर्ड, एकसल, इंटरनेट, मेल आई डी बनाना, ऑन लाइन टिकिट बुक कराना, ऑन लाइन शॉपिंग करना नेट पर सर्फिंग करना सिखाया गया। कक्षा 10 की छात्रा मनीषा खान कम्प्यूटर सीख कर बहुत खुश है वह अब आगे की पढ़ाई जारी रखना चाहती है मनीषा कहती है कि कम्प्यूटर पर नेट के उपयोग से पढ़ाई में भी बहुत मदद मिलती है।

फाउंडेशन के महिपाल सिंह ने बताया कि फाउंडेशन का उद्देश्य ग्रामीण भारत के प्रत्येक व्यक्ति को एक सुरक्षित, गरिमामय व समृद्ध जीवन जीने के समर्थ देखना है। सम्पूर्ण ग्रामीण भारत मे सकारात्मक व पर्यावरणीय परिवर्तन के लिए समुदाय की अगुवाई वाले विकास उपक्रमों को मजबूती प्रदान करना है। हमारी फाउंडेशन मुख्यत कार्य जल प्रबंधन, ग्रामीण सुशासन, कृषि विकास, स्कूल सौंदर्यकरण के साथ कम्प्यूटर शिक्षा, जीवन कौशल शिक्षा का कार्य करती है। विद्यालय में कार्य करने से पूर्व ग्राम की आम सभा की जाती है उस आम सभा में ही ग्रामीणों के सहयोग से 18 समर्पित व्यक्तियों को चुना जाता है जिनकी ग्राम विकास समिति बनाई जाती है यह समिति समुदाय से जो राशि एकत्रित करती है वह राशि स्कूल की मेंटीनेंश के काम आती है प्रति माह फाउंडेशन ग्राम विकास समिति के साथ मीटिंग करती है। महिपाल सिंह ने बताया कि इंदरगढ़ की ग्राम विकास समिति ने एक लाख रुपया इकट्ठा किया जिसे समिति के खाते में जमा कराया गया है जिसमें स्कूल स्टॉफ का भी योगदान है।

इंदरगढ़ के विद्यालय को रिपेयर व रिनोवेशन के साथ चाइल्ड फ्रेंडली के रूप में विकसित किया गया है महिपाल सिंह ने बताया कि फाउंडेशन द्वारा 12 स्कूलों के सौंदर्यकरण कार्य में समग्र शिक्षा अभियान के इंजीनियर राजेश लवानिया का भरपूर सहयोग मिल रहा है विद्यालय में कराए जा रहे बाला कार्य से बच्चों का ठहराव बढ़ा है और स्कूल भी आकर्षित बन पाए हैं। लवानिया ने फाउंडेशन को नवाचार के रूप में हवाई जहाजनुमा कक्ष में स्मार्ट क्लास रूम और आंगनवाड़ी को मॉडल के रूप में विकसित करने का प्रस्ताव रखा था जिसे गुड़गाँव हेड क्वार्टर से स्वीकृति मिली। फाउंडेशन को अन्य स्कूलों में भी लवानिया का सहयोग निशुल्क और सेवा भावना से मिलता रहता है संस्था इनका आभार व्यक्त करती है। फाउंडेशन द्वारा अलवर जिले के 30 सरकारी स्कूलों में रिनोवेशन कार्य कराया जा चुका है।

कुछ माह पूर्व राजेश लवनिया द्वारा अलवर का रेल्वे स्टेशन स्कूल RDNC मित्तल फाउंडेशन के सहयोग से स्कूल को ट्रेन का लुक दिया था जो सम्पूर्ण भारत में सराहा गया था और इस स्कूल में नामांकन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। लवानिया द्वारा सेकड़ों सरकारी स्कूलों को चाइल्ड फ्रेंडली के रूप में विकसित किया है इन कार्यों का प्रस्तुतीकरण लवानिया द्वारा आई ए एस अकादमी मसूरी में एवं मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं राष्ट्रीय स्तर की सेमीनारों में किया है। 15 अगस्त 2012 में इनको राज्य स्तर पर योग्यता प्रमाण पत्र और समय समय पर अनेक पुरस्कार मिले है। 2008 से पूर्व अध्यापक के पद पर कार्यरत थे इनकी योग्यता के कारण सर्व शिक्षा अभियान में कनिष्ठ अभियंता का पद मिला इनके निर्देशन में बना पहला स्कूल राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मोरसराय जो एक मंदिर में संचालित था लगभग 50 नामांकन वाले इस विद्यालय को जमीन मिली तो सर्व शिक्षा अभियान द्वारा नवीन भवन लवानिया के निर्देशन में बना तो भवन के आकर्षण को देखकर ही नामांकन 350 हुआ तब से ही एक अभियान के रूप में लगे है सरकारी स्कूलों को बदलने में।

इंजीनियर,
कार्यालय अतिरिक्त परियोजना समन्वयक
समग्र शिक्षा अभियान, अलवर (राज.)

संगति का प्रभाव

❐ दीपचंद सुथार

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इसलिए वह अकेला नहीं रह सकता। चाहे वह बच्चा, युवा व वृद्ध हो। ऐसा जीवन उन्हें बोझिल व नीरस लगता है। वैसे प्रत्येक परिवार के आसपास गली व मुहल्लों में कई लोग रहते हैं। प्रायः सभी जीवन यापन एवं भौतिकता की दौड़ में अपनी-अपनी डफली व अपना-अपना राग में ही अत्यन्त व्यस्त रहते हैं। हर परिवार की वही स्थिति है। यह व्यस्तता बच्चों के विकास को हर दृष्टि से लील रही है। इसलिए माता-पिता को यह बात सदा स्मरण रखनी चाहिए कि बालक घर का सौंदर्य है व इनकी अठखेलियाँ शृंगार होती है। उसके कोमल कलेजे की भाव-भंगिमाएँ और सहज सलोने कार्यकलाप हमारे अन्तस् को अतुलित आनन्द देते हैं। प्रकृति प्रदत्त इतनी अलौकिक सम्पदा बिना मूल्य के देने के कारण इसकी परवरिश अच्छी तरह से करना प्रत्येक माता-पिता का उत्तरदायित्व होता है। वैसे भी पारिवारिक दृष्टि से इन्हें बुढ़ापे की लकड़ी कहा गया है। इसलिए बाल्यकाल से ही इसमें अच्छे संस्कारों का बीजारोपण करने का प्रयास करना चाहिए, जिससे सेवा के संदर्भ में हाथ-पैर उनके जीवित रहने तक चलते रहे। यही संस्कार फिर स्वार्थ पथ से आने वाली तेज हवाओं का सामना करने का हौसला रख सकते है। इसमें छिपी शिक्षा ही हमारे अतीत की धरोहर है।

घर से निकलकर जब वे विद्यालय में प्रवेश करते हैं तो वहाँ पढ़ाई के अतिरिक्त सहशैक्षिक गतिविधियों के अन्तर्गत खेलकूद, नाच-गान के अलावा अन्य कई प्रतियोगिताओं में भाग लेने का अवसर मिलता है। अतः साथ-साथ पढ़ने व कार्य करते रहने से वे स्वतः ही उनकी व्यावहारिकता एवं आदतों से भलीभाँति परिचित हो जाते हैं। उसी के आधार पर फिर दोस्त बनाते रहते हैं। उस समय उन्हें उनके सद्गुणों पर विशेष ध्यान रखना चाहिए क्योंकि अच्छा मित्र ही उनकी सफलता का भागीदार बनकर इस दिशा में आशाओं के फूल खिला सकता है। वैसे मित्र को दूसरी आत्मा कहा गया है। इसकी पृष्ठभूमि में माता-पिता की सक्रियता

एवं जागरूकता अत्यावश्यक होती है। ऐसा न करने पर बच्चे अपनी राह से भटक जाते हैं। प्रसिद्ध फारसी कवि शेखसादी ने एक स्थान पर कहा है-'मैंने मिट्टी के एक ढेले से पूछा कि तुम में सुगन्ध कहाँ से आई? उसने उत्तर दिया, यह सुगन्ध मेरी अपनी नहीं है, मैं केवल कुछ समय तक गुलाब की एक क्यारी में रहा था, उसी का यह प्रभाव हैं।' यह कथन बड़ा ही हृदयस्पर्शी व प्रेरणाप्रद है अतः ऐसा प्रतीत होता है कि यथार्थता ने ही इसे अपने शब्द रूपी धागों से बुना है। रहीम ने संगति की महत्ता का उदाहरण देकर समझाते हुए कहा है-

कदली, सीप भुजंग मुख, स्वाति एक गुण तीन।
जैसी संगति बैठिए, तैसो ही फल दीन।।

आशय यह है कि स्वाति नक्षत्रों के दिनों में यदि बरसात होती है तो उसकी बूँदें यदि केले के ऊपर गिरती है, तो कर्पूर बनती है, साँप के मुख में गिरती है तो विष बनती है, यदि सीप के मुँह में गिरती है तो मोती बनती है। पानी की बूँद तो एक ही लेकिन संगति के प्रभाव से उक्त रूपों को धारण करती है।

कबीर ने भी संगति के प्रभाव को बखूबी से दर्शाते हुए लिखा है-

कबीरा संगति साधु की, जौ की भूसी खाय।
खीर खांड हल्वा मिलै, दुर्जन संग न जाय।।

संगति का यह बड़ा ही मार्मिक चित्रण है, जिसमें कहा गया है कि अच्छे-अच्छे व्यंजन मिलने पर भी हमें दुर्जन व्यक्ति का कभी साथ नहीं करना चाहिए। इसके बनिस्पत सज्जन व्यक्तियों का साथ करना चाहिए। भले ही उनके साथ रहने पर हमें जौ की भूसी ही खाने को क्यों न मिले? अतः विश्वास पात्र व सुसंस्कारी मित्र ही बालक का सबसे बड़ा खजाना है। अतः अच्छी संगति से व्यक्ति की शौभा बढ़ती है और बुरी संगति से घटती है। रहीम ने इस बात को ध्यान में रखकर कहा है-

बसी कुसंग चाहत कुशल, यह रहीम किय होय।
महिमा घटी समुद्र की,रावण बसियो पड़ोस।।

इसी बात को वृन्द ने अपने ढंग से प्रस्तुत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए है-

जैसी संगति तैसिये, इज्जत मिलि है आय।
सिर पर मखमल सेहरै, पनही मखमल पाय।।

अतः बालक का हृदय कोमल, स्वभाव सरल और मन निर्मल होता है। वह अपने हित व अहित को जानता है परन्तु परिणाम से अनभिज्ञ होता है। इस भौतिकतावादी युग ने विद्यार्थियों के इस आशीर्वाद को निगल लिया है-

सुखिार्थिनः कुतो विद्या,
कुतो विद्यार्थिनः सुखम्।
सुखार्थी का व्यजेद् विद्यां,
विद्यार्थी वा त्यजेत्सुखम्।।

अर्थात्-सुख चाहने वाले को विद्या कहाँ? विद्या चाहने वाले को सुख कहाँ? यदि सुख की इच्छा हो तो विद्या छोड़नी पड़ेगी और यदि विद्या की इच्छा हो तो सुख छोड़ना पड़ेगा।

यह अवस्था पढ़ने-लिखने और जीवन को ऊँचा उठाने की है लेकिन वे दूरदर्शन व मोबाइल के सहारे सारा समय मनोरंजन में व्यतीत करते हैं। परिजनों को चाहिए कि वे अपने व्यवसायी जीवन की व्यवस्तता से कुछ समय बच्चों के लिए निकालें। उन्हें इस बात का स्मरण रखना चाहिए कि बालक ही हमारी असली पूँजी और उसका विकास कुल व समाज का सौरभ है। अतः बाल्यावस्था के संस्कार ही युवावस्था के सारथी बनकर राष्ट्र के गौरव को बढ़ाते है।

C/o श्री हेमन्त कुमार जांगिड़
दयाल भवन के पास,
उम्मेद चौक, ब्राह्मणों की गली,
जोधपुर-342001

शिक्षण-कौशल

प्राथमिक कक्षा में शिक्षक

❒ डॉ. राम निवास

कक्षा शिक्षण एक समय निर्मित कर दी गई किसी वस्तु की तरह नहीं होता कि वह उसी निर्धारित रूप में चलता रहेगा शिक्षण एक ऐसी संकल्पना है जिसे निरंतर गढ़ते रहना है। हर समय नया जोड़ते रहना है। इसीलिए शिक्षण की विधियों में बदलाव अनिवार्य है। प्रधानाध्यापक, शिक्षकों और छात्र-छात्राओं की सोच में परिवर्तन आए तभी पाठ्यक्रम अपने वांछित उद्देश्यों की पूर्ति कर सकता है। कक्षा शिक्षण में नए प्रयोगों से बदलाव आता है। सभी शिक्षक शिक्षिकाओं के लिए यह नितांत आवश्यक है कि सर्वप्रथम वे अपनी कक्षा में यह सुनिश्चित करें कि-

- अपनी कक्षा के सभी बच्चों को समझ लिया है।
- बच्चों के मन को समझ लिया है/उनकी रुचि पसंद नापसंद आदि।
- बच्चों का मनोविज्ञान समझ लिया गया है।

1. स्कूल में बालक-बालिकाएँ:- तीन प्रकार के बच्चे कक्षा में दिखाई देते हैं। यह विभाजन स्थायी नहीं है। बच्चों द्वारा एक वर्ग से दूसरे में स्थान ग्रहण आसानी से किया जा सकता है। यहाँ सिर्फ अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से विभाजन किया जा रहा है।

1.1. कमजोर बालक-बालिकाएँ:- इन बच्चों को लगातार सहायता की जरूरत अनुभव होती है। स्कूल में, घर में सभी जगह इन्हें सहायता प्रोत्साहन चाहिए। इन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

1.2 अच्छे बालक-बालिकाएँ:- ये वे बच्चे हैं जो अपना कार्य बिना किसी सहायता के पूरा कर लेते हैं।

1.3 बहुत अच्छे बच्चे:- ये वे बालक-बालिकाएँ हैं जो अपना कार्य बिना किसी की सहायता के पूरा कर लेते हैं साथ ही ये अन्य कमजोर बच्चों की सहायता भी कर देते हैं। शिक्षक की पहली विशेषता यह है कि वह बालक बालिकाओं के साथ एक सार्थक संवाद कायम रखे। अपनी उभरती जिज्ञासाओं की पूर्ति हेतु बच्चों को प्रश्न पूछने की पूरी छूट दी जाए। वे पाठ की कठिनाइयों के संबंध में अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकें।

2. भाषा विकास की जरूरी बातें:- संपूर्ण पाठ्यचर्या में भाषा है। बच्चों के घर में भाषा व्यवहार है। ऐसे ही पास पड़ोस और खेल के मैदान में भाषा है। स्कूल प्रांगण और कक्षा शिक्षण में भी भाषा है। तात्पर्य यह है कि ज्ञान ग्रहण और अभिव्यक्ति में भाषा है। कक्षा में भाषा का ऐसा समृद्ध वातावरण बालक-बालिकाओं को दिया जाए जिसमें उनकी घर की भाषा और कक्षा शिक्षण की भाषा में जुड़ाव अनुभव हो। आज कक्षा शिक्षण बहुभाषी हो गया है। जिसकी सिफारिश एन.सी.एफ. 2005 और भारतीय भाषाओं का शिक्षण आधार पत्र में भी की गई है। भाषा विकास हेतु एक्टीविटी के माध्यम से सभी बच्चों को एक समान अवसर दिए जाएँ। विद्यार्थियों के स्तर के अनुसार रोचक सामग्री का चयन करके उसका प्रयोग शिक्षण में किया जाए यथाः लघुकथा, चित्र, कार्टून, समसामयिक, सामाजिक, राजनीतिक घटनाएँ लेकर पाठ की विषयवस्तु के साथ संबंध जोड़कर चर्चा की जाए। इन सभी विषयों पर बच्चों से लिखवाया भी जा सकता है। यह ध्यान रखा जाए कि एक्टीविटी में प्रत्येक बच्चा अपने विचार प्रस्तुत करे। बच्चों को प्रश्न पूछने और अपनी बात पूरी कक्षा तक पहुँचाकर आत्म संतुष्टि प्राप्त करने का मौका भी दिया जाए। शिक्षक-शिक्षिकाएँ बच्चों को जो भी गतिविधि कक्षा में कराएँ, वे वर्तनी के प्रति सचेत होते हुए मानक वर्तनी का प्रयोग और अभ्यास भी कराएँ। बच्चे वर्तनी की अशुद्धियाँ करते ही हैं उन्हें सहज ढंग से मानक वर्तनी की जानकारी दी जाए। बालक बालिकाओं को ऐसा अनुभव नहीं होने दें कि उनके लेखन को गलत बताया जा रहा है। कुछ उदाहरण द्रव्टव्य है-

उदाहरण-1

बनस्पति-वनस्पति	रितु-ऋतु
बन-वन	रिषभ-ऋषभ
भ्रमन-भ्रमण	वरशा-वर्षा
रवी-रवि	रविन्द्र-रवींद्र

छात्र-छात्राओं की अभ्यास पुस्तिकाएँ जाँचते समय शिक्षक शिक्षिकाएँ अशुद्ध वर्तनी पर का चिह्न नहीं लगाएँ बल्कि वह शब्द जो मानक वर्तनी में नहीं लिखा गया है। उसके नीचे लाल स्याही से रेखा खींचकर उसके ऊपर शब्द की मानक वर्तनी लिख दें। ऐसा करने से विद्यार्थी मानक वर्तनी स्वयं ही ग्रहण कर लेंगे। कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके दो रूप प्रचलित हैं और दोनों ही सही है। यह भी बालक-बालिकाओं को स्पष्ट किया जाए।

बच्चों को खेल बड़े रुचिकर लगते हैं। भाषा अधिगम की दृष्टि से शब्द सीढ़ी का खेल उन्हें खेलाया जा सकता है-

उदाहरण-2.

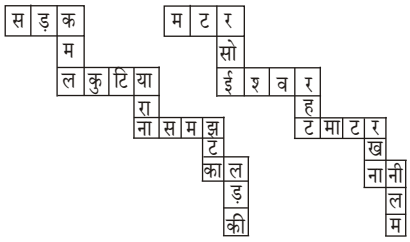

उदाहरण-3. शब्द सीढ़ी खेल में परिवर्तन भी किया जा सकता है। बालक-बालिकाओं से कहा जाए कि उपयुक्त अक्षर चुनकर शब्द सीढ़ी पूरी करो यथाः

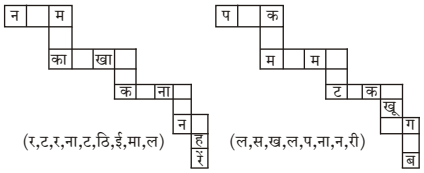

यह एक्टीविटी कराने के बाद बच्चों से उनके अनुभव पूछे जाएँ। स्पष्ट है कि उनके शब्द भंडार में वृद्धि होने के साथ-साथ वे शब्दकोश का प्रयोग करना भी सरलता से सीख जाएँगे। उनकी पढ़ने की ललक बढ़ जाएगी। वे शब्दों की मानक वर्तनी का ज्ञान भी प्राप्त कर लेंगे। एक्टीविटी के माध्यम से बालक-बालिकाएँ भाषा के विविध

पक्षों का अधिगम सहज रूप से कर लेते हैं। अतः जरूरी है कि बच्चों से लेखन संबंधी गतिविधियाँ करायी जाएँ। जो वे स्वयं लिखे, लिखने दें। उनसे कहें–सोचो, करो, और लिखो। ऐसी गतिविधियों के द्वारा शिक्षण रुचिपूर्ण और आनंददायी बनाया जा सकता है। बच्चे जिस उत्साह और आशा से कक्षा में प्रवेश करते हैं, पाठ्यपुस्तकों और विद्यालय से जुड़ाव अनुभव करते हैं यह रुचि और जुड़ाव बना रहना चाहिए। एक्टीविटी आधारित शिक्षण इसमें पर्याप्त सहायता करता है।

3. चित्रों तस्वीरों के माध्यम से संवादः– बच्चों को कक्षा में चित्र तस्वीर दिखाकर उनसे संवाद करें। बच्चों से बातचीत के बिंदु हैं–

- यह तस्वीर किसकी है।
- इस तस्वीर में कौन क्या कर रहा है।
- यह तस्वीर आपको कैसी लग रही है।
- अपने मन से कोई कहानी सुनाइए।
- कोई ऐसी घटना जिसने आपको प्रभावित किया हो।

इस प्रकार सार्थक संवाद चर्चा के बाद बच्चों द्वारा जो भी विचार भाव मौखिक रूप से अभिव्यक्त हुआ है उसका अवलोकन भी किया जाए। अवलोकन के बिंदु ये हैं–

3.1 तर्क का आधारः– बच्चों ने जो तर्क दिए उनका आधार क्या है। उनकी रुचि किस ओर संकेत दे रही है।

3.2 दिलचस्पी और उत्साहः– बच्चों ने किन–किन प्रश्नोत्तरों में दिलचस्पी ली और अपना ज्ञान वृद्धि का उत्साह प्रकट किया।

3.3 दूसरों की बातों को सुनने का धैर्यः– सामूहिक चर्चा में कितने बच्चे ऐसे थे जो कि दूसरों की बातों को धैर्यपूर्वक सुन रहे थे। कितने बच्चे ऐसे हैं जिनमें धैर्य की कमी है और सिर्फ अपनी बात ही सुनाना पसंद कर रहे थे।

3.4 निजी अनुभव और परिवेश से जुड़नाः– इन चर्चाओं के समय बच्चे खुलकर विचार व्यक्त करने लगते हैं और वे अपने निजी अनुभव भी साझा करते हैं। वे अपने स्थानीय परिवेश के साथ सरलता से जुड़ जाते हैं।

4. बालक–बालिकाओं के मानसिक धरातल का स्पर्शः– बच्चों की अपनी भाषा है और साथ ही उनके अपने–अपने जीवन अनुभव भी हैं। उनके पास दुनिया को अपने स्तर से देखने व अनुभव करने का नजरिया भी है। बच्चों से संवाद स्थापित करते समय और एक्टीविटी कराते समय शिक्षक–शिक्षिका को बच्चों के मानसिक स्तर पर ही आना होता है। शिक्षण किसी भी विषय का हो और कोई भी कक्षा हो विद्यार्थियों के मानसिक धरातल का स्पर्श जरूरी है। उनकी भाषा और परिवेश को कक्षा शिक्षण में सम्मानजनक स्थान देने के साथ–साथ स्वतंत्र अभिव्यक्ति का वातावरण भी प्रदान किया जाए। भाषा संबंधी जितनी भी दक्षताएँ और क्षमताएँ हैं उन सभी में परस्पर जुड़ाव पाया जाता है। एक समूह चर्चा अथवा एक्टीविटी में सभी भाषायी दक्षताएँ सामान्य रूप से समृद्ध होती रहती हैं। विद्यालय में भिन्न–भिन्न भाषायी और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बच्चे पढ़ते हैं। अतः उनके सीखने का तरीका और गति एक समान हो यह आवश्यक नहीं है।

5. बच्चों में समूह भावनाः– बच्चों में कक्षा शिक्षण के समय समूह भावना का विकास हो। ग्रुप वर्क से यह संभव होता है। सामूहिकता सद्भावना की ओर ले जाती है जिसमें अपना हित व्यक्तिगत न होकर सामूहिक हो जाता है। अब पुरस्कार भी टीम को मिलने लगे हैं व्यक्ति विशेष को नहीं, यह अच्छा संकेत है। समूह में संकोच और झिझक खत्म होती है साथ ही बच्चे सरलता और सहजता से सीखते हैं। समूह में बच्चे एक दूसरे का सहयोग भी सीखने के लिए करते हैं। शिक्षक प्रशिक्षण पैकेज में विशेषज्ञों द्वारा बहुत अच्छी–अच्छी भाषा सम्बन्धित एक्टीविटी और प्रयोग सुझा दिए जाते हैं। वे सारे प्रयोग और एक्टीविटी तभी अच्छी है जब कक्षा में प्रयोग की जाएँ। ये सभी क्रिया–कलाप व्यावहारिक होने चाहिए। व्यावहारिक एक्टीविटी बच्चों में समूह भावना विकसित कर उसे सुदृढ़ बनाती है।

6. बच्चों में पढ़ने की उत्सुकता जगानाः– बच्चे पढ़ने से जी न चुराएं बल्कि वे उत्साहपूर्वक पढ़ें, उनमें पढ़ने की उत्सुकता जाग्रत हो, इस हेतु शिक्षक बच्चों को प्रोत्साहित करे–

- अपनी मन पसंद का साहित्य, महान पुरुषों की जीवनियाँ पढ़ना।
- अपनी रुचि का मनोरंजक शिक्षाप्रद प्रेरणादायी कथा साहित्य पढ़ना।
- कक्षा में बच्चों का कोना स्थापित करना।
- पुस्तकालय भ्रमण कराना पढ़ते हुए विद्यार्थियों को देखना।
- बच्चों के मानसिक विकास के अनुरूप उनकी जरूरत का साहित्य उपलब्ध कराना।
- पढ़ना मानसिक दबाव या बोझ नहीं अपितु ज्ञान प्राप्ति का आनंददायी माध्यम है।
- स्वाध्याय सभी सफल व्यक्तियों के जीवन का अंग रहा है।

बच्चे अच्छे श्रोता बनें साथ ही वे अच्छे पाठक बनकर स्वाध्याय करें। वे धैर्यपूर्वक सुनकर अपनी बात रखें। वे तर्क करें। कक्षा में प्रत्येक बच्चे को अपनी बात कहने का अवसर दिया जाना चाहिए इसलिए बालक–बालिकाओं को ग्रुप में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

7. बालक–बालिकाएँ क्रियेटिव कैसे होंः– बच्चों को क्रियेटिव रखने से उन्हें सीखने में सरलता और सहजता का अनुभव होता है। शिक्षण विधियों में बालक–बालिकाओं के क्रियेटिव रहने पर जोर दिया जाता है। कुछ बिंदुओं की ओर ध्यान देना अनिवार्य है–

- बच्चों से ग्रुप में कार्य कराएँ/समूह चर्चा/ग्रुप लीडर प्रत्येक बच्चा बारी–बारी से बने।
- भाषा, गणित और विज्ञान सबंधी खेल/एक्टीविटी कराएँ।
- प्रत्येक पाठ शिक्षण में सभी बच्चे बोलें, प्रश्नों के उत्तर दें।
- बच्चों को ऐसी कहानी/घटना सुनाना जिससे वे आगे क्या हुआ जानने के लिए उत्सुक हो जाएँ। पाठ आधारित गतिविधियाँ भी कराई

जाएँ, उन्हें जीवन से जोड़ा जाए।

- प्रत्येक ग्रुप कार्य और पाठ के शिक्षण में प्रत्येक बालक-बालिकाओं की भागीदारी सुनिश्चित की जाए।

कक्षा कोई भी हो और कोई भी विषय पढ़ाया जा रहा हो, उसमें प्रत्येक बालक को भागीदार बनाया जाए। ऐसा करने से प्रत्येक छात्र-छात्रा सजग और सचेत रहते हैं क्योंकि वे पाठ शिक्षण का अनिवार्य हिस्सा बन गए हैं। कक्षा शिक्षण की परम्परागत सोच में बदलाव अनिवार्य है। शिक्षक-शिक्षिकाओं के लिए यह जरूरी है कि वे अपने उन बालक-बालिकाओं की रुचि पसंद नापसंद और सोच को गहराई से समझें जिन्हें वे प्रतिदिन कक्षा में पढ़ा रहे हैं।

बालक-बालिकाएँ अब सिर्फ अध्यापक-अध्यापिका द्वारा कक्षा में सिखाए गए ज्ञान पर ही निर्भर नहीं रह गए हैं। संचार के समस्त साधन अब महानगरों, नगरों और कस्बों से लेकर गाँवों की गलियों तक भी पहुँच रहे हैं। ज्ञान के स्रोतों के बढ़ने से बच्चे स्वयं भी नया और उपयोगी ज्ञान ग्रहण कर रहे हैं। परम्परागत ज्ञान में नवीनता उसकी वर्तमान में उपयोगिता के साथ-साथ शिक्षक-शिक्षिकाओं का अपडेट रहना अनिवार्य है।

8. अधिगम संप्राप्तिः- अब पाठ्यपुस्तकें 'लर्निंग आउट कम' (अधिगम संप्राप्ति) से संबंधित होनी अनिवार्य है। 'लर्निंग आउटकम' अब शिक्षा के अधिकार का अंग बन गया है। विद्यालयों में एक बोर्ड पर कक्षा एक से लेकर आठ तक के सभी पढ़ाए जा रहे विषयों के 'लर्निंग आउट कम' लिखवा कर टाँग देने चाहिए। जिससे विद्यार्थी से लेकर अभिभावक, शिक्षक और प्रधानाध्यापक सभी की दृष्टि इन पर रहे। पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें बदलते ही शिक्षक-शिक्षिकाओं को नया प्रशिक्षण देना और उन्हें अपने नोट्स भी रिवाइज करने अनिवार्य हैं। तभी शिक्षानीतियों और कार्यक्रमों का प्रभाव फील्ड में जा सकेगा।

शिक्षण में गतिविधि होनी अनिवार्य हैं। प्राथमिक स्तर पर बिना एक्टीविटी कराए उसके शिक्षण उद्देश्यों की पूर्ति संभव नहीं है। बच्चों को पाठ पढ़ाने का प्रारंभ कुछ अर्थपूर्ण गतिविधि से किया जाए। उदाहरण के लिए निबंध पाठ शीर्षक है 'रक्त और हमारा शरीर' लेखक डॉ. यतीश अग्रवाल। पाठ का प्रांरभ एक्टीविटी से इस प्रकार किया जा सकता है-

शिक्षक/शिक्षिका :- विद्यार्थियों से कहे कि आपके पास पड़ोस में कौन-कौन व्यक्ति अस्वस्थ है उनकी सूची बनाओ। सूची बनाए जाने के बाद चर्चा की जाए कि ये सभी अस्वस्थ व्यक्ति किन कारणों से अस्वस्थ हैं क्या आपको जानकारी हैं। उनके आस-पास का वातारण कैसा है लिखिए-

मनुष्य के अस्वस्थ होने के सामूहिक कारण :-

- प्रदूषित वातावरण, आस पास गंदगी, आवारा पशु, धूल धुँआ।
- स्वच्छ पेयजल का अभाव आस पास नालियों और गड्ढों में पानी का सड़ना।
- पोलीथीन प्लास्टिक का कूड़ा कचरा।
- पर्याप्त स्वच्छता की जानकारी का अभाव।
- खुले में शौच।

पारिवारिक एवं व्यक्तिगत कारण :-

- शरीर के लिए अनिवार्य पौष्टिक भोजन का अभाव।
- शरीर की क्षमता से अधिक श्रमसाध्य कार्य करना।

व्यक्ति स्वस्थ रहे इसके लिए उसे कैसी जीवन शैली अपनानी चाहिए उपर्युक्त चर्चा के आधार पर कुछ विवरण प्रस्तुत कीजिए-

- घरों के आस-पास गड्ढों और नालियों में पानी इकट्ठा नहीं होने देना।
- घर के अंदर और आस-पास साफ सफाई करना।
- कूड़ा कचरा कूड़ेदान में डालना, उसे जलाना नहीं।
- शौचालय का प्रयोग करना।
- पीने के लिए स्वच्छ जल का प्रयोग करना।
- अपने आस-पास वृक्ष लगाना। एक व्यक्ति एक वृक्ष अवश्य लगाए।
- शरीर की आवश्यकता के अनुसार पौष्टिक भोजन।

शिक्षिका गतिविधियाँ कराने के बाद पाठ की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए आदर्श पठन एवं अनुकरण पठन कराएँ। प्रत्येक अनुच्छेद में आए कठिन शब्दों के अर्थ स्पष्ट करते हुए छात्र केंद्रित विधि का प्रयोग करते हुए व्याख्यात्मक प्रश्नों के माध्यम से पाठ की विषयवस्तु समझाए।

यों तो अनीमिया बहुत से कारणों से हो सकता है, किंतु हमारे देश में इसका सबसे बड़ा कारण पौष्टिक आहार की कमी है। इसके अलावा इस रोग का एक और बड़ा कारण है पेट में कीड़ों का हो जाना। ये कीड़े प्रायः दूषित जल और खाद्य पदार्थों द्वारा हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं। अतः इनसे बचने के लिए यह आवश्यक है कि हम पूरी साफ सफाई से बनाए गए खाद्य पदार्थ ही ग्रहण करें। भोजन करने से पूर्व अच्छी तरह से हाथ धो लें और साफ पानी ही पिएँ। और हाँ अनिल एक ऐसी किस्म के कीड़े भी हैं, जिनके अंडे जमीन की ऊपरी सतह में पाए जाते हैं। इन अंडों से उत्पन्न हुए लार्वे त्वचा के रास्ते शरीर में प्रवेश कर आँतों में अपना घर बना लेते हैं। इनसे बचने का सहज उपाय है कि शौच के लिए हम शौचालय का ही प्रयोग करें और इधर उधर नंगे पैर न घूमें।''

काठिन्य निवारणः अनीमिया - खून में लाल कणों की कमी से उत्पन्न एक रोग (रक्ताल्पता)

लार्वे - डिंभ, डिम्भक अवस्था (इल्ली)

प्रश्नोत्तरों के माध्यम से अनुच्छेद की व्याख्याः

शिक्षण/शिक्षिकाः 1. अनीमिया क्या हैं?

छात्र/छात्राएँः - खून में लाल कणों की कमी हो जाने से उत्पन्न एक रोग (रक्ताल्पता)।

शिक्षक/शिक्षिकाएँ :- 2. अनीमिया किन कारणों से होता हैं?

छात्र/छात्राएँ :- पौष्टिक आहार की कमी और पेट में कीड़ों के हो जाने से यह रोग हो जाता है।

शिक्षक/शिक्षिकाएँ :- 3. कीड़े हमारे शरीर में कैसे प्रवेश करते हैं?

छात्र/छात्राएँ :- ये कीड़े दूषित जल और खाद्य पदार्थों के द्वारा हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं।

शिक्षक/शिक्षिकाएँ :- 4. एक अन्य किस्म के कीड़े कैसे हैं?

छात्र/छात्राएँ :- इन कीड़ों के अंडे जमीन की ऊपरी सतह पर पाए जाते हैं।

शिक्षक/शिक्षिकाएँ :- 5. ये कीड़े हमारे शरीर में कैसे प्रवेश करते हैं?

छात्र/छात्राएँ :- इन कीड़ों के अंडे से उत्पन्न लार्वे त्वचा के रास्ते शरीर में प्रवेश कर आँतों में अपना घर बना लेते हैं।

शिक्षक/शिक्षिकाएँ :- 6. ये कीड़े हमारे शरीर में प्रवेश न कर पाएँ, आप क्या उपाय करेंगे?

छात्र/छात्राएँ :- इधर-उधर नंगे पैर नहीं घूमना और शौच के लिए शौचालय का प्रयोग करना।
शिक्षक/शिक्षिकाएँ :- 7. अनीमिया से बचने के लिए आप क्या-क्या उपाय करेंगे?
छात्र/छात्राएँ :- पौष्टिक आहार लेंगे।
- दूषित जल और खाद्य पदार्थ ग्रहण नहीं करेंगे।
- पूरी साफ सफाई से बने हुए खाद्य पदार्थ ही ग्रहण करेंगे।
- भोजन करने से पूर्व अच्छी तरह से हाथ धोएँगे।
- साफ जल ही पिएँगे।
- नंगे पैर नहीं घूमेंगे
- शौचालय का प्रयोग करेंगे।

भाषा संबंधी कार्य :-
समानार्थी शब्दों का रेखा खींचकर मिलान कीजिएः

खाद्य पदार्थ	-	बीमारी
दूषित जल	-	अंदर जाना
लार्वा	-	पुष्ट करने वाला
रोग	-	स्वीकार करना
पौष्टिक	-	चमड़ी, छाले
ग्रहण करना	-	डिम्भक अवस्था, इल्ली
त्वचा	-	गंदा जल, जो पीने योग्य नहीं हो
प्रवेश करना	-	खाए जाने वाली वस्तुएँ

शिक्षक/शिक्षिका कथन : रोगी व्यक्ति परिवार पर भार बन जाता है। देश में स्वस्थ नागरिकों के द्वारा ही विकास के कार्य संभव हैं। सभी स्वस्थ रहें यह हम सभी का दायित्व है कि रोगों के प्रति सभी को जागरूक बनाएँ। देश में 'राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान' चलाया जा रहा है जिसका उद्देश्य भी यही है। स्वस्थ नागरिक समाज स्वस्थ उन्नत राष्ट्र।

बच्चों का सभी विषयों का ज्ञान एक समान नहीं होता। जिस विषय क्षेत्र में उसे सीखने का अधिक अवसर प्राप्त होता है उसमें उसका ज्ञान अन्य विषयों की तुलना में अधिक होगा। उन विषय क्षेत्रों में वह उच्च स्तरीय चिंतन और तर्क करेगा। जबकि कम जानकारी वाले विषयों में वह ऐसा चिंतन तर्क नहीं कर पाएगा। कभी-कभी उसके तर्क निरर्थक होंगे। शिक्षण द्वारा स्वस्थ दृष्टिकोण के विकास पर पर्याप्त ध्यान दिया जाए। कुछ परिवर्तन परिपक्वता पर आधारित होते हैं। जैसे गणित के लंबे प्रश्न हल करने के लिए प्रशिक्षण के साथ-साथ शारीरिक और मानसिक परिपक्वता की भी जरूरत होती है।

9. **विद्यार्थियों की रुचि का अध्यापक अध्यापिका द्वारा ध्यान रखना :-** यह विचार भी शिक्षा व्यवस्था में जोर पकड़ रहा है कि बालक-बालिकाओं से पूछा जाए कि आप अपने लिए कैसा अध्यापक-अध्यापिका पसंद करेंगे। बच्चों के जवाब हैं- ''जो सभी छात्र-छात्राओं को जानता हो, सभी पर बराबर ध्यान देने वाला हो, भावनाओं को समझने वाला हो, स्नेह करने वाला हो।'' अध्यापकों से बच्चों की ये अपेक्षाएँ हैं जो कि बिलकुल ठीक हैं, मानवीय है। यदि अभिभावकों से भी यही प्रश्न किया जाए तो उनकी भी ये ही अपेक्षाएँ होंगी।

10. **परामर्श का महत्त्वः-** हमारे देश में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में परामर्श देने की एक सुदृढ़ परम्परा विद्यमान है। विभिन्न सरकारी गैर सरकारी संगठनों में सलाहकार होते ही हैं। विद्यालय में परामर्श अधिगम संसाधन के रूप में स्वीकार किया जाए। परंतु परामर्शदाता विश्वसनीय सलाहकार हो, वह एक अनुभवी मार्गदर्शक होना जरूरी है। जिसने ज्ञान विज्ञान प्रबंधन या शिक्षा के क्षेत्र में अपनी सफलता के उदाहरण प्रस्तुत किए हों। ऐसा समर्थ अनुभवी व्यक्ति ही अपने से कम अनुभवी व्यक्तियों को प्रोत्साहन, समर्थन और मार्गदर्शन दे सकता है।

11. **विषयवस्तु अद्यतनः-** स्कूल स्तर पर कोई भी कक्षा या विषय का शिक्षण किया जा रहा हो, बदलती पाठ्यचर्या के संदर्भ में विषयवस्तु को अद्यतन करना आवश्यक है। सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रमों में इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाता है कि किस प्रकार कक्षा में पढ़ाया जाए और पाठ की विषयवस्तु को किस कौशल का प्रयोग करते हुए बालक-बालिकाओं के सीखने योग्य बनाएँ। शिक्षक पाठ की विषयवस्तु और उसकी शिक्षण विधियों से संबंधित ज्ञान की सत्यता की जाँच स्वयं करें। इस के लिए उन्हें संदर्भ ग्रंथों का अवलोकन करने के साथ-साथ शैक्षिक साइटों की जानकारी भी होनी चाहिए।

बालक-बालिकाओं की सोच सकारात्मक होती है। उनके जीवन में उत्साह और उमंग भी होती है। इसलिए उनके साथ शिक्षक तालमेल बिठाएँ। शिक्षण में रोचकता और आनंद का प्रवाह विद्यार्थियों को सराबोर कर देने वाला हो। इससे बच्चों के अधिगम पर स्थायी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शिक्षा व्यवस्था का सारा जोर इस बात पर है कि बालक बालिकाओं को पढ़ना लिखना बोर, उबाऊ, पीड़ादाई और मानसिक क्लेश नहीं दे। यदि हम शिक्षकों से बात करें कि आपकी कक्षा में शिक्षण आनंददायी बने, आपने इस संबंध में क्या व्यावहारिक प्रयोग किए हैं तो उनके जवाब भिन्न-भिन्न होते हैं। शिक्षकों-शिक्षिकाओं को चाहिए कि वे प्रत्येक पाठ की पूर्ण तैयारी करते समय पाठ को आधुनिक संदर्भों से जोड़ने वाले संसाधनों और सामग्रियों को जुटाए। प्रदर्शित करने वाले शिक्षक कुछ न कुछ नवीनता और बालक-बालिकाओं की जरूरत के अनुसार कक्षा में प्रवेश करते हैं तो प्रभावी व ग्राह्य शिक्षण होता है।

कक्षा शिक्षण में जो विषयवस्तु एवं सहायक सामग्री प्रयोग की जाती है, जो एक्टीविटी कराई जाती है। वे सभी बालक बालिकाओं के भविष्य का मार्ग बनाती हैं। बच्चे हमारे अच्छे नागरिक बनकर राष्ट्र के विकास में योगदान दें इसके लिए आवश्यक है कि कक्षा शिक्षण के समय जो पाठ्यसामग्री उन्हें उपलब्ध करायी जाए वह व्यावहारिक भी हो। विद्यार्थियों को सैद्धांतिक तथ्यात्मक ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ अंतः क्रिया के अवसर भी प्रदान किए जाएँ। पाठों में दिए गए अनेक प्रकार के अभ्यास और एक्टीविटी ऐसी निर्मित की जाएँ कि शिक्षक के थोड़े से सहयोग और मार्गदर्शन से विद्यार्थी उनका स्वयं उपयोग कर लें।

एसोसिएट प्रोफेसर (हिंदी)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.सी.ई.आर.टी)
कप्तान दुर्गा प्रसाद चौधरी मार्ग, अजमेर 305004
मो. 9549737800

पुस्तक समीक्षा

उड़ने को तैयार मन (काव्य संग्रह)

कवयित्री : डॉ. रेणुका व्यास 'नीलम' **प्रकाशक**: विकास प्रकाशन, स्टेशन रोड, बीकानेर **मूल्य**: ₹ 200 **पृष्ठ संख्या**: 112 **संस्करण**: 2018

'उड़ने को तैयार मन' ने मेरे आग्रह को मान देते हुए कुछ पल के लिए अपनी यात्रा स्थगित कर दी। जल्दी ही उससे मेरी यारी हो गई और हम दोनों चर्चा में इस कदर खो गए कि वक्त का ख्याल ही न रहा। घर, परिवार, समाज और देश के हालातों पर चिंतन चलता रहा। मैंने पूछा-'तुम उड़कर कहाँ जाओगे?' उसका जवाब था-'लोगों को जागृत करने जाउंगा। मेरी उड़ान महज विचरण नहीं है, स्वांतः सुखाय कतई नहीं।' बेशक 'उड़ने को तैयार मन' को देश-समाज की बड़ी फिक्र है। मैं बात कर रहा हूँ बीकानेर, राजस्थान की जानी-मानी कवयित्री डॉ. रेणुका व्यास 'नीलम' के प्रथम काव्य-संग्रह की, जिसका शीर्षक 'उड़ने को तैयार मन' पाठक के मन को खींचता है। शीर्षक-चयन कवयित्री ने बड़ी ही कुशलता से किया है। यह शीर्षक, पुस्तक पढ़ने की उत्सुकता बढ़ाता है।

'नीलम' जी का यह काव्य-संग्रह तीन भागों में विभक्त है। इसके पहले और दूसरे खंड में आधुनिक कविताएँ हैं, जिनमें आंतरिक लयता है और तीसरे खंड में गीत हैं, जिनमें सुर, लय, ताल और भाव बड़ी ही खूबसूरती से मुखरित हुए हैं। मैंने इस संग्रह का रसास्वादन गीतों से शुरू किया। दरअसल गीत मुझे अधिक पंसद हैं। 'नीलम' जी ने गीत-खंड का नाम 'उल्लास भरकर पांख में' दिया है। इनके हर गीत ने मुझे पकड़ा, एक-दो पंक्ति पढ़कर आगे नहीं बढ़ने दिया। कोई भी गीत बगैर मकसद नहीं रचा गया है। 'आलोकित जीवन को कर दो', 'जीवन मुझको बुला रहा है', 'सच जीतेगा-झूठ मरेगा', 'बादल तुमको झोली में भर', 'क्यों भूखा ही सो जाता है?' गीत अत्यंत प्रभावी हैं। गीतों की भाषा विषयानुकूल है। किसी गीत में अत्यंत कोमल शब्द हैं तो किसी गीत में शब्दों की उग्रता दिखती है। कवयित्री ने शब्दों का इस तरह मानवीकरण किया है कि वे बोलने लगते हैं। 'क्यों भूखा ही सो जाता है?' गीत में कवयित्री ने शब्दों का इस तरह मानवीकरण किया है कि वे बोलने लगते हैं। गीत में कवयित्री ने भारतीय किसानों और मजदूरों की दारुण-दशा का चित्रण किया है। जो मेहनतकश किसान खेत-खलिहान में पसीना बहाता है, उसे दो जून की रोटी भी नसीब नहीं हो पाती। कवयित्री व्यथित मन से व्यवस्था से सवाल करती हैं-'अन्न-ब्रह्म की करे साधना/ शीतलहर-लुवों में तपता।/अपने सुख की तजकर चिंता/औरों के हित जीता-मरता। वह साहस का हिमगिरि कैसे/कर्जे से ढह जाता है?/ वो धरती का पुत्र कहो क्यों/भूखा ही सो जाता है?'

इसी गीत में लोकतंत्र के हालात पर कवयित्री लिखती हैं-'जिन्हें बरसना था धरती पर/मेघ महल में बरस गए क्यों?/पूरे सूरज के अधिकारी/एक किरण को तरस गए क्यों?/ लोकतंत्र से 'लोक' लापता/क्यों कर होता जाता है? वो धरती का पुत्र...।'

कवयित्री ने हकीकत बयां कर व्यवस्था को जमकर फटकार लगाई है। इनके गीत में दर्द और आक्रोश एक साथ दिखते हैं। ये गीत उन कर्णधारों तक पहुँचना चाहिए, जो किसानों-गरीबों के रहनुमा बनते हैं। शायद उनका दिल पसीजे।

जिस गीत के शीर्षक को 'नीलम' जी ने संग्रह का नाम दिया है, उसका उल्लेख किए बिना गीत-खंड की चर्चा पूरी नहीं होती। 'उड़ने को तैयार मन' गीत में कवयित्री ने जीवन को कई उपमाएँ दी हैं। उन्होंने जीवन को 'फूलों की डोली' कहा है, 'बहता दरिया' कहा है और 'अद्भुत मेला' भी कह दिया है। जीवन का सत्य उद्घाटित होता है इस गीत में। आप लिखती हैं-'गुलाब महके सांस में/स्वप्न लहके आँख में/ उड़ने को तैयार मन/उल्लास भरकर पांख में।' रेणुका जी के गीतों का शिल्प भी उम्दा है। मुखड़े-अंतरे व्यवस्थित हैं। तुक-मिलान भी उत्तम है। प्रवाह और गेयता में कोई कमी नहीं। हाँ, कहीं-कहीं एक-दो मात्रा का फर्क दिखता है। ऐसा भावावेग की वजह से हुआ होगा।

'नीलम' जी के गीतों की ही भाँति इनकी छंद-बद्ध और मुक्त-छंद रचनाएँ भी उत्कृष्ट हैं। इन रचनाओं में भी कवयित्री का गहन अध्ययन, गहरी सोच, चिंतन और जीवन का अनुभव दृष्टिगोचर होता हैं। संग्रह के प्रथम खंड 'गुलाब महके साँस में' के तहत प्रकाशित रचना 'मैं औरत हूँ' बेहद प्रभावित करती है। 'नीलम' जी ने बड़ी मौलिकता के साथ औरत को सम्मान दिया है। ये औरत को कतई कमजोर नहीं मानती हैं। इनकी कल्पना की औरत, पुरुष का साथ पूर्णता के लिए चाहती है। वह इसीलिए हाथ थामने की बात करती है। कवयित्री लिखती हैं-'आओ! थाम लो मेरा हाथ/छा जाएँ हम/ ब्रह्माण्ड में/परिपूर्णता के साथ/पूरी गरिमा के साथ।' 'औरत जीना जानती है' रचना भी मन को गहराई तक छूती है। इसमें नारी का संघर्ष है, उसकी जीवटता है। 'नीलम' जी कहती हैं कि जब औरत आसमान की ओर देखती है तो सूरज भी झिझक जाता है। नारी-शक्ति को इतना सम्मान बहुत कम रचनाकारों ने दिया है।

'नीलम' जी की प्रेमसिक्त रचनाएँ मन को प्यार से सरोबार कर देती हैं। 'बसंत ऋतु आई है' कविता देखें-'जब से तुम आए प्रिय!/जीवन के उपवन में/बसंत ऋतु छाई है/नवल दृष्टि, नवल सृष्टि/जीवन ने पाई है।-मृदंग थाप, नृत्य चाप/भरा हवाओं ने आलाप/सुप्त-लुप्त स्वप्नों की/कलियाँ सुगबुगाई हैं/बसंत ऋतु आई है।' क्या खूब भाषा का सौंदर्य है, कितना खूबसूरत वर्णन है। अनिवर्चनीय रसानुभूति कराती हुई रचना।

इस खंड की हर छोटी-बड़ी रचना कथ्य और शिल्प की दृष्टि से उत्तम है। 'नीलम' जी में गीत की ऊर्जा है, प्रतिभा है, इसलिए उनकी आधुनिक कविताएँ गद्य की तरह नहीं बन पड़ीं। ये तीनों छंदों को टक्कर देती हैं। 'नीलम' जी के संग्रह का दूसरा खंड है-स्वप्न लहके आँख में।' इस खंड की रचनाएँ भी अत्यंत प्रभावी हैं। 'कौन हूँ मैं' रचना में गहरा जीवन-दर्शन है, अध्यात्म है, विचारों की सघनता और चिंतन है। 'मवादी फोड़ा' रचना में रेणुका जी ने ढोंगियों, पाखंडियों और मठाधीशों को जमकर फटकार लगाई है।

इस खंड की रचना 'मेरा देश' मन को मोह लेती है, राष्ट्र-प्रेम से भर देती है। बड़ी मौलिक सोच है देश के बारे में 'नीलम' जी की। आप

कहती हैं–'बसता है मेरा देश/मेरे हृदय में/ मेरे कर्म में/मेरे जीने के ढंग में।' आप आगे कहती हैं–'जब मैं अपने आचरण में/उतारती हूँ/अपनी संस्कृति के देवत्व को/जब मैं नकारती हूँ/महत्त्व खो चुकी/मान्यताओं को/ तब मैं बचा रही होती हूँ/अपनी संस्कृति को/ विकास की राह पर/ले जा रही होती हूँ/अपने देश को।'

जब पहला काव्य–संग्रह इतना स्तरीय और सरस है तो 'नीलम' जी की अगली काव्य–यात्रा कैसी होगी, इसका अनुमान लगाया जा सकता है। यह संग्रह पढ़कर मन प्रफुल्लित है और लग रहा है कि कुछ अच्छा पढ़ा है। 'नीलम' जी को इस उत्कृष्ट कृति के लिए हार्दिक बधाई, ढेरों शुभकामनाएँ।

समीक्षक : **राजकुमार धर द्विवेदी**
वरिष्ठ उप संपादक, दैनिक 'नई दुनिया'
जेल रोड, सांई नगर,
रायपुर (छत्तीसगढ़)–492009

मैं आम आदमी हूँ (व्यंग्य संग्रह)

लेखक : डॉ. अजय जोशी **प्रकाशक** : कलासन प्रकाशन, अलख सागर रोड, बीकानेर **प्रकाशन वर्ष** : 2018 **पृष्ठ संख्या** : 96 **मूल्य** : ₹ 200

डॉ. अजय जोशी सेवानिवृत्त प्रोफेसर हैं। जीवनभर व्यवसाय प्रशासन पढ़ाया, अब साहित्यकार बन गए हैं। क्योंकि साहित्यकार से जीवन आनन्दमय बीतता है। आपके पूर्व में कहानी, कला, लघुकथा, काव्य, आलेख और शोध पत्र अनेक छप चुके हैं। 'मरु व्यवसाय चक्र' नाम से व्यवसायिक पत्रिका का वर्षों से संपादन व प्रकाशन कर रहे हैं। 'मैं आम आदमी हूँ' आपका प्रथम व्यंग्य संग्रह है। आपने पत्रकारिता में भी डिप्लोमा कर रखा है।

श्री अजय जोशी का यह व्यंग्य संग्रह, व्यंग्य संग्रहों के बंधे–बंधाए फ्रेम को तोड़ता है, अछूते विषयों पर अपनी लेखनी चलाता है। हमारे आसपास के विषयों को अपनी व्यंग्य शैली से रोचक बनाते हैं। अभिजात्य वर्ग को खोखला करने के लिए 'आओ बुद्धिजीवी दिखें।' व्यंग्य बड़ा सटीक और सरल भाषा में आम आदमी के समझ में आने वाला है। 'साहित्य चोरी है माखन चोरी' व्यंग्य में कहते हैं कि हमारे जैसे लेखक तो खुश होते हैं हमारा लिखा ध्यान से पढ़ा और चोरी के लायक समझा। लेखक के अनुसार माखनचोरों को प्यार से समझाया जाए कि भाई कुछ अपना लिखने की कोशिश करो और कहो कि चोरी करना बुरी बला है।'' 'सबसे बड़ा रुपैया' में लेखक रुपये कमाने विभिन्न तौर–तरीकों पर करारी चोट करते हैं। कहने को रुपिया हाथ का मैल है परन्तु, जिसके पास रुपया है, उनके हाथ साफ सुथरे हैं। काले धन के लिए सफाई देते हैं कि धन कोई काला गोरा नहीं होता है। काले–गोरे का भेद खत्म कर दो। दुनियां रंग–भेद के खिलाफ है। बस याद रखना है कि सबसे बड़ा रुपिया। रुपियों की महिमा अपार है। जितनी बात करो, कम है। जितना लिखो, उतना ही कम है। 'सम्मान ले लो सम्मान' में अर्थशास्त्री अजय जोशी जी डिमाण्ड और सप्लाई का सिद्धांत लागू करते हैं। अब यदि सम्मान और पुरस्कार की डिमाण्ड बढ़ रही है तो स्वाभाविक है, सप्लाई करने वाले भी बढ़ेंगे। किसी चीज की आपूर्ति नहीं होती तो उसको निजी क्षेत्र से ऊँचे दामों में खरीदना पड़ता है। सौदा बुरा नहीं है, कितनी बधाइयाँ मिलेगी, फोटो छपेंगे, आत्मसंतुष्टि होगी, उसका कोई मोल नहीं है। इन सबको देखते हुए, सम्मान पाने के लिए जो राशि खर्च होगी, वह कुछ भी नहीं है।

'मैं आम आदमी हूँ' शीर्षक में आम आदमी के नाम को लीला झिगदर किया गया है। मेरे नाम से बहुत लोग मौज उड़ाते हैं। मेरी कीमत बनती बिगड़ती है। जब चुनाव का समय हो तो हर पार्टी–हर नेता के लिए मैं अमूल्य होता हूँ तो कभी मेरी कीमत दो कौड़ी की भी नहीं होती। मेरी भूख मिटाने के लिए बड़े–बड़े ए.सी. कमरों में बैठकर, मोटी–मोटी, दावतें उड़ाते हो, तेरह हजार रुपिये की थाली, बड़ी–बड़ी योजनाएँ बनाई जाती है। आप तो हमारे नाम पर 'मजा करो महाराज, आपकी पाँचों अंगुलियाँ घी में हैं, सर तो हमारा कढ़ाई में है।

'कुर्सी के लिए कुछ भी करेंगे' व्यंग्य में कुर्सी का लत अनादि काल से चला आ रहा है। कुर्सी को सिंहासन का रूप जाना जाता था। विचारधारा तो सबकी एक ही है, 'येन केन प्रकारेण कुर्सी प्राप्त कर ली जाए'। नेताओं के लिए कुर्सी साक्षात् भगवान का रूप है। इसलिए कुर्सी की रक्षा करना भगवान की पूजा करने के समान है। साहित्यकारों के लिए भी कुर्सी प्रिय है। किसी अकादमी अध्यक्ष की कुर्सी मिल जाय, सचिव की मिल जाय, किसी साहित्यिक संस्था के अध्यक्ष की मिल जाय। यह सब संभव नहीं खुद संस्था बनाओ और स्वयंभू अध्यक्ष बन जाओ। चलो छोड़ो। इस कुर्सी कथा को। सोफों पर बैठ जाओ। सिंहासन धरती पर लगा हो। मस्त रहो, सभी लोगों की कुर्सी दौड़ को देखकर आनन्द लो। लेखक अजय जोशी का व्यंग्य संग्रह का भाव जगत और अनुभव जगत, इन संग्रहों में कहीं न कहीं जरुर समाहित है। मुहावरा इनका अपना है। प्रस्तुति इनकी अपनी है। ये मस्त मौला जीवन जीते हैं। हरदय मुँह पर मुस्कुराहट है तो आपको भी मुस्कुराने को मजबूर करते हैं। व्यंग्य में दृष्टि की सूक्ष्मता, चिंतन की प्रौढ़ता, प्रस्तुति का आकर्षण, निष्पक्ष व्यवहार, अभिव्यक्ति की जीवंतता। श्री अजय जोशी की इस पुस्तक को पढ़ने से पाठकों को लग सकता है कि ये अच्छे व्यंग्यकार हैं और पाठक मन के पारखी हैं। इस प्रकार सभी 37 व्यंग्य संग्रह एक दूसरे से इधके हैं। श्री अजय जोशी ने दैनिक युग पक्ष का आभार माना है कि उन्होंने धारावाहिक व्यंग्य छापकर लेखक का हौसला बढ़ाया है। श्री जोशी ने कहीं भी किसी आदमी या संस्था की जानबूझकर खिल्ली नहीं उड़ाई। नीचा दिखाने का प्रयास नहीं किया। उपदेशक नहीं बने। आत्मश्लाघा से दूर रहे। कहीं भी कृत्रिमता का सहारा नहीं लिया। डॉ. अजय जोशी का प्रथम प्रयास सराहनीय है। सफल, रोचक और प्रेरणादायी व्यंग्य संग्रह बाबत लाख–लाख बधाई। उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना। सुन्दर छपाई और आवरण बाबत, कलासन प्रकाशन भी बधाई की हकदार है।

समीक्षक : **पृथ्वी राज रतनू**
करणीकृपा, एफ.सी.आई. गोदाम के पास,
कृषि मंडी के पीछे, इंदिरा कॉलोनी,
बीकानेर (राज.) 334004
मो. 9414969200

शब्द अम्बर (काव्य संग्रह)

कविता मानव की गरिमा को उजागर करने वाली होती है। इसमें कवि की गहरी कला दृष्टि और भाषिक क्षमता का योगदान भी होता

है। अच्छी कविता के लिए यह आवश्यक नहीं कि वह वृहद आकार की ही हो। एक छोटी कलात्मक कविता भी अच्छी कविता बन सकती है। आजकल हिन्दी प्रकाशन के क्षेत्र में काव्य संग्रह काफी अधिक प्रकाशित हो रहे हैं। इनमें से कतिपय काव्य संग्रह बहुत महत्त्वपूर्ण जान पड़ते हैं।

पिछले दिनों कोटा में जन्मे और बीकानेर को अपना स्थाई निवास बनाने वाले कवि रमेश कुमार शर्मा का हिन्दी काव्य संग्रह 'शब्द अम्बर' पढ़ने को मिला। काफी लंबे अंतराल के बाद कोई काव्य संग्रह मैं पूरा पढ़ सका क्योंकि इसकी काव्य रचनाओं ने मुझे पूरा पढ़ने के लिए बाध्य किया। ये कविताएँ अपने समय के सच को उजागर करने वाली काव्य रचनाएँ हैं।

कवि रमेश कुमार शर्मा काफी समय से लिख रहे हैं और लगातार प्रकाशित भी हो रहे हैं। राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित उनके काव्य संग्रह 'शब्द अम्बर' की कविताएँ भाषा और शिल्प की दृष्टि से तथा कवि की विचार दृष्टि से बहुत पठनीय बन पड़ी है। कवि का काव्य भाषा पर पूर्ण अधिकार है।

संग्रह में कुल 18 कविताएँ हैं। इनमें हमारे महाकाव्यों के स्वर हैं तो राष्ट्रप्रेम की भावनाएँ भी हैं। कवि रमेश कुमार शर्मा रसायन शास्त्र में स्नातकोत्तर हैं; अतः उनकी रचनाओं में विज्ञान, प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण के स्वर भी यत्र-तत्र प्रभावी ढंग से प्रस्फुटित हुए हैं।

'सरस्वती वंदना' पर अनेक कवियों ने अपनी कलम चलाई है, परन्तु कवि रमेश ने इसे प्रकृति पर्यावरण से जोड़ते हुए लिखा हैः

''वाक्, शब्द की देवी, वाणी
क्रान्तदृष्टि दो माँ कल्याणी!
भू पर तकनीकी मनमानी
व्याकुल तरुवर, खग, मृग प्राणी
माँ, अब वाल्मीकि को स्वर दो
आज न धरती पर पिक दिखती
धरती अधिक नहीं सह सकती
मूढ़ मनुज को पाठ पढ़ाओ
धरती को मधुऋतु लौटाओ
हंस विराजित हो माँ आओ।''

कविता 'शब्द यात्रा' में कवि ने आदि कवियों से लेकर आधुनिक कवियों तक की शब्द यात्रा को प्रेरक काव्य पंक्तियों में प्रस्तुत किया है।

हमारे सांस्कृतिक उत्सवों पर रचित कविताओं में कवि ने प्राचीन उत्सवों को नवीन दृष्टि दी है। वर्ष प्रतिपदा (नववर्ष), गुरुपूर्णिमा, रक्षाबंधन, विजयदशमी, शरदपूर्णिमा, दीपावली दीप्ति, शिवरात्रि, होली आदि कविताओं में प्रकृति का सजीव एवं मनोहारी चित्रण है।

शरद पूर्णिमा सौन्दर्य में कवि लिखता हैः-

शरद के पूर्णेन्दु को साष्टांग की यह पूर्णिमा
पूर्णिमाओं में अलग लय-राग की यह पूर्णिमा।
क्षीरसरि-सीकर ढुलककर शशिप्रभा से मिल रहे,
आदि कवि के जन्मदिन के फाग की यह पूर्णिमा।

कवि की भाषा सुगठित और ओजपूर्ण है। प्रस्तुत काव्य संग्रह की कविताओं को पढ़ते हुए निराला, दिनकर, सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी, शिवमंगल सिंह सुमन, अटल बिहारी वाजपेयी की रचनाओं की स्मृति जाग्रत हो उठती है।

'राष्ट्रपुरुष विवेकानंद' कविता बहुत श्रेष्ठ और सुपाठ्य बन पड़ी हैः-

सुन ओजपूर्ण मंगलमय स्वर,
थे मुग्ध हो चले दिग्दिगंत,
लेकिन चल दिये धरातल तज,
तुम राष्ट्रपुरुष हे दिव्य संत।
युग ने देखा निस्पृह साधु,
था देश-विदेशों में घूमा,
जिसका तेजोमय भाल जगन्माता ने
उमंग स्वयं चूमा।
वेदान्त-सुरभि से जग छाया,
भू पर प्रकटा ही था वसंत,
लेकिन चल दिए धरातल तज
तुम राष्ट्र पुरुष हे दिव्य संत।''

इसी प्रकार 'नेताजी का संघर्ष', 'सावरकर चरित्र' 'जौहर गाथा', 'वीरव्रती का विश्राम', 'मृत्यु का स्वागत' कविताएँ राष्ट्रप्रेम के स्वरों की अद्भुत कविताएँ हैं तथा पाठक को प्रेरित करती है। कवि रमेश की इस संग्रह की अधिकांश कविताएँ कक्षा 8 से 12 की हिन्दी पाठ्यपुस्तकों तथा यूनिवर्सिटी में हिन्दी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जाने योग्य हैं। किशोर युवा छात्रों को ये कविताएँ अपने जीवन में आगे बढ़ने के संस्कार और प्रेरणा प्रदान करने में सक्षम रचनाएँ हैं। राष्ट्रनायकों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि हैं ये कविताएँ। जिसके लिए रचनाकार बधाई का पात्र है।

कवि रमेश कुमार शर्मा की कविताओं में प्रकृति, पर्यावरण, जल, जंगल, जमीन और जानवरों के प्रति जागरूकता प्रतिध्वनित होती है। कवि इस मशीनी युग में घटित 'वन क्षेत्र' को लेकर अपनी चिंताएँ समाज और राष्ट्र के समक्ष निर्भय होकर रखता है। उन्होंने कविता 'क्या लेखक लिखता है?' में इसी पीड़ा को गाया हैः-

कभी प्रकृति संसार न देखा,
क्या जग में घटता है
दूषित वायु, कक्ष अनुकूलित,
क्या लेखक लिखता है?
प्रकृति पराङमुख होकर नर ने,
कृत्रिम जगत बनाया।
सद्ग्रन्थों का सार-भाव
संग्रहण नहीं कर पाया।
वाल्मीकि-तुलसी ने गाई वनवासी की गाथा,
आज वृक्ष उजड़े हैं, नर का टूटा वन से नाता।
वन विहीन है देश,
प्राण अब कहाँ सिंह, चीतों में,
तो कैसे दमखम होगा,
कविताओं में, गीतों में!

इसी प्रकार उनकी 'खेती-खेती' कविता देखिए-

जो धरती पर सहज उगेगा,
चौपाये तृण वही चरेंगे
जो धरती पर सहज बहेगा
चौपाये वह नीर पियेंगे।
केवल दोपायों को
प्रायोगिक जैविक फसलें लेनी हैं
लगता है नर को
कृत्रिम मिनरल वाटर बोतल पीनी है।''

कवि ने अपने अपने प्रतीक, बिम्ब, शिल्प और रचना प्रक्रिया में अपनी परम्परा से बहुत कुछ प्राप्त किया है। उनकी कविताओं में राम, कृष्ण, सीता, हनुमान, वेदव्यास, तुलसी, सूर हैं तो वे भुशुंडि काग, गरुड़, क्रौंच, जटायु

गिद्धराज का भी स्मरण करते हैं। उनकी कविता 'परिवर्तन' में कवि ने तथाकथित विकास पर प्रहार किया है:-

गहन सघन थे तब वन
दृश्य मधुर मनभावन
सुने गरुड़ ने सुन्दर
वचन काग के पावन।
उजड़ गये हैं अब वन
हुआ दृश्य-परिवर्तन
माइक से होता है
रामायण का गायन।

'शब्द अम्बर' का कवि इस युग में शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध ढूँढ़ रहा है लेकिन सब तरफ उसे कृत्रिमता के दर्शन होते हैं। वह व्याकुल होकर लेखनी उठाता है-कुछ तो बदलेगा। वह सनातन-चिरंतन शिव, सत्य, सुंदर की कल्पना करता है। कवि अश्रपूरित प्रार्थना के चिरंतन कणों को सहेजना चाहता है। भावपूरित हो याचना करता है। वह अपने आसपास माटी की सौंधी गंध तलाश करना चाहता है।

बंकिम चंद्र चटर्जी के माध्यम से कवि रमेश हमारे नीति नियन्ताओं की आँख में आँख डालकर प्रश्न पूछता है:-

दूषित सुजला माँ का जल है
विषमय सुफला माँ के फल हैं
आज कहाँ मलयज शीतल है?
वन गोचर विहीन यह धरणी
दिखते यहाँ न खग, मृग, पर्णी
भू-हर्ताओं की सब करणी.....

कवि रमेश कुमार शर्मा को मानव की गरिमा को पूरी शिद्दत के साथ उजागर करने वाली काव्य-कृति रचने के लिए साधुवाद। राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर ने इस कृति को संबल प्रदान किया, जिसके कारण वृहद पाठक समाज के सामने कृति आ सकी। प्रकाशक ज्योति पब्लिकेशन्स, बीकानेर द्वारा प्रकाशित इस काव्य संग्रह 'शब्द अंबर' का कलेवर बहुत सुन्दर और त्रुटिहीन बन पड़ा है, जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

समीक्षक : **धर्मप्रकाश विकल**
8/136, मुक्ताप्रसाद नगर, बीकानेर
मो: 9460779122

अच्छे फुटबाल रेफरी की विशेषताएँ

❐ **यासीन खाँ चौहान**

विश्व का सबसे लोकप्रिय खेल फुटबाल है। वैसे तो कोई भी खेल प्रतियोगिता को सफल बनाने में सबसे अधिक योगदान रेफरी (निर्णायक) का होता है परन्तु विश्व में फुटबाल खेल सबसे अधिक लोकप्रिय होने के कारण ही फुटबाल बाय फोर्स अर्थात् फुटबाल खेल ताकत व स्फूर्ति का खेल कहा जाता है। आज विश्व में इस खेल की लोकप्रियता में काफी वृद्धि हुई है व लाखों की संख्या में फुटबाल प्रेमी व दर्शक फुटबाल मैच के दौरान स्टेडियम में उपस्थित होकर फुटबाल मैच का आनन्द लेते हैं। सभी प्रकार की फुटबाल प्रतियोगिता के सफल आयोजन में रेफरी की भूमिका काफी महत्त्वपूर्ण होती है। क्योंकि उसके सही निर्णय के कारण मैच देखने वाले लाखों दर्शक व खिलाड़ी खेल का आनन्द उठा पाते हैं। सफल प्रतियोगिता तभी मानी जाती है, जिस प्रतियोगिता में किसी भी प्रकार का विवाद न हो व खेल भावना के साथ प्रतियोगिता का समापन हो। इसके लिए एक अच्छे रेफरी का होना आवश्यक है। फुटबाल मैच खिलाने में स्फूर्ति व निष्पक्षता के साथ रेफरी का होना आवश्यक है।

फुटबाल मैच खिलाने वाले एक अच्छे रेफरी में निम्न विशेषताएँ होनी चाहिए-

1. एक अच्छा रेफरी मैच खिलाने से पूर्व घर से रवाना होते समय उसको मैच खिलाने सम्बन्धी अपना सामान अपने बैग में जरूरी सामान लेकर घर से रवाना होगा।
2. मैच शुरू करने से पूर्व फुटबाल का सैफ, वाल में हवा चेक करेगा ताकि फुटबाल नियमानुसार है या नहीं।
3. मैच शुरू करने से पूर्व मैदान की स्थिति देखेगा जैसे-मैदान की मार्किंग नियमानुसार है या नहीं तथा कहीं मैदान में गड्ढे तो नहीं है तथा मैदान के बाहर टेबल रेफरी (फोर्थ रेफरी) के पास अतिरिक्त खिलाड़ियों के लिए बॉक्स बना है या नहीं अगर नहीं बना है तो बनवाएँ।
4. मैच शुरू करने से पूर्व दोनों टीमों के खिलाड़ियों को लाइनअप करेगा व अपने सहायक रेफरियों (लाईन मैन) के साथ खिलाड़ियों के जूते, नाखून, शेमगार्ड, चेस्ट नम्बर आदि चैक करने के बाद दोनों टीमों के साथ मैदान में प्रवेश करेगा।
5. मैच शुरू करने से पूर्व अपने सहायक निर्णायकों के साथ गोल पोस्ट, गोल जाल चैक करेगा कि जाल सही बन्धा है या नहीं व कहीं से जाल टूटा हुआ तो नहीं है। जिससे रेफरी को गोल होने व नहीं होने का सही निर्णय लेने में कठिनाई नहीं हो।
6. मैच शुरू करने से पूर्व रेफरी अपनी डायरी में मैच शुरू करने का समय व स्कोर नोट करेगा तथा yellow card व Red card का रिकॉर्ड नोट रखेगा।
7. मैच खिलाते समय अपने सहायक रेफरी (लाईन मैन) से पूरे मैच में तालमेल रखते हुए निर्णय देगा। मैच शुरू करते ही रेफरी पूरे मैच के दौरान दौड़ कर स्फूर्ति के साथ मैच खिलाएगा व जहाँ तक सम्भव हो बाल के नजदीक रहकर मेच खिलाने पर फाउल अधिक साफ व स्पष्ट दिखाई देगा व निर्णय देने में कोई गलती नहीं होगी।
8. एक अच्छा रेफरी सदैव मैच खिलाते समय अपनी पोजिशन में दौड़ेगा अर्थात् क्रोस दौड़ते हुए रेफरीशिप करेगा जिससे अपने सहायक लाईनमैन से तालमेल बना रहे।
9. अच्छा रेफरी फाऊल होने व गोल होने पर स्पष्ट, साफ व तेज विशिल बजाएगा एवं संकेत देकर खिलाड़ियों को अपने निर्णय से अवगत कराएगा।
10. रेफरी को मैच शुरू करने से पूर्व व मध्यांतर के बाद मैच शुरू करने से पहले दोनों टीमों के खिलाड़ियों की गिनती करनी चाहिए ऐसा न हो कि कहीं नियम से अधिक व कम खिलाड़ी न हो।

शारीरिक शिक्षक
राजकीय माध्यमिक विद्यालय
कान्धरान, राजगढ़ (चूरू)

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shalaprangan.shivira@gmail.com** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

शाला में आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी

बूँदी–कापरेन–कस्बे के स्टेशन स्थित सेकण्डरी स्कूल में विज्ञान प्रदर्शनी के दौरान कक्षा 10 के विद्यार्थियों ने विज्ञान से सम्बंधित विभिन्न प्रकार के चित्र पोस्टर पर बनाकर प्रदर्शन किया, विज्ञान के वरिष्ठ अध्यापक श्री रामकेश गोचर ने बताया कि विज्ञान प्रदर्शनी को लेकर विद्यार्थियों में दिनभर उत्सुकता का माहौल बना रहा और अपने परिणाम का इंतज़ार करते रहे, इस दौरान प्रधानाध्यापक श्री विष्णु प्रकाश शृंगी ने बताया कि इस प्रकार के आयोजन से विद्यार्थियो में अध्ययन की रुचि जाग्रत होती है, इस दौरान श्री शृंगी ने विभिन्न चित्रों का अवलोकन करके परिणाम घोषित किए जिसमें टीना, सुमन, निशा गोचर व प्रियंका मेरोठा ग्रुप के द्वारा बनाया गया नाभिकीय संयंत्र पर आधारित चित्र को प्रथम स्थान, मिथलेश सुमन, अंतिमा जांगिड़, रामकरणी गोचर, सपना मेरोठा, काजल गोस्वामी ग्रुप का मानव हृदय संरचना चित्र को द्वितीय स्थान व अंतिमा मीना, मोनिका मीना व अनिशा मीना ग्रुप के नेफ्रॉन की संरचना चित्र को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ, इसके अलावा संगम मीना, अंतिमा मीना व करिश्मा मीना का उत्सर्जन तत्रं, कुलदीप मीना, नरेश गोचर, सूरज व अमित का मानव श्वसन की सरंचना का चित्र, अतुल मीना, कुलदीप मेघवाल, हरिओम मीना व लवदीप सिंह का आहार नाल की संरचना का चित्र व लक्ष्मी मीना, पद्मा मीना, पिंकी मेघवाल का मादा जनन तंत्र का चित्र भी सराहनीय रहा।

शाला में विद्यार्थियों के लिए फेसेलिटि ग्राण्ट की राशि से शुद्ध पेयजल की व्यवस्था की

बाड़मेर–रा.उत्कृष्ट उ.प्रा.वि.लूंगी नाडी (दूधू) में कक्षा 1से 8 तक अध्ययनरत 275 विद्यार्थियों को श्रीमान D.O. (प्रा.शि.) S.S.A. मद से मार्फत श्रीमान PEEO. कार्यालय मु. दूधू से जारी फेसिलिटी ग्राण्ट राशि द्वारा प्रति कक्षा 1–1 कुल 08 Cello कैम्पर व 08 ही R.O. Plant से अमृत जल निकासी के A.T.M. क्रय कर छात्रों को प्रदान कर शुद्ध पेयजल योजना से लाभान्वित किया गया।

रा.उ.मा. विद्यालय केकड़ी द्वारा (सखा-संगम) पूर्व छात्र समागम व सम्मान समारोह

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, केकड़ी द्वारा आयोजित 'पूर्व छात्र समागम व सम्मान समारोह' (सखा–संगम) विद्यालय रंगमंच पर शानदार तरीके से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि न्यूज 18 राजस्थान के स्टेट हैड श्री श्रीपाल शक्तावत थे व अध्यक्षता श्री जीवराज जाट संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा) अजमेर मण्डल अजमेर ने की। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि शिक्षा अधिकारी श्री विष्णु दत्त शर्मा व सीबीइओ. केकड़ी श्री अशोक कुमार माहेश्वरी थे।

इस अवसर पर स्वागताध्यक्ष प्रधानाचार्य अशोक कुमार सिंहल ने स्वागत उद्बोधन में सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया कि विद्यालय नामांकन की दृष्टि से राजस्थान के प्रथम दस विद्यालयों में सम्मिलित है। इस अवसर पर समारोह में चार–वैज्ञानिक, इक्कीस–शिक्षा अधिकारी, दस–चार्टर्ड अकाउन्टेंट, चालीस उद्योगपति व व्यवसायी, पन्द्रह– चिकित्साधिकारी, सात–बैंक मैनेजर, दस–इन्जीनीयर, पाँच–मीडियाकर्मी एवं तेरह–वन सेवा अधिकारियों को साफा पहनाकर शॉल, स्मृति चिह्न श्रीफल भेंटकर सम्मानित किया गया। समारोह का संचालन श्री बिरदी चन्द वैष्णव वरि. शा.शि. ने किया।

भामाशाह थालोड़ ने छात्रा - छात्राओं को किए स्वेटर वितरित

सीकर। राजकीय माध्यमिक विद्यालय सांवलोदा लाडखानी में भामाशाह श्री बेगाराम थालोड ने छात्रा–छात्राओं को स्वेटर वितरित की। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व सरपंच श्री सलसिंह शेखावत ने की। विशिष्ठ अतिथि शिक्षाविद् सर्वश्री भगवानाराम, मोहनलाल शर्मा, राजेन्द्र जागिड़, मुकनाराम, शिशुपाल थालोड, मदनलाल जागिड़, व राम चन्द्र थालोड़ थे। प्रधानाध्यापक श्री फूलसिंह भास्कर ने कहा कि पिछले चार वर्षों से लागातार शारीरिक शिक्षक श्री भंवरसिंह की प्रेरणा से भामाशाहों से स्वेटर वितरित करायी जा रही है। इन्होंने भामाशाहों को प्रेरित करने की उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। कार्यक्रम का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए शारीरिक शिक्षक श्री भंवर सिंह ने बताया कि लगातार चार वर्षों से बोर्ड कक्षाओं का शत–प्रतिशत परीक्षा परिणाम रहा है तथा विद्यालय को लगातार तीन वर्षों से 5 स्टार रैंक प्राप्त हुई है। विद्यालय के मुख्य प्रवेश द्वार का निर्माण भामाशाह माँगीलाल जांगिड़ ने पाँच लाख रुपये की लागत से बनवाया तथा विद्यालय के चारों तरफ चार दिवारी का निर्माण ग्रामवासियों व विद्यालय स्टाफ के सहयोग से करवाया गया। पिछले तीन वर्षों से विद्यालय

में वाहन सुविधा दी जा रही है जिससे ढाणियों के बच्चे आसानी से आ सके व प्रतिवर्ष नामांकन मे बढ़ोतरी हो रही है। पिछले 16 वर्षों से हैण्डबॉल खेल में जिला स्तर पर टीम विजेता रही है जिसमें सैकड़ों खिलाड़ी राष्ट्रीय स्तर व राज्य स्तर पर खेल चुके हैं और चार वर्षों से लगातार सभी खिलाड़ियों को भामाशाह द्वारा खेल गणवेश दी जा रही है। इसके अलावा विद्यालय में वाटर कूलर, कम्प्यूटर, आदि भी गाँव के भामाशाहों के द्वारा दिए गए हैं। अन्य भामाशाहों द्वारा स्टेशनरी व पाठ्य सामग्री समय-समय पर विद्यालय को उपलब्ध करवायी जाती है। कार्यक्रम मे व.अ. श्री प्रवीण तेतरवाल, रोहिताश थालोड, बनवारी लाल शर्मा, राजेश पूनियां, सरीता, रेणुका, जुगलकिशोर, हरिराम, रामलाल, चिरंजी लाल शर्मा, इन्दिरा देवी, संतोष देवी व रामकुमार भामू सहित कई गणमान्य नागरिक व छात्रा-छात्राएँ उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त में शारीरिक शिक्षक श्री भंवर सिंह ने अतिथियों व भामाशाहों का आभार व्यक्त किया।

सेवानिवृत्त प्राचार्य श्री रामनिवास धायल ने स्कूल ऑफिस निर्माण के लिए दो लाख का चैंक सौंपा

सीकर– लक्ष्मणगढ़ की खेड़ी राडान के राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय से सेवानिवृत हुए पूर्व प्राचार्य श्री रामनिवास धायल ने स्कूल में ऑफिस निर्माण हेतु अपनी ओर से दो लाख रुपए का चेक सौंपा। विद्यालय के शारीरिक शिक्षक श्री नन्दकिशोर ने बताया कि पूर्व प्राचार्य श्री धायल ने सेवानिवृत्ति के अवसर पर स्कूल में विकास कार्यों के लिए दो लाख रुपए का सहयोग करने की घोषणा की थी।

इसी संदर्भ में विद्यालय में आयोजित एसडीएमसी. की बैठक में पूर्व प्राचार्य श्री रामनिवास धायल ने दो लाख रुपए का चैक वर्तमान प्राचार्य श्री प्यारेलाल पूनियां व एसएमसी. सदस्यों को सौंपा। बैठक में उपस्थित सरपंच श्री मातादीन गुर्जर, सर्वश्री सुदेश जांगिड़, सांवरमल गुर्जर, हस्त अली, मनुदीन खान, शब्बीर खान, तुलसीराम, सुखदेव सिंह व कर्नल लक्ष्मणसिंह, स्टाफ सदस्यों एवं विद्यालय विकास समिति ने पूर्व प्राचार्य श्री रामनिवास धायल का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। प्राचार्य श्री पूनिया ने इस कृत्य को अनुकरणीय बताते हुए आभार जताया।

रामबाग विद्यालय में हुआ भिति पत्रिका 'कुरजां' का विमोचन

बीकानेर– लूनकरणसर तहसील के रामबाग स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में गत दिनों भित्ती पत्रिका 'कुरजां' का विमोचन वरिष्ठ बाल साहित्यकार रामजीलाल घोड़ेला ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि सृजन के संस्कार विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। बाल साहित्य की विभिन्न विद्याओं के माध्यम से बच्चों में शब्द के रचनात्मक उपयोग की समझ बनाई जा सकती है। प्रधानाचार्य डॉ. मदनगोपाल लड्ढा कहा कि 'कुरजां' के माध्यम से ग्रामीण अंचल के विद्यार्थी अपने मनोभावों को शब्दों के माध्यम से प्रकट कर रहे हैं। विकास शिक्षण संस्थान के प्रधानाचार्य श्री छोगाराम कूकणा ने कहा कि पाठ्यक्रम के सीमित दायरे से बाहर निकलकर सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए भित्ती पत्रिका एक सार्थक उपक्रम है। कार्यक्रम में वरिष्ठ अध्यापक रामवीर रैबारी, डॉ. राधेश्याम कृष्णकुमार गोदारा, कृष्ण कुमार चाहर व शाशि. राधेश्याम मीणा व वर्तिका आदि ने विचार व्यक्त किए।

दाँता (सीकर) की छात्राओं को लेपटॉप वितरण

वितरण सेठ श्री हरनारायण खेतान राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय दांता में कक्षा 8,10 व 12 की मेधावी छात्राओं को राज्य सरकार की बालिका प्रोत्साहन योजना के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन पर छात्राओं ने लेपटॉप प्राप्त किए। लेपटॉप प्राप्त कर छात्राएँ हर्षित हुई उनके चेहरे पर मुस्कान देखी जा सकती है। संस्थाप्रधान ने शाला का नाम रोशन करने पर बधाई देते हुए बताया कि कला वर्ग में अनिता कुमावत, मनीषा कुमावत, जैनब बानो, कक्षा10 में माही सोनी, कक्षा 8 में रितु वर्मा, तमन्ना बानो, रमा तथा मुस्कान ने शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन की बदौलत लेपटॉप प्राप्त किए। शाला परिवार सभी छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करता है।

पुरस्कृत शिक्षक फोरम बाड़मेर द्वारा छात्रा टीपू का स्वागत किया गया।

राजकीय स्नाकोत्तर महाविद्यालय बाड़मेर की एन.सी.सी कैडेट टीपू ने सफलतापूर्वक पर्वतारोहण (28 दिन का कोर्स पूर्ण) कर हिमालय माउंटेनिग (दार्जिलिंग) से लौटने पर बालोतरा में पुरस्कृत शिक्षक फोरम के जिलाध्यक्ष श्री सालगराम परिहार ने साफा पहनाकर, शॉल ओढ़ाकर व माला से बहुमान किया। छात्रा ने हिमालय माउंटेनिंग में 16500 फीट की ऊँचाई तक बढ़ते हुए तिरंगा फहराया। इस अवसर पर परिहार ने छात्रा की मजबूत इच्छाशक्ति, धैर्य और शारीरिक दक्षता की प्रशंसा करते हुए कहा कि आने वाले दिनों में छात्रा नया इतिहास रचेगी। इस अवसर पर प्राचार्य श्री अर्जुन पूनिया, जिला परिवहन अधिकारी श्री भगवानचंद गहलोत, डॉ फरसाराम, डॉ. राजकुमारी रूप चंदानी सहित सैकड़ों छात्राएँ मौजूद थी।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

चतुर्दिक समाचार

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

छात्रों ने हाईब्रिड साइकिल बनाई

आईआईटी. पटना के छात्रों ने साधारण साइकिल का इलेक्ट्रिक मॉडल बनाया है। इसकी अधिकतम गति 25 से 30 किलोमीटर प्रति घंटा होगी। बैट्री से चलने वाली यह हाइब्रिड साइकिल 150 किलो तक का भार भी उठा सकेगी।

इसे पैडल और बैट्री मोटर से चलाया जा सकेगा। इसकी कीमत 10 से 12 हजार रुपये होगी। आईआईटी. पटना अब इसके मॉडल का पेटेंट कराने के लिए आवेदन देने की तैयारी में है। भीड़-भाड़ वाले इलाकों में यह साइकिल इलेक्ट्रिक बाइक का सस्ता विकल्प साबित हो सकती है।

आईआईटी. पटना के इलेक्ट्रिकल विभाग के अध्यक्ष डॉक्टर आर.के. बेहरा ने बताया सीधी हैंडल वाली साइकिल में बदलाव कर इसे बनाया गया है। यह ट्रायल सफल रहा है। इसमें उच्च क्षमता का मोटर लगाया गया है। इससे यह ऊँचाई पर भी आसानी से चढ़ सकती है।

संदूक में सूरज, एक लाख घरों को करेगा रोशन

वाशिंगटन। अब सूरज की रोशनी संदूक में रखी जा सकेगी, जिसके इस्तेमाल से बिजली के उपकरणों को जलाया जाएगा। अमरीका में कैब्रिज स्थित मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट के शोधकर्त्ताओं ने सिलिकॉन का एक ऐसा संदूक बनाया है जिसमें सूर्य और पवन ऊर्जा को सुरक्षित कर रखा जा सकता है। जरूरत पड़ने पर इस ऊर्जा को इलेक्ट्रिक ग्रिड तक पहुँचाया जाएगा। इससे शहरों की ऊर्जा की जरूरतें पूरी की जा सकेगी।

इस संदूक को आधिकारिक नाम 'टेग्स-एमपीवी' रखा गया है। सिलिकॉन से बने इस सफेद रंग के संदूक में सूर्य की ऊर्जा को इकट्ठा किया जाएगा। इसे बाद में आवश्यकता के हिसाब से बिजली में बदलकर इस्तेमाल किया जा सकता है। शोधकर्त्ताओं का दावा है कि ऐसा एक संदूक 1 लाख घरों को रोशन करने में सक्षम है। परियोजना की अगुवाई कर रहे इंजीनियरिंग विभाग में ऐसोसिएट प्रोफेसर एसेगुन हेनरी के मुताबिक हमारे आविष्कार को लोग 'संदूक में सूरज' कह रहे हैं। यह लिथियम आयन बैट्रियों की तुलना में काफी किफायती है। हमने इसके जरिए अक्षय ऊर्जा को सुरक्षित करने के तरीके में बदला है।

भारत के लिए फायदेमंद : भारत में करीब 50% बिजली का उत्पादन कोयले से किया जाता है। इस संदूक से भारत की ऊर्जा जरूरतें काफी हद तक पूरी की जा सकती है।

गुब्बारे की तरह फूला हुआ ग्रह खोजा

जिनेवा। वैज्ञानिकों ने सुदूर अंतरिक्ष में एक ग्रह की खोज की है, जो बैलून की तरह फूला हुआ है। इस ग्रह के वातावरण में हीलियम गैस भरी हुई है। यह पृथ्वी से 124 प्रकाश वर्ष दूर है।

ग्रह की खोज खगोलविदों के एक अंतरराष्ट्रीय दल ने स्विट्जरलैंड स्थित जिनेवा यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों की अगुआई में की है। खोजकर्त्ताओं के अनुसार इस ग्रह पर मौजूद निष्क्रिय हीलियम गैस एक बाद की शक्ल में उससे वातावरण से उसी तरह उड़े जा रही है, जैसे कि व्यक्ति के हाथ से छुटके बाद हीलियम से भरा गुब्बारा उड़ सकता है।

क्षुद्र ग्रह बेनू पर पानी खोज निकाला

वाशिंगटन। वैज्ञानिकों ने क्षुद्रग्रह बेनु पर पानी के संकेत खोज निकाले हैं। हाल ही में इस ग्रह पर कदम रखने वाले नासा के विशेष यान ने धरती पर जो डाटा भेजा, उसका अध्ययन कर वैज्ञानिक इस नतीजे पर पहुँचे हैं।

क्षुद्रग्रह से नमूना एकत्र करने के लिए भेजा गया नासा का पहला अंतरिक्ष यान तीन दिसम्बर को अपने गंतव्य, 'क्षुद्रग्रह बेनू' पर पहुँचाया गया था। इस यान ने अंतरिक्ष में दो साल से अधिक समय में दो अरब किलोमीटर से अधिक की दूरी तय की। यह अंतरिक्ष यान लगभग एक साल तक पाँच वैज्ञानिक उपकरणों के साथ क्षुद्रग्रह का सर्वेक्षण करेगा। सितम्बर 2023 में यह धरती पर लौट आएगा। इस यान ने अगस्त से दिसम्बर की शुरुआत तक तीन वैज्ञानिक उपकरणों को बेनू की तरफ कर इसकी समीक्षा करनी शुरू कर दी थी।

सूरज से छिपेंगे तो अवसाद घेर लेगा

लंदन। बुजुर्गों को सूर्य के प्रकाश से दूर रखने से अवसाद का खतरा बढ़ सकता है। यह बात हालिया शोध से उजागर हुई है। विटामिन-डी की कमी से बुजुर्गों में अवसाद का 75 फीसदी तक खतरा बढ़ जाता है। विटामिन-डी का मुख्य स्रोत सूर्य की किरणें हैं।

डबलिन यूनिवर्सिटी के शोध में पता चला है कि विटामिन-डी की कमी का संबंध सिर्फ कमजोर हड्डियों से ही नहीं हैं।

डायबिटीज में भी फल खाते रहिए

डायबिटीज होने के बाद लोग चीनी खाना तो छोड़ते ही हैं, साथ ही फल लेना भी बंद कर देते हैं। इससे उनके शरीर में ऊर्जा की कमी हो जाती है। आहार विशेषज्ञों का कहना है कि डायबिटीज रोगी फल जरूर खाएं, लेकिन बहुत जयादा नहीं। फल की सही मात्रा उन्हें फायदा पहुँचाएगी।

फ्रक्टोज शहद, फल, सब्जी और गन्ने में मौजूद एक तरह की शक्कर होती है, जो शरीर को ऊर्जा देती है। पोषण विशेषज्ञ और फिजियोलॉजिस्ट रितेश बावरी कहतें हैं, 'मधुमेह रोगियों को पूरी तरह से फलों को खाना नहीं छोड़ना चाहिए। यह मधुमेह के लिए सुरक्षित है।'

ज्यादा न लें तो कोई नुकसान नहीं : पोषण विशेषज्ञ और फिजियोलॉजिस्ट रितेश बावरी कहते हैं, 'फ्रक्टोज का असर चीनी से अलग होता है। फ्रक्टोज ग्लूकोज की तुलना में धीमी गति से अवशोषित होता है। इसे कोशिका में प्रवेश करने के लिए इंसुलिन की जरूरत नहीं पड़ती है। इसकी वजह है कि यह तेजी से फ्रक्टोज-1 फॉस्फेट में टूट जाता है।'

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

राजसमंद

रा.आ.उ.मा.वि. कोठारिया को श्री रमेश बंशीवाल द्वारा लोहे की 51 जोड़ी स्टूल-टेबल विद्यालय को सप्रेम भेंट तथा विद्यालय में कलर करवाया गया जिसकी लागत 51,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि. कुशलपुरा** में श्री चूनसिंह (अ.) सेवानिवृत्ति के उपलक्ष्य में (25×45) भोजन शाला के टीन शैड का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 1,00,000 रुपये।

सीकर

रा.उ.मा.वि. खण्डेला को श्री सुरेन्द्र कुमार जैन (अध्यक्ष) व्यापार महासंघ खण्डेला से स्वेटर 121 नग प्राप्त हुए जिसकी लागत 12,000 रुपये, स्व. श्री बादू राम जांगू बहुजी की ढाणी से ईंट दो ट्रोली प्राप्त जिसकी लागत 5,000 रुपये, श्री भूराराम सैनी (सरपंच) साठियावास वाले से सड़क बेरिकेट्स (दो लोहे के) जिसकी लागत 5,100 रुपये, श्री सांवरमल सैनी (से.नि.) से जुड़वा कुर्सी प्राप्त जिसकी लागत 3,000 रुपये, श्री शिवदान सिंह रुलानिया, अगलोई टिनशैड साइकिल स्टैण्ड 50×20 फीट जिसकी लागत 70,000 रुपये, श्री रामेश्वर सिंह, पप्पूलाल/श्री लिखमा राम बधाला निवासी माजी साहब की ढाणी गोविन्दपुरा द्वारा माँ सरस्वती का मन्दिर हेतु 11,000 रुपये, श्री कैलाश चन्द्र अग्रवाल कलकत्ता वाले खण्डेला से एक वाटर फ्रीजर प्राप्त जिसकी लागत 25,000 रुपये, श्री रामावतार शर्मा (से.नि.) अध्यापक से एक एयर कूलर प्राप्त जिसकी लागत 3,000 रुपये, खण्डेला युवा विकास मंच से एक वाटर आरो प्राप्त जिसकी लागत 10,000 रुपये।

हनुमानगढ़

रा.आ.उ.मा.वि. किशनुपरा, दिखनादा हनुमानगढ़ को सर्वश्री जसवन्त सिंह बुट्टर, हरपाल शर्मा (प्राध्यापक), सुभाषचन्द्र जांगू (प्रधानाध्यापक) द्वारा 1,100 लीटर क्षमता का वाटर चिलिंग प्लांट लगाकर अपने पिताश्री की स्मृति में विद्यालय को समर्पित किया जिसकी लागत 81,000 रुपये।

अजमेर

रा.आ.उ.मा.वि. देवलिया कलां में सेठ साहब श्री लादूलाल काँटीवाल (जैन) द्वारा अपनी माता फलकी देवी एवं पिताश्री चौथमल काँटीवाल एवं दत्तक पिता श्री कुन्दनमल काँटीवाल की पुण्यस्मृति में स्थानीय विद्यालय में एक हॉल (42×22) का निर्माण करवाया गया जिसकी अनुमानित लागत 9,00,000 रुपये। **रा.आ.बा.उ.मा.वि. राजाकोठी गुलाबबाड़ी** को श्री राधेश्याम शर्मा एवं श्रीमती आशा शर्मा श्री साँई नक्षत्र परिवार द्वारा इस विद्यालय को 03 कम्प्यूटर व 30 मेज भेंट, श्री मोहन महावर द्वारा इस विद्यालय में 8 C.C.T.V. कैमरे लगवाए, श्री कैलाश श्रीवास्तव द्वारा वार्षिक उत्सव पर कक्षा 1 से 12 तक छात्राओं को स्मृति चिह्न प्रदान किए। **रा.मा.वि. ककलाना** में भामाशाह एवं जनसहयोग से 13×9×18 घन फुट का हौज का निर्माण करवाया गया, एक H.P. की मोटर, पाईप फिटिंग, शौचालय पर 300 लीटर पानी की टंकी तथा छात्रों हेतु 10 नल पानी पीने वाली प्याऊ का निर्माण करवाया गया तथा ग्राम पंचायत मायापुर पीसांगन (अजमेर) द्वारा 150 लीटर क्षमता का वोल्टाज कम्पनी का वाटर कूलर विद्यालय को सप्रेम भेंट।

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-व. संपादक**

हमारे भामाशाह

रा.बा.उ.प्रा.वि. नून्द्री मेन्द्रातान, ब्लॉक, जवाजा ब्यावर को श्रीमती अंशिका व कंवर साहब संदीप जी से एक वाटर कूलर विद्यालय को सप्रेम भेंट जिसकी लागत 35,000 रुपये।

अलवर

रा.उ.मा.वि. नीकच (रामगढ़) में श्री कोढूराम पुत्र श्री बस्सू राम ने इस विद्यालय को उत्तर तथा पूर्व दिशा में करीबन 2 लाख रुपये की जमीन दान स्वरूप प्रदान की है।

उदयपुर

रा.उ.मा.वि., मालवा का चौरा तह. कोटड़ा को श्रीमती मंजू जैन द्वारा विद्यालय विकास हेतु विद्यालय को 10,000 रुपये चैक प्रदान।

कोटा

रा.उ.मा.वि. पोलाई कलां में श्री नागेन्द्र शर्मा (अध्यापक लेवल-I) (से.नि.) द्वारा बच्चों के पेयजल व्यवस्था हेतु ट्यूबवेल के निर्माण के लिए 50,000 रुपये विद्यालय को दिए।

चूरू

रा.मा.वि. डूंगरास अगूणा को श्री किशना राम (अध्यापक) से एक प्रधानाध्यापक कुर्सी प्राप्त, श्री झूमरमल खिलेरी से वाटर कूलर प्राप्त हुआ, श्री लिछमन राम खिलेरी से 2 पंखे प्राप्त, सर्व श्री आशाराम बिस्सु, डूंगरमल खिलेरी, बाघाराम मोडसरा से एक-एक पंखा प्राप्त, श्री रामनिवास मण्डर से एक लेक्चर स्टेण्ड प्राप्त, श्री हीराराम मोडसरा से 02 पोल, 01 नेट, 01 बॉलीबाल प्राप्त श्री मूलाराम खिलेरी से 10 प्लास्टिक कुर्सियाँ प्राप्त, श्री किशना राम सुण्डा से 02 प्लास्टिक कुर्सियाँ प्राप्त, श्री जगनाराम खिलेरी से एक कम्प्यूटर टेबल प्राप्त, श्री रामजी भामू से मोनो ब्लॉक पानी की मोटर विद्यालय को भेंट, श्री वीरेन्द्र कुमार मीना कार्यवाहक प्र.अ. से परेड P.T. व सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को एक-एक पेन व एक-एक कॉपी भेंट, श्री जगनाराम खिलेरी से सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को एक-एक पेन, कॉपी भेंट, श्री पदमाराम जी श्योराण से 2,100 रुपये नकद, श्री लालूराम कालवा से 6,300 रुपये नकद प्राप्त, विद्यालय स्टाफ से 1,100 रुपये नकद प्राप्त, श्री बाबूलाल मीणा से 5,100 रुपये नकद प्राप्त, नवयुवक मण्डल डूंगरदास अगूणा से प्रतीक चिह्न व चाँदी का सिक्का प्रतिभावान विद्यार्थियों को प्रोत्साहित हेतु भेंट।

जयपुर

रा.उ.मा.वि. देवथला, पं.स. गोविन्दगढ़ को श्री बाबूलाल मारवाल (से.नि. प्रधानाचार्य) से 25 सैट फर्नीचर (छात्र-छात्राओं) विद्यालय को भेंट जिसकी लागत 25,000 रुपये।

जालोर

रा.आ.उ.मा.वि. डबाल में श्री दानाराम चौधरी (युवा उद्यमी मु. पो. डबाल सांचौर) द्वारा 8,00,000 रुपये की लागत से 20×25 का एक अतिरिक्त कक्षा-कक्ष का निर्माण करवाया गया। श्री नेताराम चौधरी युवा उद्यमी डबाल सांचोर द्वारा 8,00,000 रुपये की लागत से एक कक्षा-कक्ष (A.C.R.) का निर्माण करवाया गया, समस्त व्यापार मंडल डबाल सांचोर द्वारा प्रधानाचार्य मेज (Table Plywood) जिसकी लागत 25,000 रुपये। डॉ. नरसीराम चौधरी से 50 फर्नीचर सैट, R.O. प्लांट (शुद्ध पेयजल), प्रार्थना में म्युजिकल सिस्टम प्राप्त हुआ जिसकी लागत 1,10,000 रुपये। समस्त सदस्य बुद्धिजीवी मंडल डबाल सांचोर से C.C.T.V. कैमरे 21 सैट+ L.E.D. 32 इंच का फिटिंग कार्य करवाया गया जिसकी लागत 1,20,000 रुपये, श्री मनजीराम औदित्य (पूर्व BEEO. पं. स.) से एक तिजोरी, कार्यालय कुर्सियाँ 5, टेबल-स्टूल 10 प्राप्त जिसकी लागत 4,500 रुपये, श्री डायाराम मोदी द्वारा कक्षा-कक्ष लेक्चर स्टैण्ड व मंच का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 1,20,000 रुपये।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : जनवरी, 2019 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादकः संतोष शर्मा, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

राज्यस्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह में सम्मानित कर्मचारीगण

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/417/2017-19 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● जनवरी, 2019 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 जनवरी, 2019 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

चित्रवीथिका : माह जनवरी, 2019

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय केकड़ी (अजमेर) की 125 वीं वर्षगांठ पर आयोजित पूर्व छात्र समागम एवं सम्मान समारोह (सखा संगम) में उपस्थित अतिथि एवं पूर्व छात्रगण।

राजकीय माध्यमिक विद्यालय सांवलोदा, लाडखानी (सीकर) में आयोजित स्वेटर वितरण कार्यक्रम में उपस्थित भामाशाह, शाला स्टाफ एवं लाभान्वित छात्र-छात्राएँ।

निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर श्री नथमल डिडेल के साथ स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत 'अवर फॉर नेशन' संस्था के सहयोग से निदेशालय परिसर में साफ-सफाई में सहभागी बने अधिकारी एवं कर्मचारीगण।